वैशाख माह, कृष्ण पक्ष, 21 वर्ष, अंक 99, पृष्ठ 8, मूल्य 3.00

अखंड भारत संदेश

www.akhandbharatsandesh.net

प्रयागराज से प्रकाशित

नगर संस्करण प्रयागराज | मंगलवार 03 मई 2022 | विश्व निर्माण एवं मानव विकास को दुतगति प्रदान करने हेतु क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान आश्रम की अनुपम भेंट

कोल क्राइसिस पर एक्शन में सरकार

शाह के घर कोयला, बिजली और रेल मंत्री की हाई लेवल मीटिंग, पावर प्लांट्स तक कोयला पहुंचाने पर जोर

नई दिल्ली: कोल क्राइसिस पर सोमवार दोपहर गृहमंत्री अमित शाह के घर पर बड़ी बैठक हुई। इस मीटिंग में रेल मंत्री अश्विणी वैष्णव, ऊर्जा मंत्री आरके सिंह और कोयला मंत्री प्रह्लाद जोशी शामिल रहे। बैठक के लिए कोयला और ऊर्जा सचिव समेत कई बड़े अधिकारियों को भी बुलाया । पिछले दिनों बिजली संकट के बाद कई राज्यों के मुख्यमंत्रियों ने कोल क्राइसिस का मुद्दा उठाया था। **राजस्थान, मध्य प्रदेश समेत 12 राज्यों में बिजली संकट:** अखिल भारतीय बिजली इंजीनियर महासंघ के मुताबिक राजस्थान, मध्य प्रदेश, बिहार और उत्तर प्रदेश समेत 12 राज्य बिजली संकट से जूझ रहे हैं। गर्मी के दिनों में बिजली की मांग बढ़ जाती है। ऐसे में बिजली प्रोडक्शन बढ़ाने के लिए ज्यादा कोयला की जरूरत होती है।

गर्मी में पीक पावर सप्लाई ने रिकॉर्ड बनाया: देश भर में तेज गर्मी के बीच इस हफ्ते में पीक पावर सप्लाई तीन बार रिकॉर्ड लेवल तक पहुंची। पीक पावर सप्लाई ने 26 अप्रैल को रिकॉर्ड 201.65 जीडब्ल्यू के लेवल को छुआ। इसके बाद 28 अप्रैल को 204.65 जीडब्ल्यू का नया रिकॉर्ड बनाया और 29 अप्रैल को 207.11 जीडब्ल्यू के ऑलटाइम हाई पर पहुंच गई। 27 अप्रैल को यह 200.65 जीडब्ल्यू थी और 25 अप्रैल को 199.34 जीडब्ल्यू। पिछले साल 7 जुलाई को पीक पावर सप्लाई 200.53 जीडब्ल्यू रही थी।

देश में बिजली उत्पादन में 70% कोयले का उपयोग: भारत करीब 200 गीगावॉट बिजली, यानी करीब 70% बिजली का उत्पादन कोयले से चलने वाले प्लांट्स से करता है। देश में कोयले से चलने वाले 150 बिजली के प्लांट्स है। पिछले दिनों बिजली संकट गहराने पर बिजली प्लांट्स तक कोयला ले जाने वाली ट्रेनों को रास्ता देने के लिए रेलवे ने ट्रेनों के 670 फेरे रद्द कर दिए थे।

जर्मनी के चांसलर ओलाफ शोल्ज से मिले पीएम नरेंद्र मोदी।

नए सेना प्रमुख ने रक्षा मंत्री से की मुलाकात

चीन से गतिरोध पर ध्यान केन्द्रित किया, सैन्य और कूटनीतिक वार्ताओं से सीमा के मुद्दों का समाधान होने की संभावना जताई, चीन को एलएसी पर यथास्थिति में किसी भी बदलाव की अनुमति नहीं देगा भारत

नई दिल्ली: सेना प्रमुख जनरल मनोज पांडे ने कार्यभार संभालने के दूसरे दिन सोमवार को रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह से मुलाकात की। रक्षा मंत्री और थल सेनाध्यक्ष के बीच उत्तरी और पश्चिमी मोर्चे की चुनौतियों के बारे में चर्चा हुई। जनरल पांडे ने चार्ज संभालते ही भारत और चीन के बीच चल रहे गतिरोध पर ध्यान केन्द्रित किया है। उन्होंने कहा है कि दोनों देशों के बीच सैन्य और कूटनीतिक स्तर पर बातचीत की प्रक्रिया जारी है। हमें विश्वास है कि दूसरे पक्ष से बात जारी रखकर ही आगे का रास्ता मिलेगा और हम चल रहे मुद्दों का समाधान खोज लेंगे। उन्होंने कहा कि रूस-यूक्रेन संघर्ष ने सूचना और साइबर युद्ध के महत्व को सामने ला दिया है। हमें भविष्य के संघर्ष के लिए अपनी क्षमताओं का निर्माण करके खुद को तैयार करने की जरूरत है। सेना प्रमुख जनरल पांडे ने कहा कि भारत ने चीन को स्पष्ट कर दिया है कि वह एलएसी पर यथास्थिति में किसी भी बदलाव की अनुमति नहीं देगा, एलओसी के भीतरी इलाकों में आतंकवादी गतिविधियों के कम होने का कोई संकेत नहीं है। पारंपरिक युद्धों से लड़ने के लिए 'स्वदेशी हथियारों' की आवश्यकता को रेखांकित करते हुए उन्होंने कहा कि पिछले दो वर्षों में भारतीय सेना ने लगातार खतरे का आकलन करके सशस्त्र बलों को फिर से संगठित और पुनर्गठित किया है। नए सेना प्रमुख ने कहा कि भारत और चीन के बीच बातचीत की प्रक्रिया जारी है। हमारा मानना है कि यह आगे का रास्ता है। हमें विश्वास है कि जैसे-जैसे हम दूसरे पक्ष से बात करना जारी रखेंगे, हम मौजूदा मुद्दों का समाधान ढूंढ लेंगे। सेना का उद्देश्य वास्तविक नियंत्रण रेखा पर तनाव कम करना और यथाशीघ्र यथास्थिति बहाल करना है। नियंत्रण रेखा की स्थिति पर सेना प्रमुख ने कहा कि सीमा के दोनों ओर आम नागरिकों की स्थिति में सुधार हुआ है, लेकिन इसके विपरीत सक्रिय आतंकवादियों की संख्या में वृद्धि हुई है। नियंत्रण रेखा पर घुसपैठ और हिंसा का स्तर कम हो गया है, लेकिन भीतरी इलाकों में उस प्रभाव का कोई संकेत नहीं है। हमारा आखिरी उद्देश्य वास्तविक नियंत्रण रेखा पर तनाव को कम करके यथाशीघ्र यथास्थिति की बहाली करना है।

किसी को टीका लगवाने के लिए बाध्य नहीं किया जा सकता: सुप्रीम कोर्ट

नई दिल्ली: सुप्रीम कोर्ट ने सरकार की कोविड टीकाकरण नीति को सही ठहराया है। कोर्ट ने कहा कि यह वैज्ञानिक साक्ष्यों पर आधारित है लेकिन किसी को टीका लगवाने के लिए बाध्य नहीं किया जा सकता। सुप्रीम कोर्ट ने सुझाव दिया कि कोविड टीका न लगवाने वाले लोगों को सार्वजनिक सुविधाओं के इस्तेमाल से रोकने के आदेश राज्य सरकारों को हटा लेने चाहिए। 22 मार्च को तमिलनाडु, महाराष्ट्र और मध्य प्रदेश सरकार ने कोरोना वैक्सीन को लेकर जारी किए गए उनके दिशा-निर्देशों का बचाव किया था। सुनवाई के दौरान तमिलनाडु सरकार की ओर से एएजी अमित आनंद तिवारी ने कहा था कि सार्वजनिक स्थानों पर जाने के लिए कोरोना वैक्सीन अनिवार्य करने के पीछे बड़ा जनहित है ताकि कोरोना का संक्रमण आगे नहीं बढ़े। उन्होंने केंद्रीय स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय के उस दिशा-निर्देश का हवाला दिया जिसमें राज्यों को सौ फीसदी कोरोना वैक्सीनेशन कराने को कहा गया था। तमिलनाडु सरकार ने कहा था कि कोरोना का वैक्सीनेशन म्युटेशन रोकता है। बिना वैक्सीन लिए लोगों को संक्रमण का खतरा ज्यादा रहता है। महाराष्ट्र सरकार ने कहा था कि राज्य सरकार ने दुकानों, मॉल इत्यादि सार्वजनिक स्थानों में प्रवेश से पहले वैक्सीन लेना अनिवार्य किया है। राज्य सरकार की ओर से वकील राहुल चिटनिस ने कहा था कि याचिकाकर्ता का ये कहना सही नहीं है कि वैक्सीन अनिवार्य करना संविधान की धारा 14 और 21 का उल्लंघन है। उन्होंने कहा था कि वैक्सीनेशन याचिकाकर्ता के अधिकारों से भी जुड़ा हुआ है क्योंकि ये दूसरों के जीवन को भी प्रभावित करता है। मध्य प्रदेश सरकार ने केंद्र सरकार के रुख का समर्थन करते हुए कहा कि अधिकारों का संतुलन जरूरी है।

आठ वर्षों के कुशासन में बढ़ी बेरोजगारी : राहुल गांधी

नई दिल्ली: कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी ने केन्द्र सरकार पर आरोप लगाते हुए कहा कि बीते आठ वर्ष के कुशासन के चलते देश में बेरोजगारी चरम पर है। राहुल ने सोमवार को ट्वीट कर कहा कि देश में बिजली संकट, बेरोजगारी, महंगाई चरम पर है। जिसके चलते देश की जनता परेशान है। यह परेशानी केन्द्र की मोदी सरकार की गलत नीतियों के कारण उत्पन्न हुई है। उल्लेखनीय है कि कांग्रेस बढ़ती महंगाई को लेकर केन्द्र सरकार पर लगातार हमलावर है।

तलाक-ए-हसन और एकतरफा तलाक पर प्रतिबंध लगाने की मांग

नई दिल्ली: यह याचिका एक मुस्लिम महिला ने दायर की है। महिला ने पत्रकार होने के साथ ही एकतरफा अतिरिक्त न्यायिक तलाक-ए-हसन की शिकार होने का दावा किया है। महिला ने अधिवक्ता अश्विनी कुमार दुबे के माध्यम से याचिका दायर की है। याचिका में कहा गया है कि तलाक-ए-हसन और एकतरफा तलाक के अन्य रूपों की प्रथा ना तो मानव अधिकारों और ना ही लैंगिक समानता के आधुनिक सिद्धांतों के अनुरूप है। याचिका में कहा गया है कि कई इस्लामिक देशों में ऐसी प्रथाओं पर रोक लगाई जा चुकी है। इस तरह की प्रथाओं से सामान्य रूप से भारतीय समाज... खास तौर पर मुस्लिम महिलाओं को मुश्किलें पैदा हो रही हैं। ऐसी प्रथाओं ने महिलाओं और उनके बच्चों के जीवन को भी संकट में डाला है। विशेष रूप से समाज के आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग के लोगों के लिए ऐसी प्रथाएं समस्या की वजह हैं। रिपोर्ट के मुताबिक याचिकाकर्ता पीड़िता की शादी 25 दिसंबर 2020 को मुस्लिम रीति-रिवाजों के अनुसार एक व्यक्ति से हुई थी जिसका एक लड़का है। पीड़िता का दावा है कि उसके माता-पिता को दहेज देने के लिए मजबूर किया गया था। दहेज नहीं मिलने पर महिला को प्रताड़ित किया गया। याचिकाकर्ता का यह भी दावा है कि उसके पति और उसके परिवार के सदस्यों ने इतना प्रताड़ित किया कि वह गंभीर रूप से बीमार हो गई।

पीड़िता के मुताबिक जब उसके पिता ने दहेज देने से इनकार कर दिया तो उसके पति ने एक वकील के माध्यम से एकतरफा गैर न्यायिक तलाक-ए-हसन दिया। यह पूरी तरह से अनुच्छेद 14, 15, 21, 25 और संयुक्त राष्ट्र कंवेंशन के खिलाफ है। याचिकाकर्ता के वकील ने कहा कि तलाक-ए-हसन और एकतरफा गैर न्यायिक तलाक मनमाना, तर्कहीन और अनुच्छेद 14, 15, 21, 25 का उल्लंघन करता है जो असंवैधानिक है।

बेरोजगारी बनी समस्या: अप्रैल में बेरोजगारी दर 7.83% पर पहुंची

नई दिल्ली: देश में बेरोजगारी की समस्या लगातार बढ़ती जा रही है। अप्रैल महीने में देश की बेरोजगारी दर बढ़कर 7.83% पर पहुंच गई। इससे पहले मार्च में ये 7.60% पर थी। सीएमआई के आंकड़ों के मुताबिक मार्च 2022 में शहरी बेरोजगारी की दर 9.22% और ग्रामीण क्षेत्रों के लिए यह 7.18% रही है।

मई में बेरोजगारी दर 11.84% पर पहुंच गई थी: सीआईएमई के मुताबिक 2021 में मई में बेरोजगारी दर 11.84% पर पहुंच गई थी। हालांकि इसके बाद इसमें गिरावट देखने को मिली और ये जनवरी 2022 में 6.57% पर आई थी, लेकिन फरवरी में ये फिर 8.10% पर पहुंच गई थी जो अब 7.83% पर है।

इकोनॉमी की हेल्थ को दर्शाती है बेरोजगारी दर: सीएमआई के मुताबिक भारतीय अर्थव्यवस्था की सेहत को बेरोजगारी दर सही तरह से दर्शाती है, क्योंकि यह देश की कुल जनसंख्या में कितने बेरोजगार हैं, इसको बताती है। थिंक टैंक को उम्मीद है कि रबी फसल की बुआई की शुरूआत में तेजी देखने को मिल सकती है। इसका मतलब है कि चालू वित्त वर्ष में एग्री सेक्टर एक बार फिर शानदार प्रदर्शन करेगा।

चारधाम यात्रा पहले ही दिन मंडरा रहे संकट के बादल

देहरादून: दो साल बाद पूरे जोशखरोश के साथ तीन मई से शुरू हो रही चारधाम यात्रा के पहले ही दिन संकट के बादल मंडरा रहे हैं। पहले ही दिन मौसम तीर्थयात्रियों के साथ ही सरकार समेत जिला प्रशासन का कड़ा इम्तिहान लेगा। मौसम विभाग की ओर से मंगलवार को पश्चिमी विक्षोभ के सक्रिय होने के साथ ही बंगाल की खाड़ी से आ रही नम हवाओं से मैदान से लेकर पहाड़ तक बारिश की संभावना जताई है। यदि मौसम विज्ञानियों की भविष्यवाणी सच होती है और पहाड़ से लेकर मैदान तक बारिश होती है, तो इसका सीधा असर चारधाम यात्रा पर भी पड़ेगा। बारिश के चलते जहां चारधाम यात्रा पर जाने वाले यात्रियों को परेशानियों का सामना करना पड़ सकता हैं, वहीं चारधाम यात्रा को लेकर सरकार, शासन, जिला प्रशासन की ओर से की गई तैयारियों की भी कलई खुल सकती है। मौसम विभाग की ओर से जारी की रिपोर्ट के मुताबिक, यात्रा के पहले दिन पश्चिमी विक्षोभ के सक्रिय होने से बारिश की पूरी संभावना है। यदि मैदान से लेकर पहाड़ों तक तक बारिश होती है, तो चारधाम यात्रा मार्गों में भी बारिश से भूस्खलन का पूरा खतरा रहेगा।

भूस्खलन हुआ तो यात्रा के भी प्रभावित होने का खतरा: यात्रा मार्ग पर बारिश से भूस्खलन होता है तो यात्रा के भी प्रभावित होने का खतरा है। वैसे तो सरकार, शासन और चारधाम यात्रा से जुड़े सभी जिला प्रशासन की ओर से यात्रा को लेकर तैयारियों को अंतिम रूप दे दिया गया है। जिला एवं पुलिस प्रशासन के साथ ही आपदा प्रबंधन विभाग से जुड़े सभी अफसरों, कर्मियों को भी अलर्ट मोड पर रखा गया है।

सीमा विवाद: महाराष्ट्र को एक इंच जमीन नहीं देंगे: सीएम बोम्मई

बेंगलुरु: महाराष्ट्र के साथ सीमा विवाद पर कर्नाटक के मुख्यमंत्री बसवराज बोम्मई ने सोमवार को चेतावनी दी है। उन्होंने साफ कहा है कि कर्नाटक राज्य अपनी एक इंच जमीन भी पड़ोसी राज्य को नहीं देगा। इसके साथ ही उन्होंने महाराष्ट्र के राजनेताओं से अपने राजनीतिक अस्तित्व के लिए भाषाई हथकंडे या सीमा मुद्दे का इस्तेमाल नहीं करने का आग्रह किया। यह पहली बार नहीं है जब उन्होंने सीमा विवाद पर इस तरह से अपनी स्थिति साफ की हो, वे पहले ही कह चुके हैं कि वे अपनी जमीन नहीं देंगें। इसके साथ ही उन्होंने उल्लेख किया कि कई कन्नड़ भाषी महाराष्ट्र में हैं, उन्हें कर्नाटक में शामिल करने के बारे में विचार किया जा रहा है। ये बातें उन्होंने रविवार को महाराष्ट्र के उपमुख्यमंत्री अजीत पवार के बयान पर पलटवार करते हुए कहीं। दरअसल, महाराष्ट्र के उपमुख्यमंत्री अजीत पवार ने कहा था कि जब हम महाराष्ट्र के गठन के 62 साल मना रहे हैं, हमें खेद है कि कर्नाटक के बीदर, भालकी, बेलगाम, कारवार, निप्पनी और अन्य स्थानों के मराठी भाषी गांवों को महाराष्ट्र में विलय नहीं किया जा सका।

आप सरकार ने 26454 पोस्टों को भरने और एक विधायक- एक पेंशन को दी मंजूरी

पंजाब कैबिनेट मीटिंग में 5 फैसले मंजूर

चंडीगढ़: पंजाब में मान सरकार की कैबिनेट मीटिंग हुई। इस बार सरकार वित्तीय हालात को देखते हुए बड़े फैसले लिए गए। जिसमें पहला फैसला पंजाब सरकार के अलग अलग विभागों में 26454 पदों को भरने की मंजूरी दी गई। इसके अलावा एक विधायक, एक पेंशन की नोटिफिकेशन मंजूर की गई। घर घर राशन पहुंचाने की योजना को मंजूरी दी गई। साथ ही अक्तूबर से आटा पहुंचाने की योजना को भी लागू किया जाएगा। मुक्तसर जिले में नरमे के खराबे के लिए 41.89 करोड़ रुपये मुआवजे को मंजूर किया गया। छोटे ट्रांसपोर्टरों के लिए फीस जमा करवाने के लिए तीन महीने का समय दिया गया। पंजाब के वित्त मंत्री हरपाल सिंह ने कहा कि कई विभागों में 26454 पोस्टों को भरने की मंजूरी दे दी गई है। इससे युवाओं को रोजगार मिलेगा। कृषि विभाग में 67, पशु पालन विभाग में 218, आबकारी विभाग में 338, सहकारिता विभाग में 777, गृह विभाग में 10475 पोस्टों को भरा जाएगा। स्कूली शिक्षा में 6452 पोस्टों को सहित कुल 26454 पोस्टों को भरा जाएगा। हरपाल चीमा ने कहा कि एक विधायक जितनी बार भी जितेगा, उसे एक ही पेंशन दी जाएगी। डोर टू डोर राशन की स्कीम अक्टूबर से शुरू होगी। राशन की डिलीवरी लोगों को घरों में मिलेगी। प्राइवेट बसें, छोटे कर्मिशयल वाहनों को तीन महीनों में किश्तों के माध्यम से टैक्स भरने की छूट दी गई है। हरपाल सिंह ने कहा कि मुक्तसर जिले के किसानों को फसल खराब होने पर मुआवजा दिया जाएगा। वित्त मंत्री हरपाल चीमा ने कहा कि 241 पूर्व विधायकों को 18 करोड़ सालाना पेंशन जा रही थी। आने वाले समय में पंजाब में बिजली की कोई दिक्कत नहीं रहेगी।

घोषणा हुई लेकिन लागू नहीं: सीएम भगवंत मान ने सरकार बनने के बाद कहा था कि पंजाब में अब एक विधायक को एक ही पेंशन मिलेगी। अभी तक विधायक बनने पर पहली बार 75 हजार पेंशन मिलती है। दूसरी टर्म होने पर इसमें 25 हजार की बढ़ोतरी होती रहती है।

धर्मगुरुओं से बात करें, सड़क रोककर धार्मिक आयोजन न करें: सीएम योगी

लखनऊ: मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने मंगलवार को ईद, परशुराम जयंती और अक्षय तृतीया को लेकर अफसरों को निर्देश दिए हैं कि यह सुनिश्चित करें कि सभी पर्व शांति और सौहार्द के बीच सम्पन्न हों, इसके लिए स्थानीय जरूरतों को ध्यान में रखते हुए सभी जरूरी प्रयास किए जाएं। उन्होंने कहा कि वर्तमान परिवेश को देखते हुए पुलिस प्रशासन को अतिरिक्त संवेदनशील रहना होगा। मुख्यमंत्री ने कहा कि धार्मिक कार्यक्रम, पूजा-पाठ आदि निर्धारित स्थान पर ही हों। धर्मगुरुओं से संवाद बना कर यह सुनिश्चित करें कि सड़क मार्ग, यातायात बाधित कर कोई धार्मिक आयोजन न हो। ये निर्देश उन्होंने सोमवार को अफसरों के साथ बैठक में दिए।

खबर संक्षेप

पेंशनर्स एसोसिएशन का वार्षिकोत्सव आठ मई को

प्रयागराज। गवर्नमेंट पेंशनर्स वेलफेयर एसोसिएशन की एक बैठक हीरा वाटिका में हुई। जिसमें निर्णय लिया गया कि एसोसिएशन का वार्षिकोत्सव आठ मई को 12 बजे से आर्य कन्या इंटर कॉलेज मुट्ठीगंज में होगा। मुख्य अतिथि न्यायमूर्ति राजीव लोचन मेहरोत्रा व विशिष्ट अतिथि आर्य समाज उत्तर प्रदेश के महामंत्री पंकज जायसवाल होंगे। वार्षिकोत्सव में 80 वर्ष से अधिक आयु के 13 पेंशनर को सम्मानित किया जाएगा। बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ कार्यक्रम के अन्तर्गत 21 मेधावी छात्राओं को पुरस्कृत किया जाएगा। साथ ही एसोसिएशन के विशिष्ट सदस्यों, उत्कृष्ट कार्य करने वाले सदस्यों को भी सम्मानित करेंगे। मनोरंजक सांस्कृतिक कार्यक्रम के आयोजन भी होंगे।बैठक में आरएस वर्मा, डॉ. पीके सिन्हा, सुधा प्रकाश, उमेश शर्मा, सुरेंद्र सिंह, श्याम सुंदर सिंह पटेल, पीसीएल श्रीवास्तव, भगौती प्रसाद, आरके पांडेय, जयश्री श्रीवास्तव आदि रहे।

भाजपा जिला अध्यक्ष के घर चोरी का पुलिस ने किया पर्दाफाश

जेवरात सहित नगदी बरामद ,अभी दो लुटेरे पुलिस गिरफ्त से दूर

अखंड भारत संदेश

चोरी की घटना का पर्दाफाश करते पुलिस अधीक्षक

प्रयागराज। करछना दुर्दांत चोरों , लुटेरों के बड़े गैंग का पुलिस ने किया पर्दाफाश सरगना मोहम्मद कामिल उर्फ.अल्तमस समेत कुल 6 बदमाश दबोचे गए। भारी मात्रा में नकदी और आभूषण बरामद बतादेकि करछना थाना क्षेत्र के खाई गांव निवासी भाजपा जिला अध्यक्ष विभव नाथ भारतीय के घर 16 अप्रैल रात्रि की है जहां से रात चोरों ने गिरोह बना कर लाखों रुपये नगदी समेत लाखों के जेवरात चोरों ने पार कर दिया था, । खाई गाँव में बड़ी चोरी की वारदात हुई थी ,जो करछना पुलिस के लिए एक चुनौती बनी हुई थी, मामला एक राजनैतिक पार्टी के नेता के घर का होने से करछना पुलिस पर घटना का पदार्फास एक चुनौती बनी हुई थी, उस दौरान पुलिस ने तत्काल मुकदमा दर्ज कर कुल 5 टीमें लगाई थीं। जिन्होंने दिन रात अथक परिश्रम किया। पुलिस टीमों ने बड़े ही कुख्यात गैंग का पर्दाफाश किया और गैंग के सरगना समेत 6 को दबोचा। इनका सरगना कामिल उर्फ. अल्तमस पहले भी 07 बार नकबजनी के मामले में जेल जा चुका है। जबकि इसके एक गिरफ़्तार साथी रविकान्त उर्फ.टिंकू पर गैंगेस्टर जैसे गंभीर ऐक्ट के तहत कड़ी कार्रवाई हो चुकी है। दबोचे गए आधा दर्जन बदमाशों में 02 तो शातिर चोर हैं जबकि 04 अन्य माल गलाने और बेचने वाले गैंग के सदस्य हैं।बरामद शुदा माल में ? 100,000/- नकद, करीब 15,00 ग्राम चाँदी, करीब 20,000 मिलीग्राम सोना, 02 मोटर साइकिलें और ताला तोड़ने और कुण्डा काटने के औजार शामिल हैं। दबोचे गए सभी आधा दर्जन बदमाशों को बरामदगी और अन्य ठोस सबूतों के साथ जेल भेज दिया गया है। खुलासा करने वाली टीम को रद्ध प्रयागराज द्वारा 20,000/- का नकद ईनाम दिया जाएगा।

मंत्री नंदी ने प्रदेश वासियों को दी ईद की शुभकामनाएं

प्रयागराज। प्रदेश सरकार के औद्योगिक विकास, निर्यात प्रोत्साहन, एनआरआई और निवेश प्रोत्साहन मंत्री नंद गोपाल गुप्ता नंदी ने मुस्लिम धर्मावलंबियों के साथ ही समस्त प्रदेशवासियों को ईद की बधाई व शुभकामनाएं दी। मंत्री नंदी ने कहा कि पवित्र त्योहार ईद न केवल शांति, भाईचारे और सार्वभौमिक प्रेम का संदेश फैलाता है, बल्कि मानव जाति से यह आग्रह भी करता है कि अपनी आत्माओं की उन्नति के लिए सकारात्मक मूल्य वाले कार्य करें। मंत्री नंदी ने प्रदेशवासियों से कोरोना जैसी महामारी से बचाव के लिए सतर्क रहने की अपील की।

न्यूज झरोखा

कल मानेगी ईद, बाजारों में देर रात तक खरीदारों की रही भीड़

झूंसी। माह- ए- रमजान का सोमवार को 30वां रोजा पूरा हो गया। शाम को रोजा खोलने के बाद चाँद के दीदार कर एक मुस्लिम भाइयो ने दूसरे को चाँद का मुबारकबाद दिया। मंगलवार को उल्लास के साथ ईद मनाई जाएगी। सोमवार को सुबह से लेकर देर रात तक मुस्लिम बस्तियों में खूब चहल पहल रही। ईद के नमाज के लिए मस्जिदों में तैयारी पूरी हो गई है। क्षेत्र के अनवर मार्केट, आवास विकास कॉलोनी, कोहना, नई झूंसी, कनिहार, हनुमानगंज बाजार में देर रात तक खरीदारो की भारी भीड़ रही। सबसे अधिक कुर्ता पयजामा, जूता चप्पल के साथ टेलर की दुकानों पर भीड़ रही। ईद की वजह से अनवर मार्केट को रंग बिरंगी झालरों से सजाई गई है। मार्केट में टेलर की दुकानें देर रात तक खुली रही। बाजार में आई खरीदारी के लिए महिलाओं ने साजो सजावट के लिए रंग बिंगे फूल, फूलदान, पर्दे, चद्दर, गुदस्ते के साथ क्राकरी व सेवइयो की खरीदारी करती नजर आई। मुक्त वल्ली मोहम्मद नियाज व पेश इमाम अबरार अहमद ने बताया कि अनवर मार्केट मस्जिद में मंगलवार की सुबह 6:30 नमाज अदा की जाएगी।

सुदिष्ट ब्रह्म धाम में बाबा का मनाया जाएगा जन्मोत्सव

सिरसा। प्रयागराज मेजा क्षेत्र ब्लाक उरुवा गाँव परानीपुर बिशेनपुर मे श्री सुदिष्ट ब्रह्म धाम मे बाबा का जन्मोत्सव चार व पांच मई को मनाया जाएगा। इस कार्यक्रम की जानकारी श्री सुदिष्ट बाबा महाराज सेवा समिति के अध्यक्ष ओमप्रकाश सिंह ने दी। परानीपुर बिशेनपुर स्थित श्री सुदिष्ट ब्रह्म धाम में आयोजित कार्यक्रम में चार मई को रामचरित मानस के पाठ से शुरू होगा। पांच मई को पूणार्हुति होगी।साथ ही इसी दिन सुबह को आरती, मपालकी यात्रा और शाम की यात्रा के साथ सायं सात बजे से भक्तिगीत कार्यक्रम होगा। पांच मई को भंडारे का भी आयोजन होगा। रविवार को मंदिर परिसर में कमेटी के पदाधिकारियों की बैठक में कार्यक्रम की तैयारियों पर चर्चा की गई। इस आयोजन में समस्त क्षेत्र वासियों से अपील की जाती है कि श्री सुदेश ब्रह्म धाम जन्म उत्सव में भारी संख्या में पहुंचे। बैठक में गिरीश पंडा,बृजेश पंडा, अनुज पंडा, अमित, विशाल, अजीत महाराज, ओमप्रसाद सिंह, शिव प्रसाद सिंह, हंसराज सिंह आदि प्रमुख लोग उपस्थित रहे।

वर्षों से क्षतिग्रस्त मार्ग का नहीं किया जा रहा मरम्मति कार्य,आक्रोश

करछना। विकास खंड करछना क्षेत्र के अंतर्गत भीरपुर से लेकर भगनपुर तक संपर्क मार्ग वर्षों से पूरी तरह से क्षतिग्रस्त हो गया है। जिसका मरम्मती कार्य न किए जाने से मार्ग में डाली गई गिट्टी उखड़ कर बाहर आ गई है। और समूचा मार्ग बड़े-बड़े गड्ढे में तब्दील हो गया है। इस मार्ग से रोजाना हजारों की संख्या में राहगीर आवागमन करते हैं। रात के अंधेरे में गुजरते समय आए दिन राहगीर गड्ढे में फस कर गिरते पड़ते रहते हैं और चोटिल हो जाते हैं। बदहाली का दंश झेल रही मार्ग पर बड़े वाहन चलने से धूल का गुबार उठ कर व्यापारियों के दुकान व मार्ग के बगल बने घरों में घुस जाता है। जिससे लोगों को खासी दिक्कत उठानी पड़ रही है। भले ही प्रदेश सरकार करोड़ों रुपए खर्च करके सभी सड़कें गड्ढा मुक्त होने की ढिढोरा पीट रही हो लेकिन जमीनी हकीकत कुछ और बयां कर रही है। विभागीय अधिकारियों की उदासीनता के चलते सारा विकास कार्य कागजों पर सिमट कर रह गया है। बीरपुर गांव के ग्रामीण पप्पू केसरवानी, दिलीप यादव ने बताया कि मामले को लेकर कई बार जनप्रतिनिधि व तहसील दिवस पर शिकायत की गई। लेकिन अभी तक किसी के भी द्वारा ध्यान नहीं किया गया।

उपायुक्त मनरेगा ने बीडीओ के साथ किया रानी तालाब का निरीक्षण

फूलपुर। उपायुक्त मनरेगा कपिल कुमार ने सोमवार को फूलपुर विकास खण्ड के अरवासी गांव स्थित रानी तालाब का निरीक्षण कर अधीनस्थों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। बीडीओ प्रवीणानंद के साथ तालाबों की स्थिति का जायजा लेने पहुंचे डीसी मनरेगा ने शत प्रतिशत मानव दिवस सृजन पर जोर देते हुए कहा कि शासन की मंशानुरूप गांवों में अधिक से अधिक मानव दिवस का सृजन किया जाए जिससे मनरेगा मजदूरों को अधिक से अधिक रोजगार मिल सके। वहीं रैनी गांव में बन रहे आंगनबाड़ी केंद्र व इंटरलाकिंग रोड का निरीक्षण करने पहुंचे खण्ड विकास अधिकारी प्रवीणानंद ने कार्य को मानक के अनुसार ही पूर्ण करने के निर्देश दिए। मौके पर ग्राम प्रधान, रोजगार सेवक के साथ ही अन्य ग्रामीण मौजूद रहे।

सोरांव के लेखपालों ने अतिरिक्त क्षेत्रों का बस्ता जमा किया

मामला सोरांव तहसील में अधिवक्ता द्वारा लेखपाल विपिन भट्ट के साथ मारपीट का

अखंड भारत संदेश

सोरांव। सोरांव तहसील में अधिवक्ता द्वारा लेखपाल विपिन भट्ट के साथ मारपीट की गई थी और उप जिलाधिकारी द्वारा समझौता कराने को लेकर दोनों पक्षों को बुलाया गया परंतु वहां पर भी कुछ अधिवक्ताओं द्वारा हंगामा किया गया। जिसके बाद सभी लेखपालों ने अपने मूल क्षेत्र के कार्यों के गुणवत्ता के मद्देनजर अतिरिक्त अन्य क्षेत्रों का बस्ता जमा करना प्रारंभ कर दिया है।

लेखपाल द्वारा अतिरिक्त क्षेत्रों का बस्ता जमा करने से उस क्षेत्र के राजस्व ,सरकारी कार्य के अतिरिक्त आय - जाति- निवास व अन्य कार्य बाधित हो गए हैं।सारे प्रकरण की जानकारी जिला अधिकारी व उप जिलाधिकारी को देने के बाद भी अब तक कोई हल नहीं निकला है। गौरतलब है कि जिले भर में लेखपालों की संख्या सर्जित पोस्ट के सापेक्ष बहुत कम है। लेखपालों की संख्या कम होने के बाद भी सरकार हित में लेखपाल एक से अधिक अन्य क्षेत्रों का कार्य कर रहें हैं। जिसके कारण लेखपालों पर अनावश्यक दबाव बनाया जाता है। और त्वरित कार्रवाई न करने पर उनके साथ बदसलूकी भी की जाती है। विवश होकर लेखपालों ने अतिरिक्त बसों का जमा करने की कार्रवाई सोरांव तहसील से प्रारंभ कर दी गई है जल्दी ही तहसील स्तर पर सुरक्षा व्यवस्था नहीं की गई तो पूरे जिले भर के लेखपाल तहसील में उपस्थित ना होकर केवल अपने क्षेत्रों में रहकर अपने मूल हल्के का ही कार्य करेंगे। या फैसला तहसील कार्यकारिणी व जिला कार्यकारिणी द्वारा ने सामूहिक रूप से बैठक में ली गई। लगभग 21 लेखपालों ने सोमवार को अतिरिक्त क्षेत्रों का बस्ता जमा कर दिए है। उक्त जानकारी लेखपाल संघ जिला अध्यक्ष राज कुमार सागर और राजेंद्र शुक्ला जिला मंत्री उत्तर प्रदेश लेखपाल संघ प्रयागराज ने दिया है।

जीवित को मृतक दिखा कर दर्ज कराई वराशत वकीलों ने किया हंगामा

करछना। प्रयागराज तहसील में वकीलो ने तहसीलदार कोर्ट में किया हंगामा जीवित व्यक्ति को मृत दिखा कर वराशत दर्ज कराने के मामले में कई वर्षों से जीवित व्यक्ति अपनी जीवित होने का प्रमाण लेकर तहसील में लगा रहा चक्कर न्याय के लिए गुहार लगा रहा है इसी मामले में अधिवक्ता ध्रुवराज सिंह के द्वारा सोमवार को तहसीलदार के पास मुकदमे के संबंध में जानकारी लेने के लिए गये तो तहसीलदार के रवैए ठीक नहीं होने से नाराज हो कर तहसीलदार कोर्ट के दर्जनों अधिवक्ताओं के साथ धरने पर बैठे गये करीब दो घंटे बाद बार एसोसिएशन के अध्यक्ष चिन्ता मणि शुक्ला ने तहसीलदार से वार्ता की जिसमें तहसीलदार ने दो दिन में मामले का निस्तारण कराने का आश्वासन दिया जिसके बाद अधिवक्ता धरने से बाहर निकले इस मौके पर अधिवक्ता संघ में अधिवक्ता ध्रुवराज सिंह,आशुतोष सिंह , रविराज सिंह , मुदीत सिंह ,सहित दर्जनो अधिवक्ता मौजूद रहे।

महंगाई और मिलावट खोरी से जनता त्रस्त

खाद्य पदार्थों में जारी है गोरखधंधा नहीं लग रहा लगाम, विभाग मौन

मेजा। महंगाई की मार क्षेत्र की जनता को कराहने पर मजबूर कर रही है, ऊपर से मिलावट खोरी हाल को भी बेहाल कर रही है। बता दें बढ़ती महंगाई जहां खाद्य पदार्थों से लेकर लगभग सभी वस्तुओं को अपनी गिरफ्त में ले रही है। वह धीरे-धीरे अब असर भी दिखाना शुरू कर चुकी है। महंगाई को सीधे तौर पर बढ़ते पेट्रो पदार्थों से जोड़ा जा रहा है, जिसका असर बाजारों तक पहुंच गया। नतीजतन बच्चों के पेंसिल कॉपी किताब तो मांगे हुए ही, साथ ही लोगो के खुराक की वस्तुएं दोगुनी कीमत तक बढ़ गयी। आम आदमी दोगुनी कीमत से समझौता कर वस्तुएं घर ले जाए और बाद में उसे पता चले की वस्तु में मिलावट खोरी की गयी है, तब वह अपने आप को एकदम ठगा महसूस करता है। मिलावट खोरी का यह खेल विशेषकर खाद्य पदार्थों में खूब चल रहा है। मिलावटी माल खाएंगे तो बीमार भी पड़ेंगे और फिर इलाज के लिए पैसे भी खर्च होंगे। यहां आम आदमी पहले महंगाई, फिर मिलावट खोरी उसके बाद उत्पन्न बीमारी से जूझता रहेगा। यानी कि जनता दोहरी नहीं तिहरी मार झेलने को मजबूर है। ऐसे में खाद्य निरीक्षक विभाग के अधिकारियों पर सवाल उठना लाजमी होगा, कि उनकी मौजूदगी में यह सारा खेल चल रहा है। मामले में कुछ लोगों का कहना है कि मिलावट खोरी का गोरख धंधा संबंधित अधिकारियों की निष्क्रियता के कारण फल-फूल रहा है। वहीं यदि सूत्रों की बातों पर गौर किया जाए तो खाद्य निरीक्षक अधिकारी की गाड़ी प्रत्येक माह में एक से दो बार क्षेत्रीय बाजारों में जगह-जगह दौड़ती नजर आती है। अधिकारियों के दौड़ने के बावजूद गोरखधंधे में चार चांद लगना कुछ और ही इशारा करती है। फिलहाल जिस तरह से अपराधियों पर सरकारी बुलडोजर चल रहे हैं, जनता मिलावटखोरों पर भी उसी गरज की आस में बैठी है।

चंद्रा नर्सिंग होम ने दस क्षय रोगियों को लिया गोद

सीएचसी अधीक्षक की मौजूदगी में बांटा गया पहले माह का पौष्टिक आहार

शंकरगढ़। तपेदिक को समूल नष्ट करने के लिए शासन की पहल पर रोगियों को गोद लेने और उन्हे पुष्टाहार प्रदान करने का क्रम अनवरत जारी है। इस अभियान के तहत सक्षम व्यक्तियों, संस्थाओं से क्षय रोगियों को गोद लिए जाने का जिला प्रशासन ने अनुरोध किया था। इसके तहत पीपीजीसीएल, नगर पंचायत द्वारा तमाम रोगियों को गोद लिया जा चुका है। इसी क्रम में चंद्रा नर्सिंग होम, शंकरगढ़ ने भी क्षेत्र के दस क्षय रोगियों को गोद लिया है। चंद्रा नर्सिंग होम के प्रबंधक ने सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र शंकरगढ के अधीक्षक की उपस्थिति में आज दस टीवी मरीजों को दवा के साथ पौष्टिक आहार वितरित किया। सीएचसी अधीक्षक डॉक्टर शैलेंद्र सिंह ने कहा कि सन 2025 तक में टीवी को पूरे देश में समाप्त करने का लक्ष्य रखा गया है, इसके तहत हर सक्षम व्यक्ति व संस्था द्वारा टीवी मरीजों को गोद लेकर उनके लिए प्रतिमाह पौष्टिक आहार के साथ दवा आदि की व्यवस्था की जा रही है।क्षय रोगियों की मदद का यह क्रम अनवरत छह महीने तक चलेगा। अधीक्षक ने चंद्रा नर्सिंग होम के प्रबंधक डा. आरके सिंह की प्रशंसा की। चंद्रा नर्सिंग होम के प्रबंधक डा. आरके सिंह ने कहा कि हर व्यक्ति को चाहिए कि वह लोगों की मदद करे, चंद्रा नर्सिंग होम हमेशा से गरीबों की मदद करता चला आया है और आगे भी करता रहेगा। पौष्टिक आहार वितरण के समय प्रमोद पांडेय, तिवारीजी, अजय सिंह, कमलाकर सिंह, अमित सिंह, धुन्नीलाल, अंशू वर्मा, रावेंद्र सिंह आदि लोग उपस्थित थे। बता दें कि एक रोज पहले सीएचसी अधीक्षक डाक्टर शैलेंद्र सिंह की उपस्थिति में पीपीजीसीएल (बारा पावर प्लांट) ने 100 टीवी मरीजों को गोद लेकर उन्हें पौष्टिक आहार वितरित किया। अब यह संस्थान अगले छह महीने तक, प्रति माह इसी तारीख को गोद लिए गए मरीजों को पौष्टिक आहार वितरित करेंगे।

एडीएम ने किया नगर पंचायत कार्यालय का औचक निरीक्षण मिली खामियां,जांच का निर्देश

अखंड भारत संदेश

शंकरगढ़। सोमवार को एडीएम (वित्त एवं राजस्व) जगदंबा सिंह ने नगर पंचायत कार्यालय का औचक निरीक्षण किया। औचक निरीक्षण के दौरान नगर पंचायत शंकरगढ़ के चेयरमैन लल्लू कनौजिया ने कार्य की गुणवत्ता और वित्तीय अनियमितता की शिकायत एडीएम से की। जिस पर एडीएम ने एक जांच कमेटी बैठा कर 15 दिन का समय दिया है। मंगलवार को ईद के त्यौहार के मद्देनजर साफ-सफाई समेत अन्य कार्यों को लेकर एडीएम (वित्त एवं राजस्व) जगदंबा सिंह यमुनापार के नगर पंचायत शंकरगढ़ पहुंचे और नगर की साफ सफाई समेत अन्य कार्यों की जानकारी मांगी। एडीएम के अचानक पहुंचने पर हड़कंप की स्थिति बनी रही। निरीक्षण के दौरान एडीएम को अन्य शिकायतें भी मिली। चेयरमैन लल्लू कनौजिया ने वित्तीय अनियमितता, कार्यों की गुणवत्ता और फर्जी भुगतान की शिकायत की। जिस पर एडीएम ने तत्काल एक जांच कमेटी बनाकर इसकी जिम्मेदारी उपजिलाधिकारी बारा और अधिशासी अभियंता को दी और 15 दिन के अंदर जांच रिपोर्ट देने को कहा। एडीएम ने बताया कि यदि वित्तीय अनियमितता पाई जाती है, तो वैधानिक कार्यवाही की जाएगी। जांच के दौरान एडीएम को नगर पंचायत शंकरगढ़ के डूडा कॉलोनी में अवैध कब्जा,समेत तमाम समस्याएं बताई गई, जिस पर इन्होंने कार्रवाई का भरोसा दिलाया है। इस मौके पर ईओ सत्येंद्र प्रकाश चौरसिया, लिपिक प्रदीप कुमार,अमित कुमार समेत तमाम कर्मचारी मौजूद रहे।

अधिवक्ता न्याय दिलाने के साथ समाज को नई दिशा देते हैं : राजमणि कोल

अखंड भारत संदेश

कोरांव बार एसोसिएशन के शपथ समारोह में बोले विधायक

रत्योंरा। अधिवक्ता पीड़ितों शोषित व वादकारियों को न्याय दिलाने के साथ-साथ समाज को नई दिशा देने का काम करते हैं। बार व बेंच के टकराव से वादकारियों का ही अहित होता है। इसलिए समाज का प्रबुद्ध वर्ग अधिवक्ता एवं अधिकारी बार एवं बेंच के बीच आपसी सामंजस्य व सौहार्द बना कर कार्य करें। जिससे पीड़ितों को त्वरित व जल्द वादकारियों को न्याय मिलता रहे। यह बातें कोरांव सुरक्षित विधानसभा सीट के भाजपा विधायक राजमणि कोल ने तहसील मुख्यालय परिसर कोरांव में आयोजित बार एसोसिएशन के नवनियुक्त पदाधिकारियों के शपथ समारोह को संबोधित करने के दौरान बतौर मुख्य अतिथि कही। विधायक राजमणि कोल ने आगे कहा कि लंबे समय से कोरांव में सिविल कोर्ट के स्थापना की मांग चल रही है। नवनियुक्त बार एसोसिएशन कोरांव के अध्यक्ष समेत अधिवक्ता मामले में पहल करें। प्रदेश के मुख्यमंत्री व विधि मंत्री से मिलकर सिविल कोर्ट के लिए जमीन एवं धन की व्यवस्था कराने का काम करूंगा। उन्होंने अधिवक्ताओं को आश्वस्त करते हुए कहा कि किसी भी दिन अधिवक्ता समय निकालकर डीएम के पास चलें डीएम के यहां बैठकर घंटे भर में सिविल कोर्ट के लिए जमीन चिन्हित करा दी जाएगी। विधायक ने कोरांव तहसील के सभी अधिवक्ताओं से अपनी वेशभूषा में ही तहसील आने की बात कही। उन्होंने कहा कि अधिवक्ता अगर अपनी वेशभूषा में आएंगे तो अधिकारी भी उनका सम्मान करेगा वादकारी भी पहचानते रहेंगे। अधिवक्ताओं के शपथ समारोह में उपस्थित रहे बार काउंसिल उत्तर प्रदेश के पूर्व चेयरमैन अधिवक्ता देवेंद्र मिश्र नगरहा ने बार एसोसिएशन कोरांव के नवनिर्वाचित अध्यक्ष उमाकांत तिवारी व मंत्री कैलाश नाथ पटेल व समेत समस्त पदाधिकारियों को पद एवं गोपनीयता की शपथ दिलाई। अधिवक्ताओं के शपथ समारोह की अध्यक्षता सरदार पटेल इंटर कॉलेज सिकरो कोरांव के प्रबंधक अमर बहादुर सिंह एडवोकेट तथा संचालन अरुण कुमार मिश्र एडवोकेट ने किया। शपथ समारोह में उपस्थित लोगों में प्रमुख रूप से बार एसोसिएशन कोरांव के पूर्व अध्यक्ष राजेंद्र प्रसाद सिंह, ब्रजेश मिश्र उर्फ मुन्ना मिश्रा, वरिष्ठ अधिवक्ता हेवमती कुमार सिंह, वरिष्ठ अधिवक्ता अजीत प्रताप सिंह, शशि द्विवेदी, सुरेंद्र प्रसाद द्विवेदी, पूर्व अध्यक्ष मोतीलाल कुशवाहा, सजीवन लाल सिंह, बालकृष्ण सिंह, लल्लन तिवारी, रामेश्वर प्रसाद तिवारी, समेत कोराव तहसील के कई अन्य वरिष्ठ अधिवक्ता तथा तहसील के कर्मचारी एवं बार एसोसिएशन के पदाधिकारी व भारी संख्या में वादकारी मौजूद रहे।

अनियंत्रित बाइक की टक्कर से ब्यूटी पार्लर संचालिका घायल

मेजा रोड। मेजा के चपरतला गांव मे अनियंत्रित बाइक की टक्कर से ब्यूटी पार्लर संचालिका गंभीर रूप से घायल हो गई। जिसे स्थानीय लोगों व परिजनों की मदद से अस्पताल में भर्ती कराया गया है। मिली जानकारी के अनुसार चपरतला गांव निवासी सुमन सरोज पत्नी राजन सरोज की उरुवा बाजार में ब्यूटी पार्लर की दुकान है। वह रोज की तरह शाम आठ बजे दुकान बंद कर पैदल ही घर जा रही थी कि रास्ते में वह किराना की दुकान पर सामान लेने के लिए सड़क क्रास कर रही थी कि चपरतला-नेवढ़िया रास्ते पर एक अनियंत्रित बाइक सवार ने टक्कर मार दी। जिससे सुमन गंभीर रूप से घायल हो गई। उसे अस्पताल मे भर्ती कराया गया है। सुमन सरोज के परिजनों का आरोप है कि बाइक से टक्कर मारने वाले नेवढ़िया गांव के मुनेश मिश्रा हैं। जिनकी बाइक टीवीएस मैक्स थी जिसमे लाइट नही थी जिस कारण यह हादसा हुआ। वहीं बाइक सवार मुनेश मिश्रा भी घायल हैं।

ईद,अक्षय तृतीया पर मोहब्बत की फिजा पैदा करें : सरदार पतविंदर सिंह

अखंड भारत संदेश

नैनी। प्रयागराज भारतीय जनता पार्टी अल्पसंख्यक मोर्चा काशी क्षेत्र,क्षेत्रीय उपाध्यक्ष सरदार पतविंदर सिंह ने कहां की ईद,अक्षय तृतीया की तहे दिल की गहराइयों से मुबारकबाद कबूल कीजिए हम कितने खुशनसीब हैं कि हमारा देश विभिन्न धर्मों का अनोखा संगम है अनेकता से एकता की हमारी विशेषता है इस पवित्र पावनी भूमि में ऋषि-मुनियों,पीर पैगंबरों और वाहेगुरु ने मोहब्बत के ऐसे दीप जलाए,प्रेम के सागर बाहए कि जिसकी रोशनी सारी दुनिया में जगमगा रही है अहिंसा,प्रेम,करुणा की यह धरती उत्तर प्रदेश ने रूढ़ि वादिता को नकारते हुए एक मिली जुली तहजीब को कायम किया है आज सदियों पुरानी गौरवशाली परंपरा को मजबूत बनाने की बहुत जरूरत है विभिन्न धर्मों के महत्वपूर्ण त्यौहार एक साथ होने के कारण हमारी खुशियां दो गुनी,चौ गुनी हो गई हैं क्षेत्रीय उपाध्यक्ष सरदार पतविंदर सिंह ने आगे कहा कि वही हमारी जिम्मेदारी भी बनती है' कि प्रदेश की महान विरासत को बनाए रखें अफवाहों से बचें,ऐसी बात ना लिखे, ना करें जिससे किसी धर्म संप्रदाय के आत्म सम्मान को ठेस पहुंचे समाज में शांति,व्यवस्था, भाईचारा,प्यार,मोहब्बत का माहौल बनाए रखने में आपस में पूर्ण सहयोग प्रदान करें।

खबर संक्षेप

राष्ट्रीय क्रिकेट एकेडमी के लिए फलक नाज का चयन

प्रयागराज। कटघर निवासी क्रिकेटर फलक नाज का चयन अंडर-19 वर्ग में राष्ट्रीय क्रिकेट एकेडमी (एनसीए) के लिए हुआ। फलक जूनियर महिला क्रिकेट (अंडर-19) में आलराउंडर के तौर पर लगातार दो सत्रों में यूपीसीए का प्रतिनिधित्व कर रही थीं। फलक को उनके शानदार प्रदर्शन का उपहार अब मिला है। इलाहाबाद क्रिकेट एसोसिएशन की महिला विंग की सचिव डा जूली ओझा ने बताया कि एनसीए का कैंप 15 मई से अनंतपुर में आयोजित होगा। फलक के पिता नासिर अहमद ने खुशी व्यक्त करते हुए बताया कि अंडर-19 वर्ग से एनसीए में चयनित होने वाली वह प्रयागराज की पहली महिला क्रिकेटर हैं। हम सभी को बहुत उम्मीद है कि जल्द ही वह राष्ट्रीय टीम में देश के लिए खेलती हुई नजर आएगी।

बहन को विदा कराने गए भाई को जीजा ने मारी गोली, पत्नी बच्चों को घर में किया कैद

अखंड भारत संदेश

नैनी। करछना इलाके के कनैला गांव में सोमवार शाम अपनी बहन की विदाई कराने गए एक युवक को उसके जीजा ने गोली मार दी। साले को गोली मारने के बाद जीजा ने खुद को घर में बंद कर लिया। घायल युवक को अस्पताल ले जाया गया। मौके पर पुलिस बल गेट खोलने का प्रयास कर रही है। पूर्व फौजी की इस हरकत ने आसपास के लोगों को भी सन्न कर दिया। कुछ देर बाद पुलिस अधिकारी भी वहां पहुंच गए।

पुरानी थी अनबन, गेट पर ही किया साले पर फायर : करछना थाना क्षेत्र के ककरम गांव का निवासी संजय शुक्ला पुत्र देवी प्रसाद शुक्ला सेना से रिटायर हुआ है। वह नैनी के कनैला गांव में मकान बनवाकर रहता है। उसकी ससुराल करछना के देवरी गांव में है। संजय और उसके ससुरालियों के बीच किसी बात को लेकर अनबन चल रही थी। सोमवार शाम पांच बजे संजय का साला अभिषेक मिश्रा पुत्र हौसला प्रसाद मिश्रा बहन को मायके के लिए विदा कराने पहुंचा था। दरवाजा खोलते ही संजय शुक्ला ने उस पर फायर कर दिया। गोली अभिषेक के हाथ में लगी, जिससे वह घायल हो गया। वह चीखते हुए दूर भागा।

घर के बाहर मौजूद पुलिस फोर्स

पुलिस पहुंची तो गेट बंद और असलहे के साथ आरोपित घर में बंद : इस बीच वहां भीड़ लगी तो पुलिस को खबर दी गई। गोली मारने की सूचना पर नैनी थाने की पुलिस फोर्स वहां पहुंची। इंस्पेक्टर और दारोगाओं ने घर में दाखिल होने का प्रयास किया तो पता चला गेट बंद है। काफी आवाज देने और खटखटाने पर भी गेट देर शाम तक नहीं खुला। पुलिस छत के रास्ते दाखिल होने की कोशिश में है।

न्यूज झरोखा

जल्द होगा कुन्डा रोडबेज बस अड्डा का कायाकल्प

सांसद विनोद सोनकर ने परिवहन मंत्री से मिलकर दिया पत्र

कुन्डा। कई वर्षों से कुन्डा का रोडबेज बस अड्डा मरम्मत व देखरेख न होने के कारण अपनी बदहाली पर आँसू बहा रहा है। अब जल्द ही इसके हालात बदलने वाले है। कौशाम्बी सांसद विनोद सोनकर के प्रयास से जल्द ही नये कलेवर में रोडबेज बस अड्डा नजर आयेगा। सांसद कौशाम्बी विनोद सोनकर ने मीडिया प्रभारी भूपेन्द्र पाण्डेय ने बताया कि कुन्डा बस अड्डा के सुधार एवं विस्तार हेतु सांसद कौशाम्बी विनोद सोनकर ने सोमवार को प्रदेश सरकार के परिवहन मंत्री दया शंकर सिंह से मिलकर कुन्डा बस अड्डा के सम्बंध में पत्र दिया। मंत्री दया शंकर सिंह ने जल्द बस अड्डा को सुधार एवं विस्तार का आश्वासन दिया।

4 अदद लोहे के बेलन के साथ 2 नफर अभियुक्त गिरफ्तार

बारा। वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक प्रयागराज के अनुपालन में चलाए जा रहे अभियान के तहत पुलिस अधीक्षक यमुनापार क्षेत्राधिकारी बारा विमल किशोर मिश्रा को कुशल नेतृत्व में प्रभारी निरीक्षक बारा कमलेश कुमार उप निरीक्षक राजेश सचान मय हमराह कांस्टेबल दिनेश पाल कांस्टेबल आदित्य गुप्ता के द्वारा तलाश एवं दबिश देने के क्रम में मुखबिर की सूचना पर 2 नफर अभियुक्त गण बलराम बिंद पुत्र कामता प्रसाद बिंद 19 वर्ष विजय पुत्र धीरेंद्र पाल बिंद 20 वर्ष निवासी गण लोह गरा केव टा न थाना बारा जनपद प्रयागराज के कब्जे से 4 अदद लोहे के बेलन के साथ भेलाव तालाब के पास से बरामद किया गया जिसके संबंध में थाना हाजा पर मु आ संख्या 71/2022 धारा 411 भा द वि अभियुक्त के विरुद्ध पंजीकृत कर अभियुक्त गण को माननीय न्यायालय के समक्ष प्रस्तुत किया जा रहा है।

प्रयाग के छात्र ने बढ़ाया अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिता में शहर का मान, 100 मीटर दौड़ में जीता स्वर्ण पदक

नैनी, प्रयागराज। सोरांव तहसील अंतर्गत एक छोटे से गांव सेवइथ के छात्र ने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर 100 मीटर दौड़ में स्वर्ण पदक जीतकर एक बार फिर से शहर का मान देश दुनिया के सामने बढ़ा दिया` मोहम्मद रज्जाक तथा नसीम बानो का पुत्र अब्दुल सत्तार जो की के. वी. एस. इंटर कॉलेज में कक्षा 11 का छात्र है , कुछ दिन पहले ही राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिता में जिसमें सैकड़ों विद्यार्थियों ने भाग लिया था उन सभी को हराते हुए 100 मीटर की दौड़ में जिले का मान बढ़ाते हुए स्वर्ण पदक हासिल किया छात्र ने अपनी सफलता का श्रेय अपने माता-पिता तथा अपने गुरु अली अहमद तथा लाल जी धूरिया को दिया स्वर्ण पदक विजेता अब्दुल सत्तार ने भविष्य में इंडियन आर्मी ज्वाइन करने के विषय में बताया वहीं छात्र जब अपने ननिहाल नैनी स्थित मलारा फाटक के पास पहुंचा तब मोहल्ले वासियों ने भारी उत्साह के साथ छात्र का स्वागत माला फूल तथा मिठाइयों से किया वही इस कामयाबी के बाद छात्र के नाना जग्गू तथा नानी सलमा तथा दोस्त राजेश , विक्की , मोनू तथा जानी ने मिठाइयां बांटकर अपनी खुशियों का इजहार किया।

इलाहाबाद यूनिवर्सिटी में आनलाइन सेमेस्टर परीक्षा के लिए हंगामा, छात्रों ने चार घंटे बंद रखा मेन गेट

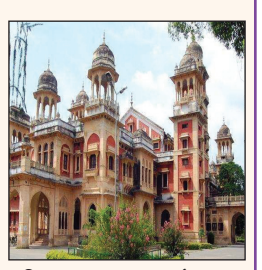

प्रयागराज। इलाहाबाद विश्वविद्यालय के परास्नातक अंतिम वर्ष की सेमेस्टर परीक्षाएं आनलाइन मोड में कराने की मांग को लेकर सोमवार को छात्रों ने हंगामा कर दिया। छात्रों ने तकरीबन चार घंटे तक विश्वविद्यालय का मुख्य प्रवेश द्वार बंद रखा। प्रकरण में चीफ प्राक्टर प्रोफेसर हर्ष कुमार ने एमए अंतिम वर्ष के छात्र दुर्गेश कुमार सिंह को तत्काल प्रभाव से विश्वविद्यालय से निलंबित कर दिया।

तकरीबन चार घंटे तक छात्रों ने बंद रखा विश्वविद्यालय का मुख्य प्रवेश द्वार

छात्रों ने आनलाइन परीक्षा को मांग को लेकर पहले परीक्षा नियंत्रक कार्यालय का घेराव किया। यहां परीक्षा नियंत्रक एके कनौजिया से छात्रों ने बताया कि परास्नातक के छह महीने पाठ्यक्रम को हड़बड़ी में पढ़ाकर व्हाट्सएप ग्रुप के माध्यम से पीडीएफ व नोट्स भेजकर कोरम पूरा किया गया। छात्रनेता अजय पांडेय बागी ने कहा आगामी दिनों में नेट/जेआरएफ, यूपीपीसीएस, बीपीएससी, एनटीपीसी एवं तमाम प्रतियोगी परीक्षाएं होने वाली है। ऐसे में छात्र परास्नातक की परीक्षाओं की तैयारी करें कि प्रतियोगी परीक्षाओं की।

जमीनी विवाद को लेकर दो पक्षों के बीच हुई मारपीट में इलाज के दौरान एक की मौत

पुलिस के सामने हुई थी मारपीट, जमीन के नाप ने को लेकर उत्पन्न हुआ था विवाद

अखंड भारत संदेश

हंडिया। गंगापार के हंडिया इलाके में भूमि विवाद में रविवार दोपहर पुलिस के सामने हुई मारपीट में जख्मी रणजीत उर्फ दारा की सोमवार सुबह मौत हो गई। इससे परिवार में कोहराम मच गया। लोगो में इस बात का आक्रोश है कि पुलिस के सामने हमला किया गया। पुलिस रिपोर्ट दर्ज कर जांच कर रही है।

जमीन की नापजोख के दौरान हो गया टकराव

यह घटना हंडिया थाना क्षेत्र के धनजैया गांव में हुई। बताया जाता है कि यहां रहने वाले पंधारी लाल यादव व पाले यादव के जमीन पर रास्ता बनाने को लेकर विवाद चल रहा था। एसडीएम हंडिया के निर्देश पर रविवार दोपहर पुलिस व राजस्वकर्मी जमीन की नापजोख कराने के लिए पहुंचे थे। आरोप है कि पाले यादव पक्ष के लोगों ने नापजोख में व्यवधान उत्पन्न किया, जिसका विरोध पंधारी के बेटे रणजीत समेत अन्य ने किया। इसको लेकर विवाद शुरू हो गया और देखते ही देखते पुलिस के सामने मारपीट होने लगी। लाठी, डंडे से हुए हमले में रणजीत, सूर्यभान और निशा जख्मी हो गईं। इससे वहां खलबली मच गई।

पुलिस ने पहुंचाया अस्पताल जहां टूटा दम

कुछ देर बाद थाने से पुलिस पहुंची और हीलाहवाली करते हुए घायलों को अस्पताल भिजवाया। इलाज के दौरान सोमवार सुबह रणजीत की मौत हो गई। जबकि अन्य घायलों का इलाज चल रहा है। उधर, मौत के बाद गांव में एसपी गंगापार समेत अन्य पुलिस अधिकारी मौके पर पहुंचे और नाराज लोगों को शांत कराया। रणजीत तीन भाइयों में छोटा था। उसके तीन बच्चे हैं। वह मजदूरी करके परिवार का भरण पोषण करता था। एसपी गंगापार अभिषेक अग्रवाल का कहना है कि मारपीट का मुकदमा दर्ज रविवार को किया गया था। उसे उचित धाराओं में तरमीम कर आवश्यक कार्रवाई की जाएगी।

सड़कों पर नहीं होगी नमाज, सुरक्षा के कड़े इंतजाम

प्रयागराज। अलविदा की नमाज की तरह ही ईद-उल-फितर की नमाज भी सड़कों पर नहीं होगी। पुलिस और प्रशासन के अधिकारियों ने सड़कों पर नमाज अदा करने की इजाजत नहीं दी है। अफसरों ने कमेटियों, मुतवल्लियों, उलेमा और इमामों से कहा है कि वह मस्जिदों में ही नमाज पढ़ाएं। सोमवार को एसएसपी अजय कुमार ने कहा कि कहीं भी सड़कों पर रास्ता बंद कर ईद की नमाज नहीं होगी। ईदगाह और मस्जिदों में ही नमाज पढ़ी जाए। अलविदा की नमाज मस्जिदों में अदा कर अच्छा पैगाम दिया गया था। अब ईद की नमाज भी मस्जिदों में ही पढ़ें। यदि जगह कम पड़ जाए तो घरों में नमाज पढ़ें। ईद के मद्?देनजर शहर में सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम किए गए हैं। खासकर पुराने शहर में पुलिस और आरएएफ की तैनाती की गई है। चांद रात पर पुलिस अधिकारियों ने पुराने शहर में रूट मार्च किया। सुरक्षा के मद्देनजर सभी मस्जिदों के आसपास पुलिस तैनात की गई है।

मिलीजुली आबादी वाले इलाकों में थाना प्रभारी और सीओ गश्त कर रहे हैं। नमाज के दौरान पुलिस अधिकारी क्षेत्र का जायजा लेते रहेंगे। खुल्दाबाद और कोतवाली थानों में अतिरिक्त फोर्स बुलाई गई है। ईदगाह के पास मंगलवार को भारी पुलिस बल की तैनाती रहेगी। एसएसपी अजय कुमार ने कहा कि सड़कों पर नमाज नहीं होगी।

पेड़ पर लटकता मिला युवक का शव, हत्या की आशंका

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। सोमवार को पेड़ से फांसी पर लटकता युवक का शव मिला। घटना धूमनगंज थाना क्षेत्र का है। यहां सुनसान इलाके में सोमवार को पेड़ पर 30 वर्षीय युवक दशरथ यादव का शव लटकता पाया गया। पुलिस इसे आत्महत्या बता रही है तो वहीं मृतक के परिजन हत्या का आरोप लगा रहे हैं।परिवार वालों का कहना है कि हत्या करके शव को फंदे से लटकाया गया है। पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। मामले की छानबीन चल रही है। पुलिस का कहना है कि पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट में ही यह स्पष्ट हो पाएगा कि युवक ने आत्महत्या की है या उसकी हत्या की गई है।

पुलिस हत्या और आत्महत्या में उलझी

दरअसल, बीते दिनों कुछ ऐसी घटनाएं सामने आई हैं जिसमें अपराधी हत्या करने के बाद आत्महत्या का रूप देने के लिए शव को फांसी के फंदे पर लटका देते हैं। धूमनगंज में सोमवार को पेड़ पर फंदे से लटकते शव को देखकर यही आशंका जाहिर की जा रही है कि युवक ने आत्महत्या नहीं की बल्कि उसकी हत्या कर दी गई है। बताते हैं कि जिस पेड पर युवक का शव मिला है वह काफी सुनसान जगह पर स्थित है। इसलिए अपराधी हत्या करने के बाद सुनसान जगह पर शव का फंदे पर टांग दिए। ऐसे में पुलिस भी हत्या और आत्महत्या को लेकर उलझी है। पोस्टमार्टम के बाद ही कुछ भी स्पष्ट हो पाएगा।

आरक्षी निलंबित, सीओ तृतीय के खिलाफ जांच शुरू

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। एसएसपी अजय कुमार ने सीओ तृतीय के कार्यालय में तैनात सहायक जांच अधिकारी आरक्षी विनोद कुमार यादव को सोमवार को निलंबित कर दिया। साथ ही जांच में लापरवाही बरतने समेत अन्य खामियां पाए जाने पर सीओ तृतीय संत लाल सरोज के खिलाफ भी जांच शुरू करा दी है। 2011 बैच के आरक्षी विनोद कुमार यादव पर गंभीर लापरवाही के आरोप हैं। आजमगढ़ का रहने वाला आरक्षी जांच में लापरवाही बरत रहा था। एसएसपी ने औचक निरीक्षण के दौरान खामियां पाईं थीं। घोर लापरवाहियों के साथ ही जांचों में ध्यान न देने, रजिस्टर पूरा न करने पर उसे निलंबित किया गया। आरोप है कि सीओ ने भी कई जांचों का अवलोकन नहीं किया। जो जांच आवंटित की गई थी आरक्षी ने 14 दिनों तक उसे देखा तक नहीं। सीओ ने भी इसकी मानीटरिंग नहीं की। ऐसे में प्रथम दृष्टया सीओ की शिथिल कार्यशैली प्रदर्शित हुई। ऑफिस पर नियंत्रण ढीला पाए जाने पर उनके खिलाफ जांच शुरू कराई गई। एसएसपी अजय कुमार का कहना है कि सरकारी कार्यों में जान बूझकर लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी। जनता से खराब व्यवहार करने वाले, भ्रष्टाचारी, कदाचारी तथा अपराधियों, दबंगों, दलालों से साठ-गांठ रखने वाले पुलिसकर्मियों को किसी भी सूरत में बख़्शा नहीं जाएगा।

लालगोपालगंज चेयरमैन बाइज्जत बरी, आज परिवार में ईद का मनेगा जश्न

पाक्सो मामले में जेल से रिहाई के बाद चेयरमैन मुख्तार अहमद परिवार के साथ आज मनाएंगे ईद, नगर पंचायत अध्यक्ष कस्बा की ईदगाह में अदा करेंगे ईद-उल-फित्र की नमाज

अखंड भारत संदेश

लालगोपालगंज। जेल में बंद रहे लालगोपालगंज अध्यक्ष की रिहाई के बाद परिवार में जश्न का माहौल है। पाक्सो जैसे गंभीर आरोप में जेल की सलाखों के पीछे रहे नगर पंचायत अध्यक्ष को न्यायालय ने जहां आरोप मुक्त कर दिया। वहीं दूसरी ओर ईद की खुशियां परिवार के लिए दोगुनी हो गईं। चेयरमैन आज परिवार के साथ ईद का जश्न मनाएंगे। लाल गोपालगंज नगर पंचायत अध्यक्ष पर नवाबगंज थाना में पाक्सो जैसे गंभीर आरोप का केस दर्ज किया गया था। जिसके इल्जाम में उन्हें काफी दिन तक जेल के सलाखों के पीछे रहना पड़ा। मुकदमा से संबंधित न्यायालय में केस चल रहा था। बीते शनिवार को न्यायालय ने नगर पंचायत चेयरमैन मुख्तार अहमद को आरोप मुक्त करते हुए भाई इज्जत बरी कर दिया। जिसकी सूचना कस्बा में मिलते ही लोगों में खुशी की जहां लहर दौड़ गई। वहीं परिवार खुशियों के माहौल में डूब गया। रविवार को चेयरमैन जब घर पहुंचे तो कस्बाइयों के मुलाकात करने का तांता लग गया। लोग फूलों की माला पहनाकर उन्हें बधाई देते रहे। रमजान उल मुबारक के मुकद्दस महीने के 30 रोजा मुकम्मल होने के बाद आज मंगलवार को ईद मनाई जाएगी। परिवार से बिछड़े चेयरमैन मुख्तार अहमद आज अपने परिवार के साथ ईद मनाएंगे। कस्बा की ईदगाह में ईद उल फित्र की नमाज अदा करेंगे। जेल से रिहाई के बाद परिवार के लिए ईद की खुशियां दोगुना साबित हो रही हैं।

लालगोपालगंज चेयरमैन मुख्तार अहमद को बधाई देते लोग।

कालिंदीपुरम कॉलोनी का ट्यूबवेल जला, पानी को तरस रहे कॉलोनी वासी

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। गर्मी बढ़ने के साथ शहर भर में जल संकट गहराता जा रहा है। कहीं दूषित पानी से लोग परेशान हैं तो कहीं पर लो प्रेशर की समस्या से पानी खरीद कर पीने के लिए मजबूर हैं। ऐसी ही समस्या से सोमवार को कालिंदीपुरम कालोनी के हजारों लोगों को जूझना पड़ा।

सुबह पांच बजे जल गया था ट्यूबवेल, नहीं हो सका दुरुस्त :

कालिंदीपुरम कालोनी वार्ड 44 में सोमवार सवेरे टयूबवेल जल जाने से 500 से अधिक घरों में जल संकट पैदा हो गया। कालिंदीपुरम में महावीर स्कूल के पास 41 हार्स पावर का टयूबवेल लगा है। टयूबवेल सोमवार की सुबह पांच बजे जल गया। पानी की समस्या क्षेत्रीय लोगों में होने लगी। जलकल को वैकल्पिक रूप से टैंकर का इंतजाम करने के लिए कहा गया, लेकिन एक भी टैंकर नहीं आया। मजबूरी में लोगों को पीने के लिए पानी खरीदना पड़ा।

पानी का टैंकर भी इस क्षेत्र में नहीं कराया गया उपलब्ध :

स्थानीय निवासी राजेश कश्यप, मोहन सोनकर, राधादेवी ने बताया कि मोहल्ले में अक्सर पानी की समस्या बनी रहती है। वहीं, इस समस्या पर पार्षद अखिलेश सिंह ने बताया कि जलकल के जेई को सूचना दी गई थी इसके बावजूद न तो टयूबवेल बना और न ही टैंकर का इंतजाम किया गया।

एक सप्ताह से खराब है टयूबवेल :

यादवपुर नीवां का टयूबेल पिछले एक सप्ताह से खराब है, जिससे क्षेत्रीय लोगों को पीने का पानी नहीं मिल पा रहा है। क्षेत्र के सुरेंद्र कुमार, राधेश्याम धुरिया और मनोज चतुर्वेदी ने बताया कि जलकल विभाग को सूचना दी गई है इसके बावजूद टयूबवेल नहीं ठीक किया जा रहा है। बताया कि अक्सर यहां पर लो प्रेशर की समस्या बनी रहती है।

गर्मियों में भी लहलहा रही है धान की नर्सरी

अखंड भारत संदेश

सहसों। अन्नदाताओं की कर्म और पूंजी खेती है जिससे लोगों का पेट भरता है। हमारे देश का किसान कड़ी धूप, गर्मी, बरसात सभी मौसम में दिन रात मेहनत करके विभिन्न प्रकार के फसल का उत्पादन कर सभी का पेट भरता है। हमारे देश का अन्नदाता जागरूक होकर आधुनिक खेती के साथ वर्ष भर विभिन्न प्रकार की फसलें तथा सब्जियों का उत्पादन करने लगा है। इसी क्रम में विकास खण्ड सहसों के सेमरी गांव में प्रगतिशील एवं जागरूक किसान आनन्द कुमार पटेल ने वर्ष में दो बार धान की फसल तथा एक बार गेहूं की फसल लेने का निश्चय किया। उन्होंने अपनी मेहनत पर भरोसा करते हुए 20 मार्च को धान की नर्सरी डाल दी है। लगभग 1 माह बाद तैयार नर्सरी को 11 अप्रैल को लगभग एक बीघे खेत में परिवार समेत मिलकर धान की रोपाई किया। इस समय धान की लहराती फसल को देखने के लिए आसपास के कई गांव के किसान प्रतिदिन देखने आते हैं तथा किसान आनन्द पटेल से जानकारी प्राप्त करते हैं। इस संबंध में किसान ने बताया कि गर्मी के मौसम में खेत खाली रहता था कोई अन्य फसल नहीं ले रहे थे। मन में धान की फसल उत्पादन करने का विचार आने पर तत्काल प्रयागराज से कम पानी वाला प्रजाति मोटे धान को लाकर नर्सरी डाल दी। लगभग एक माह में नर्सरी तैयार हो गई। तत्पश्चात खेत की तैयारी करने के पश्चात परिजनों के साथ धान की रोपाई गत 11 अप्रैल को कर दी। धान की प्रजाति में पानी सामान्य रूप से लग रहा है। फिर भी चिलचिलाती धूप व गर्मी के कारण सिंचाई की अधिक आवश्यकता है। रोपाई के बाद धान की अच्छी फसल दिखाई दे रही है। उम्मीद है कि यह नब्बे दिन की प्रजाति होने के कारण जुलाई तक फसल की कटाई की संभावना है। किसान आनंद पटेल ने बताया कि जुलाई में बरसात होने पर धान की बालियों को काट लेंगे तथा पुआल को खेत में ही छोड़कर जैविक विधि अपनाकर कार्बनिक खाद बनाएंगे। जिससे अगले फसल के लिए यह कार्बनिक खाद खेत की मिट्टी की उर्वरा शक्ति के साथ स्वस्थ पौधे एवं अच्छा उत्पादन भी देगा। आनन्द पटेल ने बताया यदि यह सफल अच्छा रहा तो आने वाले समय में और अधिक क्षेत्रफल में इसका रोपाई किया जायगा।

परशुराम जयंती पर शोभायात्रा आज

झूंसी। क्षेत्र के भगवान परशुराम अखाड़ा प्रांगण में सोमवार को भारतीय जनता पार्टी गंगापार की बैठक हुई। जिसमें भगवान परशुराम जयंती पर आयोजित होने वाली शोभायात्रा की रूपरेखा तैयार की गई। मंगलवार को अक्षय तृतीया को भगवान परशुराम जयंती के पावन दिवस पर दिन में दस बजे से एक शोभायात्रा चाणक्य पीठाधीश्वर सुदर्शन जी महाराज के आश्रम से निकलेगी जो झूँसी के मठ मंदिरो से होते हुए पुनः सुदर्शन जी के आश्रम पर ही समाप्त होगी। जिसके बाद आश्रम में महा प्रसाद का वितरण किया जाएगा यह जानकारी किसान मोर्चा गंगापार के जिला अध्यक्ष लक्ष्मीकांत उपाध्याय ने दी।

सूचना

मैं कंधई लाल सुत श्रीनाथ पटेल निवासी बसहीपुर मौहारी थाना कुन्डा जनपद प्रतापगढ़। मेरी पहली पत्नी से एक पुत्र व एक पुत्री है। दूसरी पत्नी से एक पुत्री है। मेरी पहली पत्नी का पुत्र मिथिलेश कुमार का चाल चलन ठीक नहीं है। इनका असमाजिक तत्वों से सम्बंध है। मेरे कहने सुनने में नही है। ऐसी स्थिति में आज से इन्हें अपने समस्त चल अचल संपत्ति से बेदखल करता हूँ। आज से इनका मुझसे कोई वास्ता व सरोकार नहीं रहेगा।

प्रतापगढ़ संदेश

ईद की तैयारी को लेकर बाजारों में उमड़ी भीड़

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। रमजान का पाक महीना आज समाप्त हो गया। तीन मई को ईद है। इसके एक दिन पहले तक रोजेदार व उनके परिजन बाजारों में जहां जोरदार तैयारी करते दिखाई दिये, वहीं मस्जिदों व ईदगाह में साफ-सफाई का कार्य होता रहा।

सोमवार को प्रातः तेज हवा चलने से ईदगाह व जगह-जगह गंदगी हो गई थी। वहां आज नगर पालिका के 40 कर्मचारी सफाई में जुटकर दिन भर लगे रहे। यह जानकारी देते हुए नगर पालिका के सफाई निरीक्षक संतोष कुमार सिंह ने बताया कि नगर पालिकाध्यक्षा प्रेमलता सिंह व अधिशाषी अधिकारी मुदित सिंह के निर्देशन में वह स्वयं तथा सफाई लिपिक प्रशांत सिंह के साथ ईदगाह व मस्जिदों के आसपास सफाई कार्य की निगरानी करते रहे। बाजारों में भीड़ इतनी हो गई थी कि मुख्य सड़कों पर जाम का नजारा देखने को मिला। नगर में बाबागंज से चैक, चैक से कचहरी मार्ग में जाम लगा रहा। कपड़े व दजी की दुकानों पर लोगों की भीड़ दिखाई दी। सभी नया वस्त्र खरीदने व सिलकर तैयार कपड़े को लेने के लिये दर्जी के यहां लाइन लगाए हुए थे। बता दें कि ईद-उल-फितर पर जहां बड़ी संख्या में मुसलमान भाई नये वस्त्र पहनकर मस्जिदों व ईदगाह में ईद की नमाज अदा कर एक दूसरे को मुबारकबाद देते हैं और इसमें हिन्दू समाज के लोग भी उन्हें मुबारकबाद देने ईदगाह व उनके घरों पर पहुंचते हैं। प्रतापगढ़ में साम्प्रदायिक सौहार्द का इतिहास रहा है। यहां साम्प्रदायिक दंगे को लोग नाम तक नहीं जानते।

ईदगाह में साफ-सफाई का निरीक्षण करते सफाई निरीक्षक संतोष सिंह व शहर में लगा जाम ।

ईदगाह व मस्जिदों की हुई साफ-सफाई

(ईद का नमाज का समय)

अबुल कलाम मस्जिद :	6:00 बजे
शेख जी मस्जिद :	7:00 बजे
जामा मस्जिद :	8:30 बजे
मस्जिद गुलशने मदीना:	8:30 बजे
चांद तारा मस्जिद :	7:30 बजे
कचहरी मस्जिद:	7:45 बजे
बेगम वार्ड मस्जिद :	9:00 बजे
ईदगाह :	8:30 बजे

इंटर हिन्दी का पेपर भी आधा दर्जन केन्द्रों पर सकुशल सम्पन्न

न्यू एंजिल्स में छह परीक्षार्थी रहे अनुपस्थित

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। सीबीएसई की आज हिन्दी की परीक्षा थी जिसमें जिले के छह परीक्षा केन्द्रों पर परीक्षार्थियों ने उत्साह से भाग लिया। आज की परीक्षा में कुछ लोग उहापोह में थे कि यदि ईद दो मई को होती तो शायद सीबीएसई को यह परीक्षा टालनी पड़ती लेकिन ईद तीन मई को मनाई जाएगी, इससे परीक्षार्थियों की आज की परीक्षा में कोई बाधा नहीं आई।

आज दोपहर तक धूप का असर भी कम रहा। परीक्षार्थियों को गर्मी से राहत सुबह के समय मिली। परीक्षा देकर निकले बच्चे आज भी खुश दिखाई दिये। नगर के कटरा रोड स्थित न्यू एंजिल्स सीनियर सेकेण्ड्री स्कूल में इंटर हिन्दी में 260 परीक्षार्थी पंजीकृत थे, जिसमें छह परीक्षार्थी अनुपस्थित हो गये।

254 परीक्षार्थियों ने आज हिन्दी की परीक्षा न्यू एंजिल्स सीनियर सेकेण्ड्री स्कूल में दी। यह जानकारी स्कूल की चेयरपर्सन डा0 शाहिदा ने देते हुए बताया कि शांतिपूर्ण माहौल में परीक्षार्थियों ने परीक्षा दी है। इसी प्रकार अन्य पांच परीक्षा केन्द्रों जवाहर नवोदय, डाल्फिन पब्लिक स्कूल, नागेश दत्त पब्लिक स्कूल, संगम इंटरनेशनल व संस्कार ग्लोबल में परीक्षार्थियों ने हिन्दी की परीक्षा दी।

न्यू एंजिल्स स्कूल से परीक्षा देकर बाहर निकलते परीक्षार्थी।

वृद्ध की दिल्ली शहर में डम्फर की टक्कर से हुई मौत

अखंड भारत संदेश

बाघराय, प्रतापगढ़। बाघराय थाना क्षेत्र के भाव दुर्ग सराय गांव निवासी समय लाल यादव (60) वर्ष पुत्र बैजनाथ यादव दिल्ली शहर में रहकर एक प्राइवेट फैक्ट्री में काम करते थे सेवानिवृत्त होने के बाद अपने पैतृक गांव भाव आए थे जहां लगभग एक वर्ष बीत जाने के बाद अपने पुराने मित्रों से मिलने की इच्छा हुई तो 30 अप्रैल शाम ट्रेन से दिल्ली शहर के लिए रवाना हो गए। एक मई को जैसे ही रेलवे स्टेशन पर उतरे तो अपने परिचित दुकानदार से साइकिल लेकर अपने कमरे पर जा रहे थे वैसे ही दिल्ली में एक डम्फर चालक में जोरदार टक्कर मार दी जिससे साइकिल टूट गई मौके पर ही वृद्ध समय लाल की मौत हो गई मित्रता में जान भी चली गई मित्र से मुलाकात भी नहीं हुई घटना की जानकारी मिलने पर शहर के लोग पहुंच गए जानकारी होने पर सीधे हैदराबाद से बेटा सुभाष यादव भी दिल्ली आ गया मृतक का शव बाघराय भाव लाया जा रहा है समय लाल की मौत पर प्रधान पति राजेश यादव ने गहरा दुख जताया है।

दुष्कर्म के वांछित अभियुक्तों को पुलिस ने दबोचा

परियावां, प्रतापगढ़। पुलिस अधीक्षक के कड़े तेवर को देखते हुए कोतवाली कुण्डा उप निरी0 शिव प्रसाद रावत अपने हम राही के साथ क्षेत्र में वांछित, वारण्टी अभियुक्त/चेकिंग के दौरान मुखबिर खास की सूचना पर थाना स्थानीय के मु0अ0सं0- 34/2022 धारा 376डी, 420, 506 भादवि व धारा 3(1)द, 3(1)ध, 3(2)5, 3(2)5ए एससी/एसटी एक्ट से संबंधित दो वांछित अभियुक्त राहुल यादव पुत्र विजय शंकर यादव निवासी तहसील परिसर कुण्डा से व रंजीत मौर्या पुत्र राजबहादुर मौर्या निवासी तिलौरी विक्रमपुर थाना कुण्डा जनपद प्रतापगढ़ को थाना क्षेत्र के तिलौरी मोड़ के पास से गिरफ्तार कर लिखा पढ़ी करके न्यायालय भेजा।

संस्कार ग्लोबल स्कूल में बच्चों ने मनाया ईद का उत्सव

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। संस्कार ग्लोबल स्कूल टेउंगा में ईद का उत्सव कार्यक्रम आयोजित किया गया। जिसमें बच्चों ने आकर्षक प्रस्तुतियों से मनमोह लिया। बच्चों ने ईदी मिलेगी, ईद मुबारक कौव्वाली, हामिद का चिमटा नामक नाटक सहित विभिन्न प्रस्तुतियां दी। तृषा त्रिपाठी, वर्तिका सिंह, रूबल यादव, आयशा शेख, जसलीन कौर, अंशिका सिंह, नैंसी सिंह, सिमरन मतीन, इरा शुक्ला, सूर्य प्रताप, रौनक शर्मा, कृतिका शुक्ला की प्रस्तुति खूब सराही गयी। विभिन्न वेशभूषा में सजे बच्चे अपनी ओर आकर्षित कर रहे थे। कार्यक्रम का शुभारम्भ करते हुए निदेशक संजय सिंह ने कहा कि ईद का त्योहार आपसी भाईचारे को बढ़ावा देता है। प्रिंसिपल स्मृति सिंह ने कहा कि स्कूल एक ऐसा स्थान है जहां पर किसी भी धर्म के लिए कोई भेदभाव या कोई छुआछूत नहीं होता। यहां पर सभी धर्म एक समान है तथा सभी बच्चों को यह शिक्षा दी जाती है कि सभी धर्मों का आदर करें। इस अवसर पर उमा सिंह, अशोक त्रिपाठी, दया पुष्पजीवी, गुंजन सिन्हा, रानू सिंह, संध्या शुक्ला, मो.रईश, विनोद मौर्य, विकास सिंह आदि उपस्थित रहे।

ईद मुबारक कौव्वाली गाते संस्कार ग्लोबल स्कूल के बच्चे।

जल्द होगा कुण्डा रोडबेज बस अड्डा का कायाकल्प

अखंड भारत संदेश

कुण्डा। कई वर्षों से कुण्डा का रोडबेज बस अड्डा मरम्मत व देखरेख न होने के कारण अपनी बदहाली पर आँसू बहा रहा है। अब जल्द ही इसके हालात बदलने वाले है। कौशाम्बी सांसद विनोद सोनकर के प्रयास से जल्द ही नये कलेवर में रोडबेज बस अड्डा नजर आयेगा। सांसद कौशाम्बी विनोद सोनकर के मीडिया प्रभारी भूपेन्द्र पाण्डेय ने बताया कि कुन्डा बस अड्डा के सुधार एवं विस्तार हेतु सांसद कौशाम्बी विनोद सोनकर ने सोमवार को प्रदेश सरकार के परिवहन मंत्री दया शंकर सिंह से मिलकर कुन्डा बस अड्डा के सम्बंध में पत्र दिया। मंत्री दया शंकर सिंह ने जल्द बस अड्डा को सुधार एवं विस्तार का आश्वासन दिया।

पुलिस पर हमला एवं नोकझोंक करने के मामले में 35 पर रिपोर्ट दर्ज

बाघराय, प्रतापगढ़। बाघराय के बरबसपुर गांव में बीते रविवार की दोपहर पुलिस चैकी प्रभारी सूर्य प्रताप सिंह की टीम जांच करने गांव गई थी। इसी बीच ग्रामीणों का गुस्सा फूट पड़ा नोकझोंक हुई एवं पुलिस पार्टी पर हमला भी हुआ किंतु पीएसी बल के आ जाने से कोई हताहत नहीं हुआ। चैकी प्रभारी शकरदहा सूर्यप्रतापसिंह की तहरीर पर पुलिस ने गांव के छंगू, सुरेश निशा देवी गुड़िया देवी प्रेमा देवी रेखा देवी मुनेश्वर राजेश गुड्डू सचिन त्रिभुवन समेत 35 लोगों के विरुद्ध नामजद एवं 80 अज्ञात लोगों के विरुद्ध 7 सीयल के तहत मुकदमा पंजीकृत कर मामले की जांच तेज कर दी है ऐसे में अब गांव का हर व्यक्ति अपने का बचाव करने में जुट गया है।

समाजसेविका की पुण्यतिथि पर पुष्पांजलि अर्पित करते प्रमोद तिवारी

बिजली संकट के चलते हो रही त्राहि के लिए मोदी सरकार जिम्मेदारः प्रमोद तिवारी

समाजसेविका की पुण्यतिथि पर दी पुष्पांजलि

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। केन्द्रीय कांग्रेस वर्किंग कमेटी के सदस्य एवं यूपी आउटरीच एण्ड को-आर्डिनेशन कमेटी के प्रभारी प्रमोद तिवारी ने बढ़ती मंहगाई की लगातार भयावह स्थिति को अत्यन्त चिन्ताजनक करार दिया है। श्री तिवारी के मुताबिक थोक मंहगाई से घरेलू गृहस्थी से जुडे. रोजमर्रा के जरूरी खाद्य पदार्थो तक की कीमत ऊंची दरों पर आ गयी है। सोमवार को कैम्प कार्यालय पर मीडिया से वार्ता के दौरान प्रमोद तिवारी ने कहा कि मंहगाई ने जनता की कमर तोड़कर रख दी है। वहीं इसके ठीक विपरीत मोदी सरकार ने जबरिया जीएसटी कानून थोपकर सिर्फ जीएसटी से ही माह भर में 1.68 लाख करोड़ के खुद के मुनाफे से अपनी झोली भर रही है। उन्होनें उत्तर प्रदेश मे भी बिजली संकट के साथ मंहगाई का राष्ट्रीय औसत लगातार बढ़ने को भी बीजेपी का जनता के साथ जनादेश के नाम पर ताजा छलावा करार दिया है। इसके बाद प्रमोद तिवारी ने नगर स्थित राम अंजोर मिश्र इण्टर कालेज में समाजसेविका एवं पूर्व प्रधानाचार्या रेणुका पाण्डेय की स्मृति मे आयोजित कार्यक्रम मे शामिल हुये। कार्यक्रम का संयोजन पूर्व प्राचार्य दयाशंकर पाण्डेय ने किया। इस मौके पर सांगीपुर प्रमुख अशोक सिंह, प्रतिनिधि भगवती प्रसाद तिवारी, मीडिया प्रभारी ज्ञानप्रकाश शुक्ल, चेयरपर्सन प्रतिनिधि संतोष द्विवेदी आदि मौजूद रहे।

दुकानदार पर आरोपियों ने झोंका फायरिंग, पुलिस मामले की जांच में जुटी

अखंड भारत संदेश

पट्टी, प्रतापगढ़। दो दिन पहले कपड़ा खरीदते समय कहासुनी होने पर दुकानदार को आरोपियों ने सोमवार की दोपहर दुकान पर बाइक से पहुंचकर असलहे से फायर झोंक दिया, जिससे दुकानदार बाल-बाल बच गया। आरोपी वहां से भाग निकले। पुलिस चैकी से महज तीन सौ मीटर दूर हुई वारदात के बाद कई दुकानदार दुकान बंद कर दिए। वही पीड़ित दुकानदार ने पुलिस को शिकायती पत्र देकर मामले में इंसाफ की गुहार लगाई है।

पट्टी तहसील क्षेत्र के आसपुर देवसरा थानान्तर्गत क्षेत्र के सैफाबाद बाजार में अपराध की रोकथाम के लिए पुलिस चैकी का निर्माण किया गया। चैकी से महज तीन सौ मीटर दूर हर्रईपट्टी गांव का रहने वाला अमित श्रीवास्तव कपड़े की दुकान खोल रखा है। पुलिस को शिकायती पत्र देकर उसने बताया कि दो दिन पहले उसकी दुकान पर पड़ोसी गांव के दो लोग पहुंचे और कपड़ा खरीदने लगे। दाम कम कराने को लेकर दुकानदार और दोनों के बीच में कहासुनी हुई, जिसमें धमकी देते हुए आरोपी वहां से चला गया। पीड़ित दुकानदार अमित का आरोप है कि सोमवार की दोपहर मोटरसाइकिल पर सवार दो व्यक्ति उसके दुकान के सामने पहुंचे और मां बहन की गालियां देने लगे। पीड़ित ने इसका जब विरोध किया तो उसमें से एक व्यक्ति ने ललकारते हुए अवैध असलहे से अमित के ऊपर फायर कर दिया। अमित वहां से नीचे झुक जाने के कारण गोली दुकान में रखे काउंटर में जाकर लगी। उसके बाद आरोपी वहां से फरार हो गए। फायर की आवाज सुनकर आसपास के लोग भी दौड़े तो पीड़ित सैफाबाद चैकी पहुंचा और मामले में तहरीर देकर आरोपी युवकों पर कानूनी कार्रवाई की मांग की है। पुलिस शिकायत पत्र लेने के बाद मामले की जांच में जुटी हुई है।

व्यापारी ने फंदा लगाकर की आत्महत्या, कोहराम

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। मानसिक तनाव के चलते युवा व्यापारी ने फांसी का फंदा लगाकर आत्महत्या कर लिया। इसके चलते मृतक के परिजनों मे कोहराम मच गया। सांगीपुर थाना के देउम पश्चिम निवासी विश्वनाथ गिरि का पुत्र प्रमोद कुमार गिरि (30) ने रविवार की रात लगभग ग्यारह बजे कमरे में छत के चूले से साड़ी का फंदा बनाकर झूल गया। युवक की मौत हो गयी। सोमवार की सुबह परिजनों मे प्रमोद को फांसी के फंदे से लटकता देखा तो आवाक रह गये। चीख पुकार पर अगल बगल के लोग पहुंचे। इधर सूचना मिलते ही सांगीपुर पुलिस भी मौके पर पहुंच गयी। पुलिस ने ग्रामीणों की मदद से शव को नीचे उतरवाया। पंचनामा कर शव पीएम के लिए जिला मुख्यालय भेजवाया गया। सूत्रों के मुताबिक मृतक का अपनी पत्नी से इधर विवाद चल रहा था। पत्नी द्वारा कोर्ट में मामला दायर करने से हाल ही में उसे अदालती नोटिस मिली थी। इसके चलते मृतक परेशान हो उठा था। पारिवारिक सूत्रों के मुताबिक मृतक लालगंज कोतवाली के सगरा सुंदरपुर बाजार में चाट का ठेला लगाकर जीविकोपार्जन किया करता था। एसओ जितेन्द्र सिंह का कहना है कि तहरीर मिली तो जांच कर कार्रवाई की जाएगी।

बिना किसी की तैनाती के ही शिक्षक का हुआ तबादला

मधुकरपुर पू०म०विद्यालय में लगा ताला, दर्जनों विद्यार्थियों का चैपट हो गया भविष्य

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। बिना किसी शिक्षक की तैनाती के ही विद्यालय मे तैनात गुरू जी का विभाग ने तबादला करके दर्जनों विद्यार्थियों को दर-दर भटकने के लिए मजबूर कर दिया। अब जब शिक्षा विभाग ही ऐसे गैर जिम्मेदाराना कार्य करेगा तो औरों से क्या उम्मीद करें? बेसिक शिक्षा विभाग की इसे लापरवाही कहे या फिर मनमानी।

स्थानीय विकास खण्ड के मधुकरपुर में लगभग पन्द्रह वर्ष पूर्व बच्चों को अच्छी शिक्षा मुहैया कराने के लिए सरकार ने लाखों रु० खर्च करके पू०म०विद्यालय का निमार्ण कराया था। ग्रामीणों की माने तो विद्यालय निमार्ण में ही गुणवत्ता में जमकर धांधली की गई थी। भवन निमार्ण के बाद विभाग इस कदर लापरवाही किया कि कभी शिक्षकों की तैनाती फिर तबादला, इस तरह बच्चे कभी इस स्कूल में तो कभी उस स्कूल में भटकते रहे। यही नही ग्रामीणों का कहना है कि कई वर्ष तो स्कूल को महज कागजी कोरम पर चलाया गया। वहीं ग्रामीणों के काफी प्रयास के बाद विभाग ने तीन वर्ष पूर्व अमित नाम के शिक्षक की तैनाती की। शिक्षक ने मेहनत करके लगभग चार दर्जन विद्यार्थियों का दाखिला किया।

उसके बाद लोगो का विश्वास भी जागा कि अब स्कूल सुचारू रूप से चलेगा अब अधर में अभिभावकों को भटकना नही पड़ेगा।लेकिन विभाग ने बिना किसी शिक्षक को तैनात किए ही गुरू जी का दो वर्ष पूर्व दबादला कर दिया। उसके बाद दाखिल बच्चों को न ही किसी विद्यालय से संबद्ध किया और न ही उनकी सुध ली। अब चार दर्जन बच्चे कहां जाए।अभिभावकों ने उक्त मामले की शिकायत शिक्षा विभाग के अधिकारियों से की लेकिन कोई सुनवाई नही हुई।अभिभावकों ने निराश होकर बच्चों का दाखिला गैर सरकारी स्कूलों में कराया। दो वर्षों से विद्यालय बंद पड़ा है विभाग सब जानते हुए भी लापरवाह बना हुआ है। विद्यालय संचालन हेतु प्रधान देवेन्द्र सिहं ने बीएसए व खण्ड शिक्षाधिकारी से कई बार शिकायत की लेकिन विभाग समस्या की ओर सुनने को तैयार नही है। इस संबध में बीएसए ने बताया ने बताया कि उसको हम देखवाते हैं।

मूल्यांकन से गायब रहे 706 परीक्षक व 72 डिप्टी हेड

डीआईओएस ने वेतन रोकने का दिया निर्देश

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। जिले के चार विद्यालयों में यूपी बोर्ड के चल रहे मूल्यांकन में रविवार को 72 डिप्टी तथा 706 परीक्षक अनुपस्थित रहे। अब तक कुल चार लाख 35 हजार 690 कॉपियों का मूल्यांकन किया गया। जिला विद्यालय निरीक्षक सर्वदा नंद ने अनुपस्थित डिप्टी हेड व परीक्षकों का वेतन रोकने का निर्देश दिया है।

केपी हिंदू इंटर कॉलेज में रविवार को 119 परीक्षक अनुपस्थित रहे, यहां पर 82572 कॉपियों का मूल्यांकन किया गया। तिलक इंटर कॉलेज में 243 परीक्षक तथा 40 डिप्टी हेड अनुपस्थित रहे यहां पर 159745 कॉपियों का मूल्यांकन किया गया। राजकीय इंटर कॉलेज में 175 परीक्षक तथा एक डिप्टी हेड अनुपस्थित रहे यहां पर 104367 कॉपियों का मूल्यांकन किया गया। इसी प्रकार पी बी इंटर कॉलेज में 169 परीक्षक तथा 31 डिप्टी हेड अनुपस्थित रहे। यहां पर 89006 कॉपियों का मूल्यांकन किया गया। जिला विद्यालय निरीक्षक सर्वदा नंद ने बताया कि मूल्यांकन से अनुपस्थित चल रहे परीक्षकों तथा डिप्टी हेड का वेतन रोकने का निर्देश दिया गया है।

ओवरलोड ट्रकों के चलते कालाकांकर लालगंज राजमार्ग पर हुए जानलेवा गड्ढे

अखंड भारत संदेश

परियावां, प्रतापगढ़। जानलेवा सड़क की मरम्मत न होने से कोई बड़ा हादसा होने से इनकार नही किया जा सकता जब कि प्रदेश के मुख्यमंत्री का सख्त निर्देश है कि सड़कों पर बने गड्ढे को लोकनिर्माण विभाग जल्द गड्ढामुक्त करे अन्यथा कारवाई के लिए तैयार रहे जब कि बाबागंज विधान सभा व रामपुर खास व कौशाम्बी संसदीय क्षेत्र में उक्त सड़क आती है फिर भी अभी तक गड्ढामुक्त नही हो सकी आलापुर से रेवली, लाला का बाजार, पनिगौ, खनवारी, संग्रामगढ़, रामपुर खास लालगंज तक कि सड़क पर कदम कदम पर ओवर लोड ट्रकों के चलते जानलेवा गड्ढे हो गए है जब कि उक्त सड़क रामपुर खास विधायक मोना का निर्वाचन क्षेत्र है। आलापुर से लालगंज तक आये दिन बाइक सवार सड़क पर असंतुलित होकर गिरकर घायल हो रहे है। ऐसा नहीं है उक्त सड़क पर से विभाग के अधिशाषी अभियंता व जेई दोनों सड़क पर से न गुजरते हैं फिर भी उनका ध्यान इस जानलेवा सड़क की तरफ नही गया लगता है उनको किसी बड़ी दुर्घटना होने का इंतजार है। स्थानीय लोगो ने अधिशाषी अभियंता का ध्यान इस ओर आकृष्ट कराया है।

दुकानदार पर लाखों के जेवरात हड़पने का आरोप

दुकानदार सीसीटीवी फुटेज में गायब बता रहा है रिकॉर्डिंग

अखंड भारत संदेश

पट्टी, प्रतापगढ़। अपनी पत्नी के साथ बाजार में खरीदारी करने के लिए आया हुआ एक व्यक्ति लाखों रुपए के जेवरात एक दुकान पर भूल गया। याद आने पर जब वह दुकान पर पहुंचा तो दुकानदार उसे आनाकानी करने लगा और उसने जेवरात न होने की बात बताई सीसीटीवी फुटेज दिखाने की बात पर दुकानदार उक्त समय की घटना रिकॉर्ड ना होने के बाद बताई। पीड़ित व्यक्ति ने इस संबंध में पट्टी कोतवाली में तहरीर देकर मामले में इंसाफ की गुहार लगाई है।

पट्टी कोतवाली क्षेत्र के सुमतपुर गांव के रहने वाले संदीप पांडे पुत्र जगदीश पांडे अपनी पत्नी के साथ रविवार की शाम पट्टी बाजार आया हुआ था। पुलिस को प्रार्थना पत्र देकर उसने बताया कि वह गहनों की मरम्मत के लिए जिसमें दो जोड़ी चांदी का पायल, एक सोने का मंगलसूत्र, सिंगार का सामान एक पॉलिथीन में रखकर एक कपड़े की दुकान पर सामान खरीदने लगा। उसने बताया कि कपड़े लेकर जाते समय उसकी पॉलिथीन वहीं पर छूट गई। वह थोड़ी देर बाद वहां से लौटा और दुकानदार से पूछने लगा तो दुकानदार आनाकानी करने लगा और उसने बताया कि उसके पास सामान नहीं है। पीड़ित ने इस पर सीसीटीवी फुटेज दिखाने की बात कही तो दुकानदार उक्त समय की रिकॉर्डिंग को गायब होने की बात बताई जिस पर पीड़ित की आशंका और बढ़ गई उसने पट्टी कोतवाली में इस मामले में तहरीर देकर आरोपी दुकानदार के विरुद्ध कानूनी कार्रवाई करते हुए अपने जेवरात दिलवाने की मांग की है। पुलिस मामले की जांच में जुटी हुई है।

सीसीआरएस के आने से रेल कर्मियों की नींद उड़ी

आधी रात पहुंचे प्रतापगढ़, एक पैर पर खड़ा रहा अमला

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। मुख्य सुरक्षा आयुक्त रेलवे नई दिल्ली रविवार रात करीब ग्यारह बजे प्रतापगढ़ आ धमके। उनके आने से रेल प्रशासन में मानों भूचाल सा आ गया। रात से लेकर दूसरे दिन शाम तक समूचा अमला एक पैर पर खड़ा रहा। वे जिस विशेष कोच से आए थे उसकी चार्जिंग में इलेक्ट्रिक वालों की रात बीत गई। रेलवे सूत्रों से प्राप्त जानकारी के अनुसार सीसीआरएस शैलेश कुमार पाठक स्पेशल कोच से रात में प्रतापगढ़ रेलवे स्टेशन पर उतरे। उनकी आगवानी विशेषकर सेफ्टी के अधिकारी और कर्मचारी ने की। जो लोग मौजूद नहीं थे। वे भागते भागते पहुंचे। यान रात में यार्ड में खड़ा रहा। उसी में आयुक्त रहे। सोमवार को भी यान देर शाम तक यार्ड में देखा गया। हालांकि लोगों को लगा कि शायद स्टेशन का निरीक्षण करें। लेकिन शाम तक ऐसा कुछ भी नजर आया। स्टेशन पर चर्चा है कि आयुक्त निजी कार्यक्रम में शामिल होने आए हैं। उनके स्वागत में पूरा अमला रात से ही मौजूद रहा।

चेकिंग बूथ का निरीक्षण करने पहुंचे पुलिस अधीक्षक

पट्टी, प्रतापगढ़। सोमवार को प्रतापगढ़ के पुलिस अधीक्षक सतपाल अंतिम कंधई थाना अंतर्गत वीरमऊ विशुनदत्त गांव के समीप बन रहे पुलिस चेकिंग बूथ का निरीक्षण करने के लिए पहुंचे । इस दौरान उन्होंने बन रहे पुलिस बूथ का संबंध में आवश्यक दिशा निर्देश भी दिया। पट्टी तहसील क्षेत्र के कंधई थाना अंतर्गत कई बड़ी वारदात पिछले दिनों घटित हो चुकी है । बेखौफ बदमाश लूट हत्या समेत कई गंभीर अपराधों को अंजाम दे चुके हैं । इस संबंध में प्रतापगढ़ पुलिस अधीक्षक ने आपराधिक घटनाओं पर अंकुश लगाने तथा अपराधियो के धर पकड़ के लिए।

खबर संक्षेप

पांच वारण्टी अभियुक्त गिरफ्तार

कौशाम्बी। जिले में अलग अलग थानों द्वारा पांच वारंटी अभियुक्तो को गिरफ्तार कर न्यायालय भेज दिया है जानकारी के मुताबिक थाना करारी पुलिस बल द्वारा वारण्टी अभियुक्त जुग्गीलाल पुत्र रामकृपाल निवासी हकीमपुर थाना करारी को गिरफ्तार कर विधिक कार्यवाही के पश्चात अभियुक्त को न्यायालय भेज दिया है इसी प्रकार थाना मंझनपुर पुलिस बल द्वारा वारण्टी अभियुक्त अरुण कुमार पुत्र राजाराम निवासी खनवारी थाना मंझनपुर को गिरफ्तार कर विधिक कार्यवाही के पश्चात अभियुक्त को न्यायालय भेज दिया है इसी प्रकार थाना पश्चिम शरीरा पुलिस बल द्वारा वारण्टी अभियुक्त बड़कू उर्फ चन्द्रिका सिंह पुत्र रफ्फू उर्फ रामपाल निवासी गोराजू व श्रीपत पुत्र सियम्बर निवासी कलसापर थाना पश्चिम शरीरा को गिरफ्तार कर विधिक कार्यवाही के पश्चात अभियुक्त को न्यायालय भेज दिया है इसी प्रकार थाना पिपरी पुलिस बार द्वारा वारण्टी अभियुक्त मोतीलाल उर्फ धीरेन्द्र पुत्र रामबहोरी निवासी शेरगढ़ थाना पिपरी को गिरफ्तार कर विधिक कार्यवाही के पश्चात अभियुक्त को न्यायालय भेज दिया।

बलात्कारी की शादी में बाधक बन रही रेप पीड़िता की कहीं हत्या तो नहीं !

अखंड भारत संदेश

सूचना पाकर पहुंची पुलिस ने बालिका के शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम को भेजा

घटनास्थल पर मिले तमाम साक्ष्य बालिका की आत्महत्या की घटना से कर रहे इनकार

बालिका की मौत के बाद दुखी परिजन

कौशांबी। चरवा थाना क्षेत्र के समसपुर गांव में रेप पीड़िता एक बालिका की बीती रात संदिग्ध परिस्थितियों में मौत हो गई है बालिका की मौत ने अपने पीछे तमाम सवाल छोड़ दिए हैं घटनास्थल के परिस्थिति जन्य साक्ष्य बालिका की हत्या किए जाने की गवाही दे रहे हैं हालांकि दीवाल के छेद से बालिका की लाश लटक रही थी प्रथम दृष्टया पुलिस का मानना है कि बालिका ने प्रताड़ना से त्रस्त हो कर आत्महत्या कर लिया है लेकिन मौके पर मिले तमाम साक्ष्य को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता और घटनास्थल पर मिले तमाम साक्ष्य आत्महत्या से इंकार कर रहे हैं। घटनाक्रम के मुताबिक चरवा थाना क्षेत्र के समसपुर गांव की अनुसूचित जाति की सपना देवी उम्र लगभग 20 वर्ष पुत्री भोण्डल कोरी ने गांव के रजनीश से प्यार किया था और दोनों के बीच शारीरिक संबंध बनने लगे बालिका गर्भवती हो गई और उसने शादी का प्रस्ताव रखा लेकिन रजनीश ने बालिका को ठुकरा दिया जिस पर बालिका ने रजनीश के विरुद्ध बलात्कार का मुकदमा दर्ज कराया पुलिस ने आरोपी रजनीश को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया जेल से जमानत पर आने के बाद पुलिस ने दोनों के बीच समझौता कराया थाने में पंचायत के बाद रजनीश ने बालिका से शादी करने के बाद उसको साथ रखने की कसमें खाई और बालिका से शादी करने के बाद उसको लेकर वह नासिक चला गया जहां बालिका के पेट में पल रहे गर्भ को चिकित्सकों से साफ सफाई करा दिया और वापस बालिका को उसने इलाहाबाद स्टेशन पर अकेला छोड़ दिया और युवक इलाहाबाद से फरार हो गया बालिका अपने मायके समसपुर पहुंची फिर मामले की तहरीर बालिका ने पुलिस को दी लेकिन इस बार पुलिस ने बालिका की मदद नहीं की तमाम दबाव के बाद युवक ने फिर बालिका से प्यार जताना शुरू कर दिया एक दूसरे से छुप छुप कर प्रेमी मिलने लगे बालिका शादी करने की जिद पर अड़ी थी बलात्कार का मुकदमा उठाने के लिए युवक आए दिन दबाव बनाने लगा बालिका और उसके परिजनों के साथ मारपीट गाली-गलौज प्रताड़ना और धमकी शुरू हो गयी इसी बीच युवक के परिजनों ने प्रेमी रजनीश की शादी दूसरे जगह निश्चित कर दी लेकिन बालिका सपना अपने बलात्कारी प्रेमी रजनीश से शादी करने की जिद पर अड़ी थी जिसमें जाति धर्म का बंधन बाधक बन रहा था रजनीश की शादी में पड़ते व्यवधान के बीच अचानक रविवार की आधी रात को सपना की संदिग्ध परिस्थितियों में मौत हो गई है उसकी लाश घर की दीवार के छेद से बंधी लटक रही थी जिस रस्सी के सहारे बालिका की लाश लटक रही थी वह रस्सी ट्रैक्टर के उपयोग में ली जाती है बालिका के घर में ट्रैक्टर नहीं है घटनास्थल पर फास्ट फूड ममोज पड़ा था लेकिन पुलिस ने मौके से ममोज को अपने कब्जे में लेकर बिधि विज्ञान प्रयोगशाला नहीं भेजा है मौके पर बालिका के शरीर का रंग पूरी तरह से काला पड़ गया है दीवाल से लटक रही बालिका की लाश जमीन को छू रही थी ग्रामीणों की मानें तो बालिका के गले में फंदा नहीं पड़ा था गांठ लगाई गई थी मौके पर मिले तमाम परिस्थिति जन्य साक्ष्य बालिका के आत्महत्या से इंकार कर रहे हैं हालांकि पुलिस ने बालिका के शव को पोस्टमार्टम को भेज दिया है पुलिस का कहना है कि पोस्टमार्टम रिपोर्ट के बाद बालिका के मौत से पर्दा उठेगा।

न्यूज झरोखा

ईद के पर्व के दृष्टिगत मंझनपुर कोतवाल ने पुलिस बल के साथ किया पैदल गस्त

कौशाम्बी। कानून व्यवस्था को चुस्त-दुरुस्त करने और समाज में अमन-चैन कायम करने के उद्देश्य से मंझनपुर कोतवाल विनोद कुमार सिंह ने पुलिस जवानों के साथ मंझनपुर कस्बे में पैदल गस्त किया प्रभारी निरीक्षक मंझनपुर ने ईद के पर्व को देखते हुए पुलिस के जवानों ने साथ चेकिंग किया तथा अधीनस्थों को आवश्यक दिशा निर्देश दिए। पैदल गश्त के दौरान कोतवाल ने आम जनमानस को सुरक्षा का एहसास कराया और कहा कि अपराध और अपराधियों की खैर नहीं होगी उन्होंने शरारती तत्वों को कठोर शब्दों में चेतावनी देते हुए कहा कि वह शरारत करना बंद कर दें वरना शरारती तत्वों के लिए हवालात में जगह होगी रविवार की शाम मंझनपुर कोतवाल विनोद कुमार सिंह पुलिस जवानों के साथ मंझनपुर मार्केट में पैदल गश्त करने निकले और उन्होंने संदिग्ध लोगों को रोककर उनसे गहन पूछताछ की।

बैंक पहुंचकर एसपी ने खुद लिया सुरक्षा का जायजा

कौशाम्बी। बैंकों की सुरक्षा व्यवस्था चेक करने का निर्देश जिला पुलिस को शासन से मिला जिस पर पूरे जिले के थाना पुलिस क्षेत्राधिकारी और पुलिस अधीक्षक ने स्वयं बैंकों की चेकिंग की बैंक चेकिंग का कार्य पूरे जिले में चला बैंकों के सीसीटीवी कैमरे चेक किए गए और सीसीटीवी कैमरे में धूल जमा होने पर उन्हें साफ करने के निर्देश दिए गए हैं सुरक्षा व्यवस्था का जायजा लिया गया है और सुरक्षा के कड़े इंतजाम के निर्देश दिए गए हैं बैंक पहुँची पुलिस ने सुरक्षा रजिस्टर भी चेक किए हैं और तमाम तरह के दिशा निर्देश शाखा प्रबंधक को दिए गए हैं काफी देर तक शाखा प्रबंधक से पुलिस ने वार्ता कर सुरक्षा की स्थिति का जायजा लिया है जनपद मुख्यालय मंझनपुर के सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया शाखा में दोपहर पुलिस अधीक्षक स्वयं पहुंचे और उन्होंने शाखा प्रबंधक से वार्ता की बैंक की सुरक्षा की स्थिति को जांचा परखा और सुरक्षा संबंधित तमाम दिशा निर्देश जारी किए हैं इसी तरह क्षेत्राधिकारी ने भी क्षेत्र के बैंकों की जांच पड़ताल की है पूरे जिले में पुलिस ने बैंको की सुरक्षा की जांच पड़ताल चेकिंग की है अचानक बैंकों में पुलिस फोर्स के साथ थानेदार क्षेत्राधिकारी एससी के पहुंचने से हड़कंप का माहौल रहा

अधिवक्ता की मौत पर शोक सभा कर न्यायिक कार्य से विरत रहने का अधिवक्ताओं ने लिया फैसला

कौशाम्बी। जनपद न्यायालय के अधिवक्ता आशीष केसरवानी की इलाज के दौरान लखनऊ के एक अस्पताल में मौत हो गई उनका अंतिम संस्कार हिंदू धर्म के अनुसार रविवार को मंझनपुर में कर दिया गया है अधिवक्ता की मौत की जानकारी जैसे न्यायालय परिसर पहुंची अधिवक्ता दुखी हुए अधिवक्ताओं ने कचहरी परिसर में शोक सभा आयोजित कर अधिवक्ता आशीष केसरवानी को श्रद्धांजलि अर्पित की इस दौरान उपस्थित अधिवक्ताओं ने निर्णय लिया है कि आशीष केसरवानी की मौत के दुख में अधिवक्ता न्यायिक कार्य से विरत रहेंगे इस दौरान पूर्व जिला अध्यक्ष नर नारायण मिश्रा जिला अध्यक्ष मनु देव त्रिपाठी महामंत्री तुषार तिवारी अंकित त्रिपाठी अशोक कुमार मिश्रा उर्फ भोला सहित सैकड़ों अधिवक्ता मौजूद रहे।

छात्रवृत्ति समस्या समाधान को लेकर सौंपा ज्ञापन

कौशांबी। भाजपा की सरकार में छात्रों की छात्रवृत्ति नहीं आ रही है छात्रवृत्ति समस्या के समाधान को लेकर एनएसयूआई के जिलाध्यक्ष ने डीएम के माध्यम से मुख्यमंत्री को ज्ञापन भेजते हुए छात्रवृत्ति के समस्या के समाधान की मांग की है सोमवार को एनएसयूआई के जिलाध्यक्ष के नेतृत्व में तमाम लोग कलेक्ट्रेट पहुंचे और जिलाधिकारी को छात्रवृत्ति से संबंधित समस्या के निदान के लिए ज्ञापन सौंपा है एनएसयूआई के जिलाध्यक्ष ने कहा कि विद्यालय में पढ़ने वाले छात्रों के साथ सरकार सौतेला व्यवहार कर रही है छात्रों को सरकार छात्रवृत्ति नहीं भेज रही है छात्रों के सामने तमाम समस्याएं खड़ी हो गई हैं उन्होंने कहा कि जिले में छात्रवृत्ति की समस्या के समाधान को लेकर एनएसयूआई के तमाम पदाधिकारियों के साथ जिलाधिकारी से मिले हैं इस दौरान जिला अध्यक्ष अमित द्विवेदी आजाद के नेतृत्व में साथियों के साथ जिलाधिकारी के माध्यम से द्वारा मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ को ज्ञापन सौंपा गया जिलाधिकारी कौशांबी ने जल्द से जल्द छात्रवृत्ति आने का आश्वासन दिया इस दौरान इजहार,मो० सैफ मंसूरी , मनजीत कैथवास, संजय कुमार द्विवेदी, राजकुमार पासी, संदीप कुमार, नोखे लाल सरोज, रामकुमार, कमलाकांत शुक्ला, रंजीत कुमार, विनय कुमार पासी, रिशु मिश्रा उपस्थित रहे।

भाजपा नेता से पंगा लेना पशु चिकित्साधिकारी को पड़ा महँगा

कौशाम्बी। भाजपा नेता से पंगा लेना पड़ा महंगा पशु चिकित्सा अधिकारी डॉ0 सीमा को हटाया गया। डॉ0 सीमा ने बीजेपी नेता पर दर्ज कराया था मुकदमा। डॉ यशपाल उप मुख्य पशु चिकित्सा अधिकारी को मुख्य पशु चिकित्सा अधिकारी कौशाम्बी का सौंपा गया दायित्व जिलाधिकारी ने आदेश जारी किया है

निरोधात्मक कार्यवाही मे 18 अभियुक्त गिरफ्तार

कौशाम्बी। पुलिस अधीक्षक के कुशल निर्देशन में चलाये जा रहे अभियान में साधारण मारपीट व शांति भंग करने के आरोप में थाना मंझनपुर से 06 थाना करारी से 02 थाना पश्चिम शरीरा से 02 थाना सराय अकिल से 05, थाना पिपरी से 02, थाना कड़ाधाम से 01 कुल 18 अभियुक्तों को गिरफ्तार कर चालान न्यायालय कर दिया है

शराब के साथ दो अभियुक्त गिरफ्तार

कौशाम्बी। थाना मझनपुर पुलिस बल द्वारा अभियुक्त गुलसाद पुत्र मो० ईशा निवासी कनवार थाना सैनी को गिरफ्तार कर कब्जे से 15 लीटर अवैध शराब बरामद होने पर अभियुक्त का चालान न्यायालय कर दिया है थाना करारी पुलिस बल द्वारा अभियुक्त हीरालाल पुत्र मिठाई लाल निवासी छोटी पवैया थाना करारी को गिरफ्तार कर कब्जे से 20 लीटर अवैध शराब बरामद होने पर अभियुक्त का चालान न्यायालय कर दिया हैं

चेकिंग के दौरान की गई कार्यवाही

कौशाम्बी। पुलिस अधीक्षक के निर्देश के क्रम में जनपद स्तर पर विभिन्न थानों व यातायात पुलिस द्वारा यातायात नियमों का पालन न करने वालों के विरुद्ध सघन चेकिंग की गई एंव चेकिंग के दौरान दो पहिया व चार पहिया वाहनों को चेक किया गया जिसमे यातायात नियमों का उल्लंघन करने वाले 131 वाहनों का ई चालान किया गया साथ ही 01 से 500 रुपए समन शुल्क वसूल किया गया

वांछित अभियुक्त गिरफ्तार

कौशाम्बी। थाना कड़ाधाम पुलिस बल द्वारा वाछित अभियुक्त अर्जुन सिंह पुत्र राम सिंह निवासी रसीदमई थाना कड़ाधाम को गिरफ्तार कर विधिक कार्यवाही के पश्चात अभियुक्त को न्यायालय भेज दिया है इसी प्रकार थाना मंझनपुर पुलिस बल द्वारा वांछित अभियुक्ता प्रतिमा पुत्री कमलेश पत्नी मानसिंह निवासी चका थाना उतरावा जनपद प्रयागराज को गिरफ्तार कर विधिक कार्यवाही के पश्चात अभियुक्ता को न्यायालय भेज दिया है।

डीएम ने की गौ-संरक्षण के सम्बन्ध में जिला स्तरीय समीक्षा समिति की बैठक

अखंड भारत संदेश

गौ-आश्रय स्थलों में हर समय भूसा-चारा की पर्याप्त उपलब्धता सुनिश्चित किया जाय, सभी अधिकारियों को अपने तैनाती स्थल पर ही निवास करने के निर्देश

बैठक करते डीएम व अन्य तथा उपस्थित अधिकारी गण

कौशाम्बी। जिलाधिकारी सुजीत कुमार द्वारा गौ-संरक्षण के सम्बन्ध में जिला स्तरीय अनुश्रवण मूल्यांकन एवं समीक्षा समिति की बैठक सम्राट उदयन सभागार में की गई जिलाधिकारी ने निमार्णाधीन गौ-आश्रय स्थलों की प्रगति की विस्तृत समीक्षा के दौरान सम्बन्धित अधिकारियों को निर्माण कार्यो को 15 मई तक पूर्ण कराने के निर्देश दिये उन्होंने सहभागिता योजना के तहत लक्ष्य के अनुरूप गोवंशों की सुपुर्दगी में प्रगति लाने के निर्देश देते हुए कहा कि सुपुर्दगी में दी गई गोवंशों का सत्यापन प्रत्येक माह की 25 तारीख तक कराकर आख्या सीवीओ को उपलब्ध करा दिया जाय, जिससे समय से भुगतान किया जा सकें। उन्होंने भूसा-चारा की उपलब्धता की समीक्षा के दौरान सभी खण्ड विकास अधिकारियों एवं पशु चिकित्साधिकारियों पर कडी नाराजगी प्रकट करते हुए कहा कि सभी गौ-आश्रय स्थलों में हर समय भूसा-चारा की पर्याप्त उपलब्धता सुनिश्चित करे किसी भी गौ-आश्रय स्थल में चारा न होने की शिकायत न आने पाये शिकायत प्राप्त होने पर सम्बन्धित अधिकारी के विरूद्ध कड़ी कार्यवाही की जायेंगी जिलाधिकारी ने सभी अधिकारियों को अपने तैनाती स्थल पर ही निवास करने के निर्देश देते हुए कहा कि उनके द्वारा औचक निरीक्षण कराकर सत्यापन कराया जायेगा तैनाती स्थल पर निवास न करते हुए पाये जाने पर कड़ी कार्यवाही की जायेगी। उन्होंने पशु चिकित्साधिकारियों को अपने अपने गौ-आश्रय स्थलों का नियमित निरीक्षण करते हुए सभी व्यवस्थायें सुनिश्चित करने के निर्देश दिये उन्होंने सभी उप जिलाधिकारियों एवं सभी खण्ड विकास अधिकारियों को भी नियमित गौ-आश्रय स्थलों का निरीक्षण कर व्यवस्थायें सुनिश्चित करने के निर्देश दिये। उन्होंने अधिकारियों को क्षेत्र भ्रमण करने के भी निर्देश दिये हैमुख्य विकास अधिकारी शशिकान्त त्रिपाठी ने कहा कि जिन अधिकारियों द्वारा गौ-आश्रय स्थलों का निरीक्षण किया जाय, वे सभी अधिकारी निरीक्षण पंजिका में गौवंशों की संख्या आदि स्पष्ट रूप से अवश्य अंकित करें उन्होंने कहा कि गौ-आश्रय स्थलवार नामित नोडल अधिकारियों की बैठक प्रत्येंक 15 दिन में अवश्य किया जाय। उन्होंने कहा कि सभी गौ-आश्रय स्थलों में केयर टेकर की रोस्टरवार ड्यूटी लगाकर हर समय केयर टेकर की उपस्थिति सुनिश्चित की जाय इस अवसर पर अपर जिलाधिकारी जयचन्द पाण्डेय अपर पुलिस अधीक्षक समर बहादुर सहित अन्य सम्बन्धित अधिकारीगण उपस्थित रहे।

अनियंत्रित होकर भूसा लदा ट्रैक्टर पलटा एक व्यक्ति की मौत, चालक गंभीर रूप से घायल

अझुवा कौशाम्बी। भूसा लादकर जा रहा ट्रैक्टर कड़ा धाम कोतवाली क्षेत्र के टेढ़ी मोड़ के पास अनियंत्रित होकर सड़क किनारे पलट गया है हादसे में ट्रैक्टर में सवार एक व्यक्ति की मौत हो गई है और ट्रैक्टर चालक गंभीर रूप से घायल हैं पुलिस ने मृतक के शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है और घायल चालक को इलाज के लिए अस्पताल में भर्ती कराया है हादसे की जानकारी जैसे ही परिजनों को हुई कोहराम मच गया है जानकारी के मुताबिक कड़ा धाम कोतवाली क्षेत्र के फरीदगंज के निवासी पवन सोनकर ट्रैक्टर से भूसा लेने बाकरगंज गए थे जहां से वह सोमवार को वापस लौट रहे थे जैसे ही भूसा लादकर ट्रैक्टर कड़ा धाम कोतवाली क्षेत्र के टेढ़ी मोड़ से कुछ दूर आगे श्याम डेरी के पास पहुँचा भूसा लदा ट्रैक्टर अनियंत्रित होकर सड़क किनारे पलट गया जिससे उसमें सवार पवन सोनकर निवासी फरीद गंज एवं चालक गंभीर घायल हो गए मौके पर पहुंचे लोगों ने दोनों को नजदीकी अस्पताल में भर्ती कराया जहां पवन सोनकर उर्फ पिंटू की मौत हो गई बताया जा रहा है कि पवन भूसा लेने बाकरगंज गांव गया था वापस लौटते समय कड़ा धाम थाना क्षेत्र के श्याम डेरी के पास यह दर्दनाक हादसा हुआ है हादसे की खबर जैसे ही परिजनों को हुई घर परिवार में कोहराम मचा हुआ है।

डीएम ने की जिला स्वास्थ्य समिति की बैठक

सभी चिकित्सक अपने तैनाती स्थल पर निवास करना सुनिश्चित करें

कौशाम्बी जिलाधिकारी सुजीत कुमार द्वारा उदयन सभागार में जिला स्वास्थ्य समिति (शासी निकाय) की बैठक की गयी बैठक में जिलाधिकारी ने सभी चिकित्साधिकारियों को निर्देशित किया कि वे स्वयं तथा स्टाफ समय से अस्पताल आये एवं युनिफार्म में रहें तथा कोविड हेल्प डेस्क को सक्रिय किया जाय उन्होंने सीएमएस सहित सभी प्रभारी चिकित्साधिकारी सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र को मानक के अनुसार बायोमेडिकल वेस्ट का निस्तारण करने के निर्देश दिये। इसके साथ उन्होंने अस्पताल को साफ-सुथरा एवं अस्पताल परिसर में झाडियो की साफ-सफाई कराने के भी निर्देश दिये उन्होंने कहा कि निष्प्रयोज्य टूटे फर्नीचर आदि का निस्तारण कराया जाय। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री की मंशा के अनुरूप सभी चिकित्सक अपने तैनाती स्थल पर निवास करना सुनिश्चित करें, उनके द्वारा रात्रि में औचक निरीक्षण कराकर सत्यापन कराया जायेगा। उन्होंने सीएमएस सहित सभी प्रभारी चिकित्साधिकारी सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र से कहा कि दवाये बाहर से न लिखी जाय, इसका कड़ाई से अनुपालन सुनिश्चित किया जाय। उन्होंने कहा कि मरीजों से अच्छा व्यवहार किया जाय तथा उन्हें बेहतर चिकित्सीय सुविधा उपलब्ध करायी जाय जिलाधिकारी ने जननी सुरक्षा योजना की समीक्षा के दौरान संस्थागत प्रसव विगत वर्ष के सापेक्ष कम पाये जाने पर प्रगति लाने तथा यूनिसेफ के अधिकारियों को इस सम्बन्ध में अध्ययन कराने के निर्देश दिये उन्होंने आशाओं को समय से भुगतान कराने के भी निर्देश दिये उन्होंने आशा एवं एएनएम की नियमित समीक्षा करने तथा आरसीएच पोर्टल पर फीडिंग अपडेट करने के निर्देश दिये उन्होंने बच्चों के नियमित टीकाकरण में प्रगति लाने तथा रोगी कल्याण समिति की बैठक नियमित कराने के भी निर्देश दिये। उन्होंने राष्ट्रीय बाल स्वास्थ्य कार्यक्रम की समीक्षा के दौरान कहा कि मानक से कम स्कूल कवर करने वाली टीम से स्पष्टीकरण प्राप्त करने के निर्देश दिये। बैठक में बताया गया कि एएनएम द्वारा सेशन पर आवश्यक मशीनो को नहीं ले जाया जा रहा है जिस पर जिलाधिकारी ने सभी प्रभारी चिकित्साधिकारी सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र को निर्देशित किया कि वे सुनिश्चित करें कि एएनएम सभी आवश्यक मशीनें सेशन पर अवश्य ले जायें उन्होंने आयुष्मान भारत योजना की समीक्षा के दौरान गोल्डेन कार्ड बनाये जाने के कार्य में कम प्रगति पाये जाने पर नाराजगी प्रकट करते हुए तेजी से प्रगति लाये जाने के निर्देश दिये बैठक में एसीएमओ डॉ हिन्दमणि ने बताया कि सघन मिशन इन्द्रधनुष का तृतीय चरण का अभियान 04,05,06,09,10,11एवं 12 मई 2022 तक चलाया जायेंगा।

23 वर्ष पूर्व बाबा द्वारा बेंची गयी जमीन पर नाती कर रहा विवाद

अधिकारियों के नाम पर बद नियत व्यक्ति से मोटी रकम वसूल कर दलाल टाइप के लोग कर रहे अधिकारियों को गुमराह

अखंड भारत संदेश

जमीन का दृश्य

कोखराज कौशाम्बी। रकम की जरूरत पड़ने पर 23 वर्षों पूर्व बाबा ने जिस जमीन को बेचकर बैनामा कर जमीन की कीमत वसूल ली थी खरीदी गई जमीन की तरफ से पीडब्ल्यूडी की सड़क बन जाने के बाद उसकी कीमत बढ़ गई है जिससे अब उसी जमीन पर उनका नाती जबरिया विवाद खड़ा कर पुलिस और प्रशासनिक अधिकारियों को गुमराह कर जमीन पर कब्जा करने का प्रयास कर रहा है बेची गई जमीन पर बदनियति से फिर कब्जा करने की मंशा रखने वाले लोगों के कारनामे से जहां जमीन के खरीददार परेशान हैं वहीं अधिकारी भी परेशान हो चुके हैं लेकिन बादनियत व्यक्ति अपनी आदत से मजबूर होकर आए दिन अधिकारियों को शिकायती पत्र देकर जमीन पर कब्जे की रोक की मांग कर रहा है मामला करारी थाना क्षेत्र के गुलामी पुर ग्राम पंचायत का है जानकारी के मुताबिक मंझनपुर तहसील क्षेत्र के करारी थाना क्षेत्र के गुलामी पुर ग्राम पंचायत में बिटटन देवी पत्नी किशोरी लाल मौर्य ने सन 1999 में श्यामलाल यादव पुत्र दाता दीन से आराजी गाटा संख्या 402 में लगभग 14 बिस्वा पूर्व की तरफ जमीन खरीदी थी जिसकी उन्होंने कीमत भी अदा कर दी थी मामले की लिखा पढ़ी रजिस्ट्री कार्यालय में हुई जमीन खरीदने के बाद बिट्टन देवी का परिवार उस जमीन पर काबिज है अभिलेखों के अनुसार चौहद्दी डाल कर विक्रेता की सहमति से खरीददार ने बैनामा रजिस्ट्री करवाया था रजिस्ट्री करवाने के बाद उसी गाटा संख्या में नीबू की बाग लगाया गया आम महुआ नीम के पौधे लगाये गए व जमीन के एक हिस्से में अपने भाइयों के साथ लगभग 10 वर्ष पहले निर्माण भी किया गया लेकिन अब उसी जमीन में 23 साल बाद दूसरे भाई के शेष बची जमीन निर्माण में बाबा की बेंची जमीन में जबरन नाती शिवबरन पुत्र बहादुर निर्माण में विवाद पैदा कर अधिकारियों को गुमराह कर रहा है बदनियति के चलते जमीन बेचने वाले का नाती निर्माण में विवाद कर अवरोध पैदा कर रहा है जबकि उसी गाटे में उसकी खाली पडी. जमीन की तरफ रोड़ व रास्ता मौजूद है जबकि इनके बैनामा रजस्ट्री के समय खरीददार की तरफ सिर्फ गली ही थी खरीददार की जमीन के पूर्व की तरफ लगभग 15 वर्ष पहले पी डब्ल्यू डी की सड़क बनने से जमीन की कीमत बढने से नाती के मन में नियत खराब हो गयी जिसके कारण वह अपने दबंग साथियों के साथ खरीददार की जमीन में निर्माण में बाधा उत्पन्न कर गाली गलौज व मार पीट पर आमादा है जिसकी शिकायत जमीन खरीददार ने उच्च अधिकारियों से की है मामले में कुछ दलाल टाइप के लोग सक्रिय हो गए हैं जो कीमती जमीन पर जबरिया कब्जा कराने की बात कहकर बदनीयत व्यक्ति से अधिकारियों और पुलिस के नाम पर मोटी रकम वसूल रहे हैं

गरीबों में बांटी गई राशन किट और अन्य वस्तुएं

अखंड भारत संदेश

राशन किट ले जाते युवक

करारी कौशाम्बी। रमजानुल मुबारक का पवित्र महीना पूरा हो गया है अब ईद का खुशियों वाला पर्व पूरे हर्ष और उल्लास के साथ मनाने की तय्यारियाँ जोरों पर हैं वहीँ कुछ गरीब ऐसे भी हैं जिन्हे इस पर्व पर भी दुःख का सामना करना पड़ता है क्यूंकि उनके पास खाने को कुछ नहीं और न ही पहनने को कुछ है इन्हीं बातों को लेकर समाज सेवी संस्था तहरीक फरोग ए इस्लाम कौशाम्बी ने 100 से ज्यादा गरीबों में मुफ्त राशन किट वितरण करने का काम किया है साथ ही साथ 100 से ज्यादा गरीबों और असहाय लोगों में जूते चप्पल वितरण का कार्य भी किया है किन्तु इस गर्मी किसी भी गरीब का पांव तप्ती हुई जमीन से झुलसने न पाए संस्था के सदर हाफिज राहत खान रजवी कहते हैं की हदीस के अनुसार इस महीने की एक नेकी का सवाब (पुण्य) कई गुना ज्यादा बढ़ जाता है इसीलिए हम लोगों ने मिल जुल कर समाज सेवा का कार्य आगे बढ़ाया है किन्तु अधिक से अधिक पुण्य कमाया जा सके. संस्था के जिम्मेदार हाफिज जहीर बताते हैं की शहर काजी मुफ्ती खुशनूद आलम एहसानी रजवी साहब के नेतृत्व में हमने गरीब असहाय और जरूरतमंदों तक ज्यादा से ज्यादा राशन साम्रगी और अन्य वस्तुएं पहुँचाने का काम शुरू किया है किन्तु गरीबी की वजह से कोई व्यक्ति भूखा न रहने पाए और न ही किसी के पैरों में इस चिलचिलाती धूप में तकलीफ हो संस्था के सदस्य मोहम्मद गुफरान और मुहम्मद नदीम रजवी बताते हैं की अब तक हजारों की लागत से 100 से ज्यादा राशन किट और 100 जोड़ी से ज्यादा जूते और चप्पल गरीबों में वितरण किये जा चुके है. संस्था के रुक्न मुहम्मद सरताज और मुहम्मद उमर का कहना है की हम इस काम को पूरे जिले में बढ़ा रहे हैं यदि किसी व्यक्ति को जरुरत हो तो वो नीचे दिए गए नंबर 9369555514 पर हमसे सम्पर्क करे हम राशन समर्गी और अन्य वस्तुएं उस तक पहुँचाने की पूरी कोशिश करेंगे इस मौके पर संस्था के सभी सदस्यों ने बढ़ चढ़ कर हिस्सा लिया और गरीबों की मदद करते रहने का वादा किया

खानकाहे कादिरिया वाहिदिया खुदानुमाईया के बानी हजरत अल्लामा मुफ्ती मोहम्मद याकूब दानिशुल कादरी

अखंड भारत संदेश

कौशाम्बी। साहब ने एतिकाफ के बारे में समझाया कि एतिकाफ रमजानुल मुबारक के आखिरी दस दिनों में किया जाता है और ये ऐसी इबादत है जिसका अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो ताला अलेही वसल्लम रमजान के महीने में बहुत इहतिमाम फरमाया करते थें और रमजानुल मुबारक के आखिरी दस दिनों में मस्जिद नबवी शरीफ में कयाम किया करते और रात दिन इबादत व रियाजत किया करते थे और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो ताला अलेही वसल्लम ने अपनी उम्मत को एतिकाफ के बारे में सीख देते हुए इरशाद फरमाते हैं कि जिसने रमजानुल मुबारक के 10 दिनों में एतिकाफ कर लिया तो ऐसा है कि जैसे उसने दो हज और दो उमरे कर लिए एतिकाफ सुन्नते मुअक्किदा किफाया है इसका मतलब यह है कि अगर शहर में किसी एक शख्स ने एतिकाफ कर लिया तो पूरे शहर के लोग बरीउज्जिम्मा हो जायेंगें और अगर किसी ने ना किया तो सभी लोग गुनहगार होंगे इस मौके पर तहसील सिराथू के चक बिजलीपुर गांव में 3 बच्चों ने एतिकाफ लिए मस्जिद में बैठ गए और आज वह मस्जिद से निकलकर सभी लोगों से मिलते हुए बड़ी खुशी के तमाम ग्रामीणों के साथ गांव घूम कर सबसे गले मिलते हुए अपने घर पहुंचते हैं नंबर 1 लड़कों का नाम मिस्फिर खान नंबर 2 आमिर खान नंबर 3 साजिद खान ने एतिकाफ में बैठकर अपने जनपद का नाम रोशन किया

इतिकाफ का मकसद : अल्लाह ताला ने ईमान वालों को रमजानुल मुबारक जैसा महीना अता फरमा कर बड़ा एहसान फरमाया खास तौर से अल्लाह ताला इस महीने में एक रात ऐसी अता फरमाया है जिसमें इबादत करना एक हजार महीनों की इबादत से बेहतर है इस रात को शबे कदर कहा जाता है और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो ताला अलेही वसल्लम ने इरशाद फरमाया कि शबे कदर को रमजान के आखिरी अशरे की ताक रातों में यानी कि 21,23,25,27,29वी रातों में तलाश करो ताकि हमें इस रात में इबादत कर के हजार महीने इबादत करने का सवाब हासिल हो जाए इस मकसद के तहत रमजान के आखिरी दिनों में इतिकाफ किया जाता है ताकि सबे कदर तलाश की जाए और इसकी बरकते हासिल हो जाएं इतिकाफ में बन्दए मोमिन सारी दुनिया से किनारा कश होकर सिर्फ अल्लाह ताला की तरफ मुतावजह हो जाता है और उसी की याद में खो जाता है उसके बाद खलीखए खलीफए हुजूर मुफ्तीए आजमे हिन्द ने दुआ फरमाई की अल्लाह ताला हम सबको रमजान की बरकतों से मालामाल फरमाए और इस महीने के सदके में हमारे मुल्क से तमाम बीमारियों को दूर फरमाए और जो भी इतिकाफ किए हैं अल्लाह ताला सब की इबादत को कुबूल फरमाए औ हमर सब को इसकी बरकतें अता फरमाए और हमारे मुल्के हिन्दुस्तान में अमन व अमान कायम फरमाए

संपादकीय

बसपा से विमुख भाजपा से लगाव

उत्तर प्रदेश में भाजपा को सकारात्मक जनादेश प्राप्त हुआ था। यह मोदी व योगी द्वारा स्थापित सुशासन को सर्वजन का समर्थन था। यह कहना निराधार है कि भाजपा की सफलता में बसपा का योगदान था। बसपा सत्ता की चाभी अपने पास रखने के उद्देश्य से चुनाव लड़ रही थी। उसका आकलन था कि किसी दल को पूर्ण बहुमत नहीं मिलेगा। मायावती अपनी चिर परिचित शैली में ही चुनाव के दौरान सक्रिय हुईं। लेकिन मोदी-योगी सरकार की अवधि में हुए राजनीतिक बदलाव को समझने में विफल रहीं। उत्तर प्रदेश सपा-बसपा के दौर को बहुत पीछे छोड़ कर आगे निकल चुका है। चुनाव के माध्यम से उस दौर में लौटने की संभावना को नकार दिया गया है। कहा जा रहा है कि यूपी में भाजपा को बसपा के कारण सफलता मिली। वस्तुतः ऐसा कहने वाले पराजय पर आत्मचिंतन से बचना चाहते हैं। वस्तुतः 2014 लोकसभा चुनाव के समय से भाजपा की विजय यात्रा प्रारंभ हुई थी। वह उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनाव में भी प्रभावी दिखाई दी। नरेंद्र मोदी ने सबका साथ-सबका विकास व सबका विश्वास को सरकार का ध्येय मार्ग बनाया था। पांच वर्षों तक उत्तर प्रदेश में योगी आदित्यनाथ ने इसी आधार पर सुशासन को स्थापित किया। इसमें दबंगों के लिए बुलडोजर और वंचितों, गरीबों, किसानों के लिए विकास था। डॉ. भीमराव आंबेडकर को सम्मान व दलितों के उत्थान संबंधी अभूतपूर्व कार्य किये गए। इससे बसपा के प्रतिबद्ध मतदाता भी उससे विमुख होने लगे। किसी भी दशा में इनका सपा की ओर देखना संभव नहीं था। सपा सरकार के समय को दलित वर्ग भूल नहीं सकता। गेस्ट हाउस कांड को मायावती ने गठबंधन के चलते भले नजरअंदाज कर दिया था, लेकिन इसका प्रतिकूल प्रभाव गांवों तक दिखाई दिया था। दशकों तक यह विभाजन बना रहा। ऐसे सभी लोगों को सपा-बसपा का पहले हुआ गठबंधन पसंद नहीं आया था। इस कारण भी अपने प्रतिबद्ध मतदाताओं पर बसपा की पकड़ कमजोर पड़ने लगी। इसके साथ ही वोट ट्रांसफर कराने की क्षमता भी जवाब देने लगी थी। कहा गया कि बसपा ने सपा को पराजित कराने के हिसाब से उम्मीदवार उतारे थे। इसमें भी एमवाई फैक्टर को ध्यान में रखा गया था। यदि इस फामूर्ले में दम होता तो अन्य सभी सीटों पर बसपा का प्रभाव दिखना चाहिए था। ऐसा नहीं हुआ। बसपा के एकमात्र उम्मीदवार को सफलता मिली। कहा जा रहा है कि वह निर्दलीय लड़ते तब भी जीत जाते। ऐसा ही आकलन कांग्रेस के दो विजेताओं के विषय में भी किया जा रहा है। इस प्रसंग में दो तथ्य महत्वपूर्ण है। एक यह कि एमवाई समीकरण कहीं कमजोर या भ्रमित नहीं हुआ। उसने सुनियोजित रूप में सपा का समर्थन किया। इनका बसपा उम्मीदवारों पर विश्वास नहीं था। दूसरा यह कि अब मायावती में वोट ट्रांसफर कराने का पहले जैसा करिश्मा नहीं रहा। दलित मतदाताओं ने अपने हित को ध्यान में रखते हुए स्वेच्छा से भाजपा को समर्थन दिया। कल्याणकारी योजनाओं के लाभ का भी चुनाव पर असर पड़ा। योगी आदित्यनाथ ने केंद्र की कल्याणकारी योजनाओं को प्राथमिकता के आधार पर क्रियान्वयन किया था। इसका परिणाम हुआ कि पचास योजनाओं में यूपी नम्बर वन रहा। करोड़ों की संख्या में जरूरतमंदों को इन योजनाओं का शत-प्रतिशत लाभ मिला। इसमें दलित व मुस्लिम परिवारों की बड़ी संख्या थी।

स्वस्थ और मजबूत लोकतंत्र के लिए अहम है प्रेस की स्वतंत्रता

योगेश कुमार गोयल

कमेटी टू प्रोटेक्ट जर्नलिस्ट (सीपीजे) द्वारा 2021 की वार्षिक रिपोर्ट में बताया गया है कि इस वर्ष विश्वभर में 293 पत्रकारों को उनकी पत्रकारिता को लेकर जेल में डाला गया जबकि 24 पत्रकारों की मौत हुई और यदि भारत की बात की जाए तो यहां कुल पांच पत्रकारों की हत्या उनके काम की वजह से हुई। प्रेस की स्वतंत्रता के मामले में यह गिरावट स्वस्थ लोकतंत्र के लिए शुभ संकेत नहीं है। प्रेस की स्वतंत्रता में कमी आने का सीधा और स्पष्ट संकेत है, लोकतंत्र की मूल भावना में अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का जो अधिकार निहित है, उसमें धीरे-धीरे कमी आ रही है

प्रेस को सदैव लोकतंत्र के चौथे स्तंभ की संज्ञा दी जाती रही है क्योंकि लोकतंत्र की मजबूती में इसकी बेहद महत्वपूर्ण भूमिका रही है। यही कारण है कि स्वस्थ और मजबूत लोकतंत्र के लिए प्रेस की स्वतंत्रता को बहुत अहम माना गया है लेकिन विडंबना है कि विगत कुछ वर्षों से प्रेस स्वतंत्रता के मामले में लगातार कमी देखी जा रही है। प्रेस की स्वतंत्रता को सम्मान देने और उसके महत्व को रेखांकित करने के लिए ही 3 मई को ह्यविश्व प्रेस स्वतंत्रता दिवसह्न मनाया जाता है। यूनेस्को वर्ष 1997 से प्रतिवर्ष इसी दिन विश्व प्रेस स्वतंत्रता दिवस मना रहा है।प्रेस का सदैव यही दायित्व रहा है कि वह प्रत्येक जानकारी को बिल्कुल सटीक और सही तरीके से लोगों तक पहुंचाए ताकि लोगों को उसके बारे में उतना ही सच पता चल सके, जितना वास्तविक रूप से उस खबर में है लेकिन इसके लिए प्रेस की स्वतंत्रता बेहद जरूरी है ताकि वह निडर-निर्भीक रहते हुए इस कार्य को बखूबी कर सके।

अंग्रेजी शब्द ढफ्एरर का शाब्दिक अर्थ समझना भी आवश्यक है। अंग्रेजी वर्णमाला के इन पांच अक्षरों का काफी गहरा अर्थ है। पी-पब्लिक, आर-रिलेटेड, ई-इमरजेंसी, एस-सोशल, एस-सर्विस अर्थात जनता से संबंधित आपातकालीन सामाजिक सेवा। भारत में प्रेस की भूमिका और उसकी ताकत को रेखांकित करते हुए अकबर इलाहाबादी ने एक बार कहा था, ह्यन्न खींचो कमान, न तलवार निकालो, जब तोप हो मुकाबिल, तब अखबार निकालोह्न इसका आशय यही था कि कलम, तोप व तलवार तथा अन्य किसी भी हथियार से ज्यादा ताकतवर है। दरअसल कलम को तलवार से भी ज्यादा ताकतवर और तलवार की धार से भी ज्यादा प्रभावी इसलिए माना गया है क्योंकि इसी की सजगता के कारण न केवल भारत में बल्कि अनेक देशों में पिछले कुछ दशकों के भीतर बड़े-बड़े घोटालों का पदार्फाश हो सका, जिसके चलते बड़े-बड़े उद्योगपतियों, नेताओं तथा विभिन्न क्षेत्रों के दिग्गजों को एक ही झटके में अर्श से फर्श पर आना पड़ा। अमेरिका के मशहूर वाटरगेट कांड का भंडाफोड़ 1970 के दशक में हुआ था, जिसके चलते अमेरिकी राष्ट्रपति रिचर्ड निक्सन को पद छोड़ना पड़ा था। भारत में भी मुख्यमंत्री

और मंत्री जैसे पदों पर रहे कुछ आला दर्जे के नेता प्रेस की सजगता के ही कारण भ्रष्टाचार के विभिन्न मामलों में आज भी जेल की हवा खा रहे हैं। संभवतः यही कारण है कि समय-समय पर कलम रूपी इस हथियार को भोथरा बनाने या तोड़ने के कुचक्र होते रहे हैं और विभिन्न अवसरों पर न केवल भारत में बल्कि दुनियाभर में सच की कीमत कुछ पत्रकारों को अपनी जान देकर चुकानी पड़ती है। 3 दिसम्बर 1950 को देश के प्रथम प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरू ने अपने सम्बोधन में कहा था, मैं प्रेस पर प्रतिबंध लगाने के बजाय, उसकी स्वतंत्रता के बेजा इस्तेमाल के तमाम खतरों के बावजूद पूरी तरह स्वतंत्र प्रेस रखना चाहूंगा क्योंकि प्रेस की स्वतंत्रता एक नारा भर नहीं है बल्कि लोकतंत्र का एक अभिन्न अंग है। हालांकि पिछले दशकों में प्रेस की स्वतंत्रता के मामले में स्थितियां काफी बदली हैं।

आज दुनियाभर में पत्रकारों पर राजनीतिक, अपराधिक और आतंकी समूहों का सर्वाधिक खतरा है और भारत भी इस मामले में अछूता नहीं है। विड़म्बना है कि दुनियाभर के न्यूज रूम्स में सरकारी तथा निजी समूहों के कारण भय और तनाव में वृद्धि हुई है।

विश्वभर के पत्रकारों पर हमलों का दस्तावेजीकरण करने और मुकाबला करने के लिए कार्यरत पेरिस स्थित रिपोर्टर्स सैन्स फ्रंटियर्स (आरएसएफ) अथवा रिपोर्टर्स विदआउट बॉर्डर्स नामक एक गैर-लाभकारी संगठन प्रतिवर्ष 180 देशों और क्षेत्रों में प्रेस की स्वतंत्रता की स्थिति का मूल्यांकन करने के लिए विश्व प्रेस स्वतंत्रता सूचकांक नामक वार्षिक रिपोर्ट पेश करता है। दुनियाभर के देशों में प्रेस की स्वतंत्रता की स्थिति की विवेचना करते हुए यह संगठन स्पष्ट करता रहा है कि किस प्रकार विश्वभर में पत्रकारों के खिलाफ घृणा हिंसा में बदल गई है, जिससे दुनियाभर में पत्रकारों में डर बढ़ा है। विश्व प्रेस स्वतंत्रता सूचकांक 2021 रिपोर्ट में कहा गया था कि दुनिया के 73 देशों में प्रेस की स्थिति बहुत बुरी है जबकि 59 देशों में बुरी स्थिति में है और बाकी देश कुछ बेहतर हैं लेकिन उनकी स्थिति भी समस्याग्रस्त ही है। 2019 की रिपोर्ट में भारत 140वें स्थान पर था, जो 2021 की रिपोर्ट में 46.56 स्कोर के साथ 142वें स्थान पर पहुंच गया। संस्था की वर्ष 2009 की रिपोर्ट के मुताबिक भारत प्रेस की आजादी के मामले में 109वें पायदान पर था लेकिन 2021 तक 33 पायदान लुढ़ककर 142वें स्थान पर पहुंच गया।

हालांकि भारत सरकार विश्व प्रेस स्वतंत्रता सूचकांक रिपोर्ट की विश्वसनीयता पर सवाल उठाते हुए उसे मानने से इनकार करती रही है। केन्द्रीय सूचना प्रसारण मंत्री अनुराग ठाकुर तो रिपोर्टर्स विदआउट बॉर्डर्स की रिपोर्ट को मानने से इनकार करते हुए संसद में लिखित जवाब में कह चुके हैं कि विश्व प्रेस स्वतंत्रता सूचकांक का प्रकाशन एक विदेशी गैर सरकारी संगठन द्वारा किया जाता है और सरकार इसके विचारों तथा देश की रैंकिंग को नहीं मानती। उनका कहना था कि इस संगठन द्वारा निकाले गए निष्कर्षों से सरकार विभिन्न कारणों से सहमत नहीं है, जिसमें नमूने का छोटा आकार, लोकतंत्र के मूल सिद्धांतों को बहुत कम या कोई महत्व नहीं देना, एक ऐसी कार्यप्रणाली को अपनाना, जो संदिग्ध और गैर पारदर्शी हो, प्रेस की स्वतंत्रता की स्पष्ट परिभाषा का अभाव आदि शामिल हैं। अनुराग ठाकुर का कहना था कि केन्द्र सरकार पत्रकारों सहित देश के प्रत्येक नागरिक की सुरक्षा और रक्षा को सर्वोच्च महत्व देती है। पत्रकारों की सुरक्षा पर विशेष रूप से 20 अक्तूबर 2017 को राज्यों को एक एडवाजरी जारी की गई थी, जिसमें पत्रकारों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए कानून को सख्ती से लागू करने के लिए कहा गया था। सरकार विश्व प्रेस स्वतंत्रता सूचकांक रिपोर्ट को माने या न माने किन्तु आए दिन पत्रकारों पर होने वाले हमले और थानों में बेवजह दर्ज होने वाली एफआईआर और पत्रकारों की गिरफ्तारियों की खबरें आती रहती हैं।

कमेटी टू प्रोटेक्ट जर्नलिस्ट (सीपीजे) द्वारा 2021 की वार्षिक रिपोर्ट में बताया गया है कि इस वर्ष विश्वभर में 293 पत्रकारों को उनकी पत्रकारिता को लेकर जेल में डाला गया जबकि 24 पत्रकारों की मौत हुई और यदि भारत की बात की जाए तो यहां कुल पांच पत्रकारों की हत्या उनके काम की वजह से हुई। प्रेस की स्वतंत्रता के मामले में यह गिरावट स्वस्थ लोकतंत्र के लिए शुभ संकेत नहीं है। प्रेस की स्वतंत्रता में कमी आने का सीधा और स्पष्ट संकेत है, लोकतंत्र की मूल भावना में अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का जो अधिकार निहित है, उसमें धीरे-धीरे कमी आ रही है। भारतीय संविधान में प्रेस को अलग से स्वतंत्रता प्रदान नहीं की गई है बल्कि उसकी स्वतंत्रता भी नागरिकों की अभिव्यक्ति और स्वतंत्रता में ही निहित है और देश की एकता तथा अखण्डता खतरे में पड़ने की स्थिति में इस स्वतंत्रता को बाधित भी किया जा सकता है किन्तु ऐसी कोई स्थिति निर्मित नहीं होने पर भी देश में पत्रकारिता का चुनौतीपूर्ण बनते जाना लोकतंत्र के हित में कदापि नहीं है। यदि प्रेस की स्वतंत्रता पर इसी प्रकार प्रश्नचिन्ह लगते रहे तो पत्रकारों से सामाजिक सरोकारों से जुड़े मुद्दे उठाने की कल्पना कैसे की जा सकेगी?

(लेखक स्वतंत्र टिप्पणीकार हैं।)

धर्मनिरपेक्षता के मायने समझे समाज

सुरेश हिंदुस्थानी

किसी भी देश के शक्तिशाली होने के अपने निहितार्थ हैं। इन निहितार्थों का मन, वाणी और कर्म से अध्ययन किया जाए तो जो प्राकट्य होता है, वह यही कि सबके भाव राष्ट्रीय हों, सबके अंदर एक-दूसरे के प्रति सामंजस्य भाव की प्रधानता हो, लेकिन वर्तमान में समाज के बीच सामंजस्य के प्रयास कम और समाज के बीच भेद पैदा के प्रयास ज्यादा हो रहे हैं। जिसके चलते हमारी राष्ट्रीय अवधारणाएं तार-तार हो रही हैं। कौन नहीं जानता कि भारतीय समाज की इसी फूट के कारण भारत ने गुलामी के दंश को भोगा था। अंग्रेजों की नीति का अनुसरण करने वाले राजनीतिक दल निश्चित ही भारत के समाज में एकात्म भाव को स्थापित करने के प्रयासों को रोकने का उपक्रम कर रहे हैं। समाज को ऐसे षड्यंत्रों को समझने का प्रयास करना चाहिए।

लम्बे समय से भारत में इस धारणा को समाज में संप्रेषित करने का योजनाबद्ध प्रयास किया गया कि मुस्लिम तुष्टिकरण ही धर्मनिरपेक्षता है। इसी कारण गंगा-जमुना तहजीब की अपेक्षा केवल हिन्दू समाज से ही की जाती रही है। भारत का हिन्दू समाज पुरातन समय से इस संस्कृति को आत्मसात किए हुए है। तभी तो इस देश में सभी संप्रदाय के व्यक्तियों को पर्याप्त सम्मान दिया गया। यह सभी जानते हैं कि कांग्रेस और समाजवादी पार्टी अपने आपको धर्मनिरपेक्ष राजनीतिक दल मानती है और इन्हीं दलों ने मुस्लिम तुष्टिकरण की राजनीति की। इसके कारण देश में जिस प्रकार से वर्ग भेद की खाई पैदा हुई, उससे आज का वातावरण पूरी तरह से प्रदूषित हो रहा है। अभी हाल ही में जिस प्रकार रामनवमी और हनुमान जन्मोत्सव की शोभायात्राओं पर पत्थरबाजी की गई, वह देश के धर्मनिरपेक्ष स्वरूप की परिभाषा के दायरे में बिलकुल नहीं आता। धर्मनिरपेक्षता की सही परिभाषा यही है कि देश में धर्मों को समान दृष्टि से देखा जाए, लेकिन क्या देश में समाज के द्वारा सभी धर्मों को समान रूप से देखने की मानसिकता विकसित हुई है। अगर नहीं तो फिर धर्मनिरपेक्षता का कोई मतलब नहीं है।

वस्तुतः धर्मनिरपेक्षता शब्द समाज में समन्वय स्थापित करने में नाकाम साबित हो रहा है, इसके बजाय वर्ग भेद बढ़ाने में ही बहुत ज्यादा सहायक हो रहा है। हालांकि यह शब्द भारत के मूल संविधान का हिस्सा नहीं था। इसे इंदिरा गांधी के शासनकाल में आपातकाल के दौरान जोड़ा गया। इस शब्द के आने के बाद ही देश में तुष्टिकरण की राजनीतिक भावना ज्यादा जोर मारने लगी। यहां हम हिन्दू और मुस्लिम वर्ग को अलग-अलग देखने को प्रमुखता नहीं दे रहे हैं। और न ही ऐसा दृश्य दिखाने का प्रयास ही करना चाहिए। बात देश के समाज की है, जिसमें हिन्दू भी आता है और मुस्लिम भी। जब हम समाज के तौर पर चिंतन करेंगे तो स्वाभाविक रूप से हमें वह सब दिखाई देगा, जो एक निरपेक्ष व्यक्ति से कल्पना की जा सकती है। लेकिन इसके बजाय हम पूर्वाग्रह रखते हुए किसी बात का चिंतन करेंगे तो हम असली बातों से बहुत दूर हो जाएंगे। आज देश में यही हो रहा है। आज का मीडिया अखलाक और तबरेज की घटना को भगवा आतंक के रूप में दिखाने का साहस करता दिखता है, लेकिन इन घटनाओं के पीछे का सच जानने का प्रयास नहीं किया जाता। संक्षिप्त रूप में कहा जाए तो इन दोनों की अनुचित क्रिया की ही समाज ने प्रतिक्रिया की थी, जो समाज की जाग्रत अवस्था कही जा सकती है। यही मीडिया उस समय अपनी आंखों पर पट्टी बांध लेता है, जब किसी गांव से हिन्दुओं के पलायन की खबरें आती हैं। जब महाराष्ट्र के पालघर में दो संतों की पीट-पीट कर हत्या कर दी जाती है। इसी प्रकार महाराष्ट्र में हनुमान चालीसा पढ़ने की कवायद पर सांसद नवनीत राणा और उनके पति रवि राणा पर राष्ट्रद्रोह का प्रकरण दर्ज हुआ है। हो सकता है कि राणा दंपत्ति का तरीका गलत हो, लेकिन कम से कम भारत में हनुमान चालीसा पढ़ने को गलत तो नहीं ठहराया जा सकता। जब हम अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता की बात करते हैं तो हिन्दू समाज के व्यक्तियों की ओर से की गई जायज कार्यवाही को इस दायरे से बाहर क्यों रखा जाता है। अब फिर से हम अपने मूल विषय पर आते हैं। आज कई लोग और राजनेता यह सवाल उठाते हैं कि हिन्दू उनके क्षेत्र से यात्रा क्यों निकालता है? यह सवाल इसलिए भी जायज नहीं कहा जा सकता है कि जब देश में सभी धर्मों के धार्मिक समारोह बिना किसी रोकटोक के किसी भी स्थान से निकाले जा सकते हैं, तब हिन्दू समाज की धर्म यात्राएं क्यों नहीं निकाली जा सकती। आज अगर वे अपने मोहल्ले से रोक रहे हैं, तब कल यह भी हो सकता है कि पूरे नगर में पत्थरबाजी करके रोकने का प्रयास करें। हो सकता है कि यह घटनाएं अभी छोटे रूप में प्रयोग के तौर पर हो रही हों, लेकिन कल के दिन जब इस प्रकार की घटनाएं बड़ा रूप लेंगी, तब स्थिति हाथ से निकल जाएगी।

व्यंग्य

भारतीय भाषाओं के न्यायिक सम्मान का यही सही वक्त

सियाराम पांडेय शांत

दिल्ली के विज्ञान भवन में छह साल बाद मुख्यमंत्रियों और उच्च न्यायालयों के मुख्य न्यायाधीशों का सम्मेलन हुआ। इसमें अदालतों में न्यायाधीशों की कमी का मुद्दा तो उठा ही, भारतीय भाषाओं में कामकाज पर भी जोर दिया गया। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा कि बड़ी अदालतों में अगर स्थानीय भाषाओं में कार्य हो तो न्याय प्रणाली में आमजन का विश्वास बढ़ेगा। वे इससे अधिक जुड़ाव महसूस करेंगे। सर्वोच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश एनवी रमण ने भी कहा है कि अब न्यायालयों में स्थानीय भाषाओं में काम करने का वक्त आ गया है लेकिन अदालतों में स्थानीय भाषाओं के प्रयोग के लिए एक कानूनी व्यवस्था की जरूरत है। यह काम तो आजादी के कुछ समय बाद या यों कहें कि संविधान लागू किए जाने के दिन ही हो जाना चाहिए था, अगर उसे करने की जरूरत आजादी के 75 वें साल में महसूस की जा रही है तो इसे न्यायिक विडंबना नहीं तो और क्या कहा जाएगा? खैर जब जागे तभी सवेरा लेकिन कानूनी व्यवस्था बनाने और लक्ष्मण रेखा के बहाने इसे और अधिक खींचा नहीं जाना चाहिए। शुभस्य शीघ्रं। वैसे भी यह देश 1774 से ही सुप्रीम कोर्ट में अंग्रेजी का प्रभाव देख और झेल रहा है। यह गुलाम भारत की विवशता हो सकती थी लेकिन आजाद भारत में तो निज भाषा उन्नति अहै वाली रीति-नीति अपनाई जा सकती थी। हमें भारत के पूर्व मुख्य न्यायाधीश टीएस ठाकुर के नेतृत्व वाली तीन सदस्यीय खंडपीठ के उस निर्णय को भी याद करना चाहिए जिसमें कहा गया था कि सुप्रीम कोर्ट की भाषा अंग्रेजी ही है और इसकी जगह हिन्दी को लाने के लिए वह केंद्र सरकार या संसद को कानून बनाने के लिए नहीं कह सकते क्योंकि ऐसा करना विधायिका और कार्यपालिका के अधिकार क्षेत्र में दखल देना होगा। इसके बाद भी तत्कालीन सरकार की सेहत पर असर नहीं पड़ा था। जिस अंग्रेजी को वादकारी जानता ही नहीं, उसमें वकील क्या बहस कर हा है और जज क्या फैसला दे रहे हैं, यह वादी-प्रतिवादी को पता ही नहीं चलता। संविधान की धारा 384 में संशोधन और बड़ी अदालतों में भारतीय भाषाओं में कामकाज शुरू करने के लिए एकात्म मानववाद के प्रणेता पं. दीन दयाल उपाध्याय के न्यायविद प्रपौत्र पं. चंद्रशेखर उपाध्याय हिंदी न्याय आंदोलन चला रहे हैं। उन्होंने इस दिशा में व्यापक प्रयास भी किए हैं। हिंदी से एलएलएम करने वाले वे भारतीय छात्र हैं और हिंदी से एलएलएम करने में उन्हें अपने कई साल गंवाने पड़े। अदालत के चक्कर काटने पड़े। अगर सरकार ने उनके प्रयासों पर भी गौर किया होता तो आज बड़ी अदालतों में लोगों को अपनी बोली-बानी में न्याय मिल रहा होता। वाराणसी के जिला एवं सत्र न्यायालय में पंडित श्याम जी उपाध्याय वर्षों से संस्कृत में वाद दायर करते और बहस करते आ रहे हैं। मूल भावना भाषा नहीं, न्याय है। इसमें संदेह नहीं कि हिन्दी और अन्य भारतीय भाषाओं के पक्षधर लंबे समय से यह मांग उठाते आ रहे हैं कि अदालतों के कामकाज की भाषा ऐसी हो जिसे आम आदमी भी समझ सके और वह हर बात के लिए वकीलों पर निर्भर न रहे। भारत एक आजाद और लोकतांत्रिक देश है और यहां अदालती कामकाज की भाषा आज भी अंग्रेजी है। इससे अधिक दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति भला और क्या हो सकती है? वह अंग्रेजी जिसे हटाने की मांग अगर समाजवादी नेता डॉ. राम मनोहर लोहिया करते रहे तो संघ और भाजपा के नेता भी। हिंदी, हिन्दू और हिंदुस्तान के नारे के साथ सत्ता में आई भाजपा के बड़े नेता, मौजूदा रक्षा मंत्री और तत्कालीन गृहमंत्री राजनाथ सिंह ने हिंदी को संयुक्त राष्ट्र संघ की भाषा बनाने की मांग की थी लेकिन केंद्र सरकार बड़ी अदालतों में हिन्दी को न्याय की भाषा आज तक नहीं बना पाई है। हमें 1967 के अंग्रेजी हटाओ आंदोलन को भी नहीं भूलना चाहिए। मौजूदा समय यह सोचने का है तो आखिर वे कौन लोग हैं जो बड़ी अदालतों में अंग्रेजी का वर्चस्व बनाए रखना चाहते हैं और सरल, सहज व सस्ते न्याय की भारतीय अवधारणा को पलीता लगा रहे हैं। गौरतलब है कि संविधान की धारा 348 में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि सुप्रीम कोर्ट के कामकाज की भाषा अंग्रेजी होगी लेकिन यदि संसद चाहे तो इस स्थिति को बदलने के लिए कानून बना सकती है।

कुर्ता खिंचाई की भरपाई में लम्बा वक्त लगेगा

नरेंद्र तिवारी

राजनीति में टांग खिंचाई का उपाए बरसो से इस्तेमाल किया जाता आ रहा है। इस उपाए को अपनाने का मुख्य उद्देश्य किसी अपने को राजनीति में आगे बढ़ने से रोकना है। टांग खिंचाई ओर टांग अड़ाई के उपाय राजनीति में बहुतायत से प्रयोग किये जाते रहें है। टांग अड़ाई में जहां अपने प्रतिस्पर्धी को गिराकर या सार्वजनिक रूप से बेइज्जत कर अपनी राजनीति चमकाने का भाव छुपा है। जबकि टांग खिंचाई में उसे अपने से अधिक नहीं बढ़ने देने की भावना होती है। टांग अड़ाई ओर टांग खिंचाई का स्थान अब कुर्ता खिंचाई ने ले लिया है। कुर्ता खिंचाई का यह फामूर्ला यूं तो काफी पुराना है, किंतु अभी हाल में इसका नवीन रूप में प्रयोग किया गया। कुर्ता खिंचाई माने अपने अंक बढाने के लिए अपने ही दल के अपने राजनैतिक प्रतिद्वंदी के अंक कम करने हेतु अपने पड़ोसी का कुर्ता खींचना। राजनीति के इस उपाय की इन दिनों भोपाल से लेकर दिल्ली तक बहुत चर्चा है। अब यह कुर्ता खिंचाई का उपाय कितना कारगर साबित होता है। यह आने वाले वक्त में पता चल सकेगा, फिलहाल तो कैमरे की नजर में कैद कुर्ता खिंचाई का उपाए जग हँसाई का विषय बन गया है। भारत में अपने राजनैतिक विरोधियों को नीचा दिखाने, अपमानित करने, आगे बढ़ने से रोकने के ओर भी बहुत से उपाय अमल में लाए जाते है। वैसे राजनीति में चेहरे पर कालिख पोतने, सफेद कपड़ो पर स्याही फैंकने के उपाय भी प्रचलित है। अपने से घूर विरोधी विचारधारा के नेता की बढ़ती राजनैतिक साख को कम करने के लिए कालिख ओर स्याही फैंकने के उपायों का इस्तेमाल अनेकों बार देश मे किया गया है। इन उपायों में नेता खुद शामिल नहीं होते। अपने किसी समर्थक को आर्थिक लाभ देकर या विचारधारा की घुट्टी पिलाकर इस कार्य को सम्पादित कराया जाता है। वैसे राजनिति में चांटा मारकर भी राजनैतिक फायदा लेने का उपाय मौजूद है। देश मे अनेकों बार इस उपाय का इस्तेमाल हुआ है। किन्तु इसके परिणाम उल्टे भी निकले है। चांटा मारने के उपाय को अपनाने वाले कि तो पब्लिक ने कुटाई कर दी वह गुमनामी के अंधेरो में खो भी गया ओर चांटा खाने वाले कहा से कहा पहुचं गए। उनका राजनैतिक ग्राफ दिनों-दिन बढ़ता ही जा रहा है। चांटा खाकर ख्यातनामी ओर प्रसिद्धि का आगे बढ़ने का यह क्रम जिस तेजी बढ़ रहा है। इसे देखते हुए इस संभावना से इंकार नहीं किया जा सकता है कि कोई लगातार पराजित नेता खुद की साख जमाने के लिए खुद को चांटा न लगवा ले,अब सबका परिणाम एकसा निकले यह जरूरी तो नहीं, वह तो बेहद भाग्यशाली ओर किस्मतवाले होतें है जो चांटा खाकर भी धूमकेतु की तरह प्रभावान बने रहते है। अब इन उपायों की चर्चा करते-करते हम जूता फैंकने के उपाय को तो भूल ही गए। वैसे जूता फैंकना, मुंह पर कालिख पोतना, स्याही फैंकना, चांटा मारना अधिक हिसंक उपाए है। इनका इस्तेमाल अधिकतर विरोधी विचारधारा के नेताओं पर किया जाता हैं। अपने ही दल में ऊंचे से ऊँचे पायदान पर पहुचने के लिए अभी कुर्ता खिंचाई के उपाय पर अधिक जोर दिया जा है। अब कोई भी दल इन उपायों से अछूता नहीं है। राजनीति में आगे बढ़ने के लिए लाख विचारधारा और सिंद्धातों का शोर किया जाता रहा हो, किंतु यह नकारात्मक उपाए ही राजनीति की असली ख्यातनामी, सफलता और प्रसिद्धि के कारण है। अब राजनीति के सलाहकार भी नेताओं को सकारात्मक से अधिक नकारात्मक उपायों को अपनाने की सलाह देते हो तो कह नहीं सकतें है। अब जिस दल से कुर्ता खिंचाई फामूर्ले को बल मिला है। वहां से तो अक्सर कैडरबेस होने और सिंद्धातों पर चलने की बात कहीं जाती रही है।

चीन से बिदकता पाकिस्तान

डॉ. वेदप्रताप वैदिक

अभी-अभी कुछ संकेत ऐसे मिले हैं, जिनसे लगता है कि पाकिस्तान की विदेश नीति में बड़े बुनियादी परिवर्तन हो सकते हैं। इन परिवर्तनों का लाभ उठाकर भारत और पाकिस्तान अपने आपसी संबंध काफी सुधार सकते हैं। जिस चीन से पाकिस्तान अपनी इस्पाती दोस्ती का दावा करता रहा है, वह इस्पात अब पिघलता दिखाई पड़ रहा है। जो चीन 5 लाख करोड़ रु. खर्च करके पाकिस्तान में तरह-तरह के निर्माण-कार्य कर रहा था, उस प्रायोजना का भविष्य खटाई में पड़ गया है। चीन अपने शिनच्यांग प्रांत से पाकिस्तान के ग्वादर नामक बंदरगाह तक 1153 किमी लंबी सड़क बना रहा था ताकि अरब और अफ्रीकी देशों तक पहुंचने का उसे सस्ता और सुगम मार्ग मिल जाए लेकिन अब शाहबाज शरीफ की नई सरकार ने इस पाक-चीन गलियारे की योजना को क्रियान्वित करनेवाले प्राधिकरण को भंग कर दिया है। इसे भंग करने के कई कारण बताए जा रहे हैं। एक तो बलूचिस्तान में से इस गलियारे की लंबाई 870 किमी है, जो कि सबसे ज्यादा है। बलूच लोग इसके बिल्कुल खिलाफ हैं। उन्होंने दर्जनों चीनी कामगारों को मार डाला है। दूसरा, इसने बहुत वक्त खींच लिया है। इसके कई काम अधूरे पड़े हुए हैं। तीसरा कारण यह भी है कि पाकिस्तान अपने हिस्से का पैसा लगाने में बेहद हीले-हवाले कर रहा है। उसने 2000 मेगावाट के बिजलीघर में लगने वाले 30 हजार करोड़ रु. का भुगतान चीनी कंपनी को नहीं किया है। इसी तरह शिनच्यांग से ग्वादर तक रेलवे लाइन डालने का 55 हजार करोड़ रु. की प्रायोजना भी खटाई में पड़ गई है। पाकिस्तान की आर्थिक स्थिति इतनी खराब है कि वह कई अंतरराष्ट्रीय संगठनों और मालदार मुस्लिम राष्ट्रों के आगे अपनी झोली फैलाने के लिए मजबूर है। ऐसी स्थिति में वह चीन से अगर विमुख होता है तो उसके पास अमेरिका की शरण में जाने के अलावा कोई चारा नहीं है।

मुकेश चौधरी की शानदार गेंदबाजी, चेन्नई ने हैदराबाद को 13 रन से हराया

मुंबई। सनराइजर्स हैदराबाद और चेन्नई सुपरकिंग्स के बीच आईपीएल 2022 का 46वां मैच पुणे के महाराष्ट्र क्रिकेट एसोसिएशन स्टेडियम में खेला गया। सनराइजर्स हैदराबाद के कप्तान केन विलियमसन ने टॉस जीतकर गेंदबाजी का फैसला किया। चेन्नई के सलामी बल्लेबाज रुतुराज गायकवाड़ की 99 और कोन्वे की 85 रन की अर्धशतकीय पारी के बदौलत हैदराबाद के सामने 20 ओवरों में 2 विकेट के नुकसान ने 202 रन बना दिए। लक्ष्य का पीछा करने आई हैदराबाद टीम की तरफ से निकोल्स पूरन के अलावा कोई भी बल्लेबाज बड़ी पारी खेलने में कामयाब नहीं हो पाया और पूरी टीम 6 विकेट के नुकसान पर 189 रन ही बना पाई। चेन्नई सुपर किंग्स ने इस मैच को 13 रन से जीत लिया।

चेन्नई सुपर किंग्स (पहली पारी)

पहले बल्लेबाजी के लिए चेन्नई सुपर किंग्स को सलामी बल्लेबाज डेवॉन कॉन्वे और रुतुराज गायकवाड़ ने अच्छी शुरूआत दी। दोनों ही बल्लेबाजों ने पहले 10 ओवर में टीम के लिए 85 रन जोड़ दिए। पहले विकेट के लिए दोनों सलामी बल्लेबाजों ने 182 रन की साझेदारी निभाई। गायकवाड़ 57 गेंदों पर 6 चौके और 6 छक्के की मदद से बनाकर

99 रन पर आउट हुए।

चेन्नई का दूसरा विकेट कप्तान धोनी के रूप में गिरा। धोनी को 8 रन पर नटराजन ने अपना दूसरा शिकार बनाया। डेवॉन कॉन्वे ने नाबाद 85 रन की पारी खेली। अपनी इस पारी के दौरान उन्होंने 8 चौके और 5 छक्के लगाए।

सनराईजर्स हैदराबाद (दूसरी पारी)

203 रन के लक्ष्य का पीछा करने आई हैदराबाद को कप्तान केन विलियमसन और अभिषेक शर्मा ने तेज शुरूआत दी। दोनों पहले विकेट के लिए पावरप्ले में 58 रन जोड़ डाले। मुकेश चौधरी ने अभिषेक शर्मा को 39 रन पर आउट कर टीम को पहली सफलता दिलाई। अभिषेक ने अपनी पारी के दौरान 24 गेंदों का सामन किया जिसमें उन्होंने 4 चौके और एक छक्का लगाया। अगली ही गेंद पर मुकेश चौधरी ने राहुल त्रिपाठी को शून्य पर आउट कर चेन्नई को दूसरी सफलता दिलाई। हैदराबाद का तीसरा विकेट ऐडन मार्करम के रूप में गिरा। मार्करम 10 गेंदों पर 17 रन बनाकर सैंटनर का शिकार बने। प्रिटोरियस ने हैदराबाद के कप्तान केन विलियमसन को 47 रन पर आउट कर चेन्नई को चौथी सफलता दिलाई। विलियमसन ने अपनी पारी में 2 चौके और 2 छक्के लगाए। मुकेश चौधरी ने शशांक सिंह को 15 रन पर आउट कर हैदराबाद को 5वां झटका दिया। इसके बाद उन्होंने वाशिंगटन सुंदर को 2 रन पर आउट कर अपनी चौथी सफलता हासिल की।

हार के बाद बोले केन विलियमसन- हम इस लक्ष्य को हासिल कर सकते थे पर ...

मुंबई। सनराइजर्स हैदराबाद को चेन्नई सुपर किंग्स के हाथों 13 रन से मैच गंवाना पड़ा। इस मैच में चेन्नई सुपर किंग्स ने पहले बल्लेबाजी करते हुए 202 रन का पहाड़ जैसा लक्ष्य सामने रखा दिया। जवाब में आई हैदराबाद की टीम 20 ओवरों में इस लक्ष्य के जवाब में 189 रन ही बना पाए। हार के बाद हैदराबाद के कप्तान केन विलियमसन ने कहा कि हम इस लक्ष्य को हासिल कर सकते थे।

केन विलियमसन ने कहा कि जब कभी भी कोई टीम 200 से अधिक रन स्कोरबोर्ड पर लगा देती है तो यह हमेशा चेज करना मुश्किल होता है। मुझे लगता है कि इसके लिए हम खुद ही जिम्मेदार हैं क्योंकि उन्होंने हम पर दबाव बनाए रखा। हमने मैच में पूरी लड़ाई की पर हम बदकिस्मत रहे क्योंकि चीजे हमारे हक में नहीं गई।

विलियमसन ने आगे कहा फिर भी हम खेल को बहुत सारी सकारात्मकता के साथ देख सकते हैं। हम गुणवत्ता वाले स्पिनरों के खिलाफ आए और अंत तक हमने लड़ाई दिखाई। हमें बस जुड़े रहने की जरूरत है। हम अच्छा खेल रहे हैं और टूर्नामेंट के पहले हाफ में ऐसा किया। हमें बस कुछ चीजों को छूना है, अच्छा आकार देना है और अगले मैच में मजबूत वापसी करनी है।

कई उतार-चढ़ाव के बाद महान क्रिकेटर बनने की राह पर केएल राहुल

मुम्बई। यूं तो क्रिकेट के तमाम खिलाड़ी आए दिन नए-नए रिकॉर्ड बनाकर सुर्खियों में बने रहते हैं, लेकिन एक-दो ही ऐसे होते हैं जो ना केवल अपने खेल से दिग्गजों को भी प्रभावित करते हैं बल्कि उनमें महान खिलाड़ी बनने का भी माद्दा होता है। अब केएल राहुल के रूप में भी भारत को एक ऐसा खिलाड़ी मिल गया है जिसमें लीजेंड बनने की खूबियां देखने को मिल रही हैं। कई उतार-चढ़ाव का सामना कर चुके राहुल का खेल लगातार निखरता जा रहा है और बतौर आईपीएल टीम के कप्तान की भूमिका में भी वह बेहतरीन प्रदर्शन कर रहे हैं।

अमरीका के 3 बड़े एथलीट्स ने किया राजस्थान रॉयल्स में निवेश

मुंबई । अमरीकी फुटबॉल (एन.एफ.एल.) के दिग्गज लैरी फिट्जगेराल्ड और दो बार के ओलिम्पिक स्वर्ण पदक विजेता बास्केटबॉल खिलाड़ी क्रिस पॉल इंडियन प्रीमियर लीग (आई.पी.एल.) फ्रैंचाइजी राजस्थान रॉयल्स के नए निवेशकों में शामिल हो गए हैं। इन दोनों के साथ एन.एफ.एल. स्टार केल्विन बीचम भी इस आई.पी.एल. फ्रैंचाइजी में अल्पांश निवेशक हैं। इस टीम का स्वामित्व मनोज बडाले द्वारा नियंत्रित 'इमर्जिंग मीडिया वेंचर्स' के पास है। राजस्थान रॉयल्स की ओर से जारी विज्ञप्ति के मुताबिक-

राजस्थान रॉयल्स ने अमरीका के एलीट एथलीटों क्रिस पॉल, लैरी फिट्जगेराल्ड और केल्विन बीचम से निवेश आकर्षित किया है। ये तीनों राजस्थान स्थित फ्रैंचाइजी में निवेशक के रूप में शामिल हुए हैं। बयान के मुताबिक, उन्होंने यह निवेश 'इमर्जिंग मीडिया वेंचर्स' के माध्यम से किया है जिसे पूरी तरह (शत प्रतिशत) से मनोज बडाले नियंत्रित करते है। पॉल, फिट्जगेराल्ड और बीचम इसके अल्पांश निवेशक बनेंगे। फिट्जगेराल्ड ने कहा कि मुझे स्पष्ट सामाजिक उद्देश्य के साथ एक पेशेवर फ्रैंचाइजी बनाने का विचार पसंद है। भारत में एक जुनूनी खेल संस्कृति है और मैं देश में सबसे अधिक दिलचस्पी रखने वाली टीमों में से एक में निवेश को लेकर उत्साहित हूं। दो बार के ओलंपिक स्वर्ण पदक विजेता पॉल ने कहा कि दुनिया भर में 2 बिलियन प्रशंसकों के साथ क्रिकेट दुनिया में दूसरा सबसे ज्यादा फॉलो किया जाने वाला खेल है। मुझे 8 साल प्लेयर्स यूनियन में शामिल होने के कारण विभिन्न खेलों की क्षमता और विकास के बारे में पता चला। अमरीकी खेल बाजार के विपरीत भारतीय खेल बाजार अपेक्षाकृत कम प्रतिस्पर्धी है और खासकर क्रिकेट अच्छी गति से बढ़ रहा है।

क्रिकेट दक्षिण अफ्रीका ने नई फ्रेंचाइजी आधारित टी20 लीग की घोषणा की

लंदन। क्रिकेट दक्षिण अफ्रीका ने छह टीमों की नई फ्रेंचाइजी आधारित टी20 लीग की घोषणा की जो अगले साल जनवरी में खेली जाएगी। शीर्ष तीन पक्षों के प्ले-ऑफ चरणों में जाने से पहले लीग में छह निजी स्वामित्व वाली फ्रैंचाइजी शामिल होंगी जो एक दूसरे के साथ डबल राउंड में खेलेंगी। तीन से चार सप्ताह के टूर्नामेंट में 37 मैच खेले जाएंगे। इंडियन प्रीमियर लीग की तरह टूर्नामेंट में प्रत्येक टीम के प्लेइंग इलेवन में अधिकतम चार अंतरराष्ट्रीय खिलाड़ी शामिल होंगे। नीलामी की तारीख और अन्य विवरण की घोषणा बाद में की जाएगी। प्रतियोगिता का पहला संस्करण जनवरी 2023 में दक्षिण अफ्रीका के ऑस्ट्रेलिया

दौरे के तुरंत बाद खेला जाएगा। साल का पहला महीना तब लीग के लिए विंडो बनेगा। सीएसए के सीईओ फोलेत्सी मोसेकी ने कहा, हम इसके गठन से उत्साहित हैं जो फ्रेंचाइजी में निजी निवेश का अवसर भी प्रदान करता है। उन्होंने कहा कि सीएसए को पहले ही कई संभावित स्थानीय और अंतरराष्ट्रीय निवेशकों से दिलचस्पी मिल चुकी है। मोसेकी ने कहा कि लीग और टीमों दोनों के लिए एक स्थायी व्यापार मॉडल बनाया गया था जिसमें सबसे अच्छे स्थानीय और अंतरराष्ट्रीय खिलाड़ियों को आकर्षित करने के लिए एक स्वस्थ वेतन बिल था। सीएसए और ब्रॉडकास्टर सुपरस्पोर्ट द्वारा गठित एक नई कंपनी टूर्नामेंट का प्रबंधन करेगी। इसी के साथ ही सक्रिय रूप से आने वाले वर्षों में एक महिला टी-20 आयोजन की संभावना को देखी जा रही है।

दिल्ली कैपिटल्स के कप्तान ऋषभ पन्त ने बताया- आखिर कहां हो गई चूक

होव। आईपीएल 2021 में बढिया प्रदर्शन कर चर्चा बटोर चुकी दिल्ली के लिए नया सीजन इतना अच्छा नहीं जा रहा है। दिल्ली कैपिटल्स की टीम करीबी मैचों में हार रही है। लखनऊ सुपर जायंट्स के खिलाफ भी कुछ ऐसा ही देखने को मिला जब दिल्ली की टीम महज 6 रन से हार गई। दिल्ली के कप्तान ऋषभ पन्त ने इस हार की जिम्मेदारी लेते हुए बड़ा बयान दिया। पंत ने कहा कि मुझे लगता है कि यह कठिन पराजय थी लेकिन हमें करीबी मैचों को जीतना होगा। हम कुछ गेम के करीब आए लेकिन हम इनको हार रहे हैं। वास्तव में खुशी है कि गेंदबाजों ने इसे वापस खींच लिया। लेकिन इस तरह के विकेटों पर जब गेंदबाजों ने मदद का हाथ बढ़ाया तो हमें बल्लेबाजी इकाई के रूप में भी अच्छा प्रदर्शन करने को मिला। दिल्ली के कप्तान ने आगे कहा कि मिच जिस तरह से बल्लेबाजी कर रहे थे, उसे देखकर वाकई अच्छा लगा। लेकिन एक बल्लेबाजी इकाई के रूप में हमें उन 30, 40 को बड़े स्कोर में बदलना शुरू करना होगा। उम्मीद है कि हम इसे पलट सकते हैं।

एक टीम के रूप में बहुत सारी सकारात्मक चीजें हैं और चर्चा करने के लिए बहुत कुछ नहीं है लेकिन हम अगले मैच में खुद को सुधारना चाहेंगे।अगर मैच की बात की जाए तो लखनऊ ने पहले बल्लेबाजी करते हुए 3 विकेट खोकर 195 रन बनाए थे। लखनऊ के लिए एक बार से केएल राहुल का बल्ला चला। डिकॉक के जल्द पवेलियन लौट जाने के बाद राहुल ने एक छोर संभाले रखा और 77 रन बनाए।

अरविंद चितांबरम बने फिर बने नेशनल रैपिड और ब्लिट्ज़ शतरंज विजेता

भनासिक , महाराष्ट्र । भारत के पूर्व सीनियर राष्ट्रीय चैम्पियन ग्रांड मास्टर अरविंद चितांबरम नें एक बार फिर शतरंज के फटाफट फॉर्मेट रैपिड और ब्लिट्ज़ शतरंज मे अपना दबदबा दिखाते हुए दोहरे खिताब अपने नाम कर लिए है । सबसे पहले सम्पन्न हुई रैपिड चैंपियनशिप मे 9 राउंड मे तमिलनाडू से खेलते हुए अरविंद नें ने लगातार 7 जीत और 2 ड्रॉ के साथ अविजित रहते हुए कुल 8 अंक बनाए और खिताब अपने नाम किया इस दौरान छठे राउंड मे ग्रांड मास्टर विष्णु प्रसन्ना पर उनकी जीत खास रही । वहीं 7.5 अंक बनकर बेहतर टाईब्रेक के आधार पर पेट्रोलियम स्पोर्ट्स बोर्ड के दीपन चक्रवर्ती दूसरे तो तमिलनाडू के राहुल वीएस तीसरे स्थान पर रहे । 7 अंको पर रेल्वे के हिमाल गुसैन चौंथे और सिद्धान्त मोहापात्र पांचवें स्थान पर रहे .नेशनल ब्लिट्ज़ चैंपियनशिप मे भी अरविंद का शानदार प्रदर्शन बरकरार रहा और कुल 11 राउंड में 9 जीत और 1 ड्रॉ से उन्होने 9.5 अंक बनाकर पहला स्थान हासिल किया ,उन्हे पांचवें राउंड में एकमात्र हार रेल्वे के रवि तेजा के हाथो मिली

। अरविंद नें ब्लिट्ज़ के अंतिम तीन राउंड में उन्होने बंगाल के दीप्तयान घोष , रेल्वे के सीआरजी कृष्णा और बंगाल के मित्रभा गुहा को मात देकर खिताब पर कब्जा किया । 9 अंक बनाकर आंध्र प्रदेश के कार्तिक वेंकटरमन दूसरे तो और 8.5 अंको पर बेहतर टाईब्रेक के आधार पर मित्रभा तीसरे स्थान पर रहे ।

खेलो इंडियाः डॉ. भीमराव आंबेडकर विश्वविद्यालय की छात्रा दीपिका ने मुक्केबाजी में जीता रजत पदक

आगरा। खेलो इंडिया में आगरा के डॉ. भीमराव आंबेडकर विश्वविद्यालय की छात्रा दीपिका को मुक्केबाजी में रजत पदक मिला है। दीपिका जीएनएम कॉलेज की छात्रा हैं, उन्होंने 72 किलोग्राम भारवर्ग में प्रतिभाग किया। चार खेलों में विश्वविद्यालय के खिलाड़ियों ने क्वालिफाई किया। विश्वविद्यालय के खेल निदेशक डॉ. अखिलेश चंद्र सक्सेना ने बताया कि केंद्र सरकार की ओर से खेलो इंडिया यूनिवर्सिटी द्वितीय संस्कार का आयोजन जैन विश्वविद्यालय, बेंगलुरू में 23 अप्रैल से चल रहा है, दो मई को संपन्न होगा। उन्होंने बताया कि मुक्केबाजी में दीपिका ने विश्वविद्यालय को रजत पदक दिलाया। प्रशिक्षक बिजेंद्र सिंह का समर्पण रंग लाया। टीम मैनेजर डॉ. प्रवीण सिंह जादौन और सपोर्टिंग स्टाफ में सरिता सिंह व बिजेंद्र सिंह रहे। प्रतियोगिता में 16 खेलों का आयोजन किया जा रहा है। डॉ. भीमराव आंबेडकर विश्वविद्यालय के खिलाड़ियों ने मुक्केबाजी के अलावा जूडो, कुश्ती और एथलेटिक्स में अच्छा प्रदर्शन किया।

नडाल और जोकोविच ने विंबलडन में रूसी खिलाड़ियों पर प्रतिबंध की आलोचना की

मैड्रिड । राफेल नडाल और नोवाक जोकोविच ने यूक्रेन पर रूस के आक्रमण के कारण इस साल के विंबलडन टेनिस टूर्नामेंट में रूस और बेलारूस के खिलाड़ियों को खेलने से रोकने के फैसले की आलोचना की है। टेनिस के इन दोनों दिग्गज खिलाड़ियों ने रविवार को कहा कि विंबलडन ने अनुचित फैसला किया है। नडाल और जोकोविच दोनों मैड्रिड ओपन में खेलने की तैयारियां कर रहे हैं।

रिकॉर्ड 21 बार के ग्रैंड स्लैम विजेता नडाल ने कहा, 'मुझे लगता है कि यह रूस के मेरे टेनिस साथियों के साथ बहुत अनुचित हो रहा है। युद्ध में अभी जो कुछ हो रहा है, वह उनकी गलती नहीं है।' उन्होंने कहा, 'मुझे उनके लिए खेद है। विंबलडन ने स्वयं ही अपना फैसला लिया। सरकार ने उन्हें ऐसा करने के लिए

मजबूर नहीं किया। देखते हैं कि अगले कुछ सप्ताह में क्या होता है। क्या खिलाड़ी इस संबंध में किसी तरह का फैसला करते हैं।' एटीपी और डब्ल्यूटीए टेनिस टूर ने भी ऑल इंग्लैंड क्लब के फैसले की आलोचना की है। विंबलडन 27 जून से शुरू हो रहा है। विंबलडन के प्रतिबंध के कारण जिन प्रमुख खिलाड़ियों पर असर पड़ेगा उनमें मौजूदा यूएस ओपन चैंपियन दानिल मेदवेदेव, आंद्रे रुबलेव और फ्रेंच ओपन उपविजेता अनास्तासिया पावलुचेनकोवा शामिल हैं। ये सभी खिलाड़ी रूस के हैं। इनके अलावा बेलारूस की विक्टोरिया अजारेंका भी विंबलडन में भाग नहीं ले पाएगी। बेलारूस ने यूक्रन पर रूसी हमले का समर्थन किया है। जोकोविच ने इन खिलाड़ियों की स्थिति की तुलना जनवरी में उस स्थिति से की जब वह ऑस्ट्रेलियाई ओपन में भाग नहीं ले पाए थे। कोविड-19 का टीका नहीं लगवाने के कारण तब उन्हें ऑस्ट्रेलिया से निर्वासित कर दिया गया था। जोकोविच ने कहा, 'यह अलग मामला है लेकिन इस साल के शुरू में मैं भी इसी तरह की स्थिति से गुजरा था। यह जानकर निराशा होती है कि आप किसी टूर्नामेंट में नहीं खेल पाएंगे।' उन्होंने कहा, 'मेरी राय स्पष्ट है और मैं उस पर कायम हूं कि मैं (विंबलडन) फैसले का समर्थन नहीं करता। मुझे लगता है कि यह उचित नहीं है, यह सही नहीं है।'

दिग्गज मोहम्मद अली के पोते ने एक ही पंच में अपने प्रतिद्वंदी को किया धराशायी

मैड्रिड । दिग्गज बॉक्सर मोहम्मद अली के 21 वर्षीय पोते निको अली वॉल्श ने अपनी पांचवीं पेशेवर लड़ाई जीतने के लिए एलेजांद्रो इबारा को सनसनीखेज तरीके से नॉकआउट किया। अली वॉल्श ने लास वेगास में पहले दौर में दाहिने हाथ से लगाए गए पंच से मुकाबला समाप्त किया।

अली वॉल्श ने करीब एक साल पहले अपनी मुक्केबाजी की यात्रा शुरू की थी। द ग्रेटेस्ट के पोते के रूप में यह युवा खिलाड़ी बहुत दबाव में बड़े चरणों में मुक्केबाजी कर रहा है और इसलिए इस जीत से उन्होंने राहत की सांस ली। अली वॉल्श ने मुकाबले के बाद कहा कि यह मेरे द्वारा किए गए सभी कामों के लिए सिर्फ एक वसीयतनामा है। उन्होंने कहा, इस तरह की चीजें तब होती हैं जब आप काम करते हैं। मैं अपने दादाजी को वापस ला रहा हूं और

इसलिए मां इतनी भावुक हो जाती है क्योंकि वह अपने पिता को फिर से देख रही है और अपने पिता का नाम मुझमें सुन रही है। दिग्गज बॉक्सर मोहम्मद अली के 21 वर्षीय पोते निको अली वॉल्श ने अपनी पांचवीं पेशेवर लड़ाई जीतने के लिए एलेजांद्रो इबारा को सनसनीखेज तरीके से नॉकआउट किया। अली वॉल्श ने लास वेगास में पहले दौर में दाहिने हाथ से लगाए गए पंच से मुकाबला समाप्त किया। अली वॉल्श ने करीब एक साल पहले अपनी मुक्केबाजी की यात्रा शुरू की थी। द ग्रेटेस्ट के पोते के रूप में यह युवा खिलाड़ी बहुत दबाव में बड़े चरणों में मुक्केबाजी कर रहा है और इसलिए इस जीत से उन्होंने राहत की सांस ली। अली वॉल्श ने मुकाबले के बाद कहा कि यह मेरे द्वारा किए गए सभी कामों के लिए सिर्फ एक वसीयतनामा है। उन्होंने कहा, इस तरह की चीजें तब होती हैं जब आप काम करते हैं। मैं अपने दादाजी को वापस ला रहा हूं और इसलिए मां इतनी भावुक हो जाती है क्योंकि वह अपने पिता को फिर से देख रही है और अपने पिता का नाम मुझमें सुन रही है।

वाशिंगटन सुंदर फिर से चोटिल, दिल्ली कैपिटल्स के खिलाफ खेलना संदिग्ध

मुंबई । सनराइजर्स हैदराबाद के मुख्य कोच टॉम मूडी ने खुलासा किया कि वाशिंगटन सुंदर के उस हाथ में फिर से चोट लग गई है जिससे वह गेंदबाजी करते हैं और इसी कारण से वह चेन्नई सुपर किंग्स के खिलाफ इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) मैच में गेंदबाजी नहीं कर पाए। अपने गेंदबाजी वाले हाथ में चोट के कारण वाशिंगटन ने तीन मैचों में बाहर रहने के बाद गुजरात टाइटन्स के खिलाफ वापसी की थी। चेन्नई के खिलाफ रविवार को क्षेत्ररक्षण करते समय में फिर से उनके उसी हाथ में चोट लग गई। इससे उनका दिल्ली कैपिटल्स के खिलाफ अगले मैच में खेलना भी संदिग्ध है। इस कारण यह ऑफ स्पिनर सनराइजर्स की चेन्नई के हाथों 13 रन की हार के दौरान गेंदबाजी नहीं कर पाया। वह निचले क्रम में बल्लेबाजी के लिए आए लेकिन केवल दो गेंद का सामना कर पाए। मूडी ने मैच के बाद कहा, 'यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि उनके उसी हाथ में चोट लगी है जिसमें पहले लगी थी। पहले चोट पूरी तरह से ठीक हो गई थी लेकिन वह अंग फिर से चोटिल हो गया है। उसमें हालांकि टांके लगाने की जरूरत नहीं है।' उन्होंने कहा, 'लेकिन दुर्भाग्य से वह गेंदबाजी

करने की स्थिति में नहीं था। इससे वास्तव में हमारी गेंदबाजी प्रभावित हुई क्योंकि वह हमारा महत्वपूर्ण गेंदबाज है।' तेज गेंदबाज टी नटराजन भी चोटिल होने के कारण चेन्नई के खिलाफ मैच के दौरान बीच में मैदान से बाहर रहे। इससे केन विलियमसन को पांचवें गेंदबाज के रूप में एडेन मार्कराम और शशांक सिंह को गेंद सौंपनी पड़ी जिन्होंने मिलकर चार ओवर किये और उनमें 46 रन लुटाये। मूडी ने कहा, 'जब आप अपने प्रमुख गेंदबाज को गंवा देते हो तो यह टीम के लिए बड़ा झटका होता है। चोट के कारण नटराजन भी कुछ समय तक मैदान से बाहर रहा। इस तरह से 14वें-15वें ओवर तक सात ओवर ऐसे रहे जो हमारे प्रमुख गेंदबाजों ने नहीं किए। इससे हमने 20-30 रन अधिक गंवाए।'

चीन में इमारत के मलबे से 50 घंटे बाद दो लोगों को बचाया गया

बीजिंग। मध्य चीन में एक इमारत ढहने के 50 से अधिक घंटे बाद उसके मलबे से दो लोगों को जिंदा निकाला गया, अब भी बड़ी संख्या में लोग मलबे में फंसे हैं या लापता हैं।सरकारी समाचार एजेंसी ' ने बताया कि पुलिस ने इस मामले में इमारत के मालिक सहित नौ लोगों को गिरफ्तार किया है।

सरकारी प्रसारक सीसीटीवी द्वारा जारी किए गए एक वीडियो में कुछ बचाव कर्मी रविवार को स्थानीय समयानुसार शाम करीब साढ़े चार बजे एक महिला को 'स्ट्रेचर' पर मलबे से बाहर लाते दिखे, जबकि कुछ लोग अभियान के दौरान राहत कर्मियों का उत्साह बढ़ाने के लिए नारे लगाते दिखे। सीसीटीवी ने अपनी रिपोर्ट में बताया कि महिला को अस्पताल ले जाया गया है। सरकारी मीडिया ने बताया कि एक और व्यक्ति को मलबे से जिंदा निकाला गया है, लेकिन इस संबंध में कोई विस्तृत जानकारी नहीं दी। दोनों लोगों को रविवार को ही मलबे से बाहर निकाला गया।

गौरतलब है कि हुनान प्रांत की राजधानी चांगशा में शुक्रवार दोपहर को गिरी इमारत के मलबे से अभी तक सात लोगों को निकाला गया है। मलबे में अब भी 20 लोग फंसे हुए हैं,वहीं शनिवार देर रात से 39 लोग लापता हैं। पुलिस ने बताया कि इमारत के मालिक के अलावा इमारत का डिजाइन बनाने तथा निर्माण करने वाले तीन लोगों के अलावा पांच उन लोगों को गिरफ्तार किया, जिन्होंने इमारत के चौथे से छठे तल के बीच अतिथि गृह के लिए कथित तौर पर गलत सुरक्षा आकलन रिपोर्ट दी थी।

'उदार वैश्विक व्यवस्था' गंभीर हमले की शिकार : बाइडन

वाशिंगटन। अमेरिका के राष्ट्रपति जो बाइडन ने कहा कि द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद से वैश्विक शांति, स्थिरता और समृद्धि की नींव डालने वाली 'उदार वैश्विक व्यवस्था' गंभीर हमले की शिकार है। प्रेस एवं अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का जश्न मनाने में व्हाइट हाउस कवर करने वाले संवाददाताओं के साथ शामिल होते हुए बाइडन ने यह बात कही। इस कार्यक्रम में राजनीति, नौकरशाही, मनोरंजन और कॉर्पोरेट क्षेत्रों से समूचे अमेरिका के 2,500 से अधिक प्रतिष्ठित मेहमान शामिल हुए । छह साल में बाइडन पहले अमेरिकी राष्ट्रपति हैं, जिन्होंने आयोजित वार्षिक 'व्हाइट हाउस संवाददाता संघ भोज' (डब्ल्यूएचसीए) में हिस्सा लिया। पिछले दो वर्षों में कोविड-19 प्रतिबंधों के कारण कार्यक्रम रद्द कर दिया गया था। बाइडन के पूर्ववर्ती डोनाल्ड ट्रम्प पहले तीन वर्षों में समारोह में शामिल नहीं हुए थे। इस दौरान दुनियाभर में लोकतंत्र पर मंडराते खतरे को गंभीरता से लेते हुए बाइडन ने कहा, ''छह साल में यह पहली बार है जब किसी राष्ट्रपति ने इस भोज में भाग लिया। यह समझ में आता है, दो साल के कोविड के कारण भयानक महामारी थी। जरा सोचिए कि अगर मेरे पूर्ववर्ती इस साल इस रात्रिभोज में आए होते, तो अब तक यह वास्तव में एक वास्तविक तख्तापलट होता।' बाइडन ने अमेरिका के राष्ट्रपति के तौर पर डब्ल्यूएचसीए रात्रिभोज में अपने पहले संबोधन में कहा, ''उदार विश्व व्यवस्था जिसने द्वितीय विश्व युद्ध के बाद से वैश्विक शांति, स्थिरता और समृद्धि की नींव रखी, वास्तव में गंभीर हमले का सामना कर रही है।'

हालांकि, बाइडन वर्ष 1970 की शुरुआत से वार्षिक रात्रिभोज में भाग ले रहे हैं, जब उन्हें पहली बार डेलावेयर से सीनेटर के रूप में चुना गया था। बाइडन ने कहा,'और घर पर, हमारे लोकतंत्र में जहर प्रवाहित किया जा रहा है, ...यह सब बड़े पैमाने पर दुष्प्रचार के साथ हो रहा है। लेकिन सच झूठ में दब जाता है, और झूठ सच की तरह जिंदा रहता है। एक चीज स्पष्ट है, एक स्वतंत्र प्रेस पिछली सदी के मुकाबले अब कहीं अधिक मायने रखता है।

कंसास में बवंडर से 3 छात्रों की मौत, सैकड़ों मकान और इमारतें क्षतिग्रस्त

कंसास। अमेरिका के कंसास के कुछ हिस्सों में आए बवंडर ने सैकड़ों मकानों और इमारतों को क्षतिग्रस्त कर दिया। कई लोग घायल हो गए, जबकि 15,000 से अधिक लोगों के घरों की बिजली गुल हो गई। अधिकारियों ने यह जानकारी दी। उन्होंने बताया कि बवंडर के बीच कंसास लौट रहे ओकलाहोमा मौसम विज्ञान विश्वविद्यालय के तीन छात्र शाम एक हादसे में मारे गए। ओक्लाहोमा हाईवे पेट्रोल रिपोर्ट के अनुसार, टेक्सास निवासी निकोलस नायर (20), इलिनॉइस निवासी गेविन शॉर्ट (19) और इंडियाना के रहने वाले ड्रेक ब्रूक्स (22) की शुक्रवार रात 11.30 बजे के करीब एक दुर्घटना में मृत्यु हो गई।

जर्मनी में पीएम मोदी के पैर छूकर लोंगों ने किया जोरदार स्वागत, वंदे मातरम नारों के बीच छोटी बच्ची ने भी जीता दिल

जर्मनी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी यूरोप के तीन देशों की यात्रा के पहले चरण में सोमवार को जर्मनी पहुंचे हुए जहां उनका जोरदार स्वागत हुआ। जैसे ही पीएम मोदी जर्मनी पहुंचे तो वहां सभी प्रवासी भारतीय पहले से ही स्वागत के लिए खड़े थे। उन्होंने उनका बेहद गर्मजोशी से स्वागत किया। इस दौरान प्रधानमंत्री सभी का हालचाल पूछते नजर आए। उन्होंने कई बच्चों के साथ भी बातचीत की। इसका एक वीडियो भी सामने आया है जिसमें एक बच्ची अपने हाथ में पीएम मोदी का स्केच लेकर खड़ी थी। पीएम ने उस बच्ची के साथ फोटो क्लिक कराई और उस स्केच पर ऑटोग्राफ भी दिया। लोग पीएम के साथ सेल्फी लेते हुए भी दिखे इतना ही नहीं लोगों ने पीएम मोदी के पैर छूकर उनका आशिर्वाद भी लिया। इस दौरान लोग वंदे मातरम के नारे लगाते नजर आए।वहीं

भारतीय समुदाय के एक सदस्य गौरांग कुटेजा ने कहा कि हम पीएम मोदी की एक झलक पाने के लिए उत्साहित थे। हम 400 किमी की दूरी तय करके बर्लिन आए। उन्होंने भारतीय मूल के हम सभी का सम्मानपूर्वक अभिनंदन किया। इसके अलावा, हम प्रवासी भारतीयों को प्रधानमंत्री के संबोधन में भाग लेने के लिए उत्सुक हैं।

बता दें कि पीएम मोदी जर्मनी के चांसलर ओलाफ शॉल्ज के साथ द्विपक्षीय बैठक करेंगे तथा भारत-जर्मनी अंतर सरकारी विचार विमर्श कार्यक्रम की सह अध्यक्षता करेंगे। इससे पहले मोदी ने ट्वीट कर बताया था कि बर्लिन पहुंच गया। आज मैं चांसलर ओलाफ शॉल्ज से बातचीत करूंगा, कारोबारी दिग्गजों से मुलाकात करूंगा और समुदाय के एक कार्यक्रम में हिस्सा लूंगा। मुझे पूरा विश्वास है कि इस यात्रा से भारत और जर्मनी के बीच मित्रता प्रगाढ़ होगी।

कंगाल पाकिस्तान को इमरान की विदाई से हुआ फायदा, सऊदी से मिली बड़ी 'खैरात'

इस्लामाबाद।पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान के राज में कंगाल हो चुके पाकिस्तान को उनकी विदाई के बाद बड़ा फायदा मिला है। दिवालिया होने के कगार पर खड़े पाकिस्तान को सऊदी अरब से बड़ी आर्थिक मदद मिली है। सऊदी अरब ने पाकिस्तान को 8 बिलियन डॉलर का नया कर्ज देने का ऐलान किया है। इस पैकेज में पैसों के साथ उधार का तेल और पुराने कर्ज की अदायगी भी शामिल है। इन दिनों पाकिस्तान के प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ सऊदी के दौरे पर हैं। उन्हीं से मुलाकात के दौरान सऊदी प्रशासन ने एक बार फिर पाकिस्तान को माफ करते हुए आर्थिक मदद का ऐलान किया है।

दरअसल, इमरान खान के कार्यकाल के दौरान पाकिस्तान और सऊदी अरब के रिश्तों में काफी कड़वाहट आ गई थी। हालात इतने खराब हो गए थे कि

सऊदी ने पाकिस्तान को दिया गया 4.2 बिलियन डॉलर का पुराना कर्ज वापस मांग लिया था।द न्यूज इंटरनेशनल की रिपोर्ट के अनुसार, 8 अरब डॉलर के पैकेज में उधार में तेल देना, आर्थिक विकास के लिए पैसे देना और 4.2 बिलियन डॉलर के पुराने कर्ज की अदायगी शामिल है। हालांकि इस पैकेज के तकनीकी मुद्दों पर अभी भी दोनों देशों के अधिकारियों के बीच अंतिम सहमति नहीं बन सकी है। ऐसे में दस्तावेजों के तैयार होने और दोनों देशों के शीर्ष नेताओं के हस्ताक्षर करने में अभी हफ्तेभर का समय लग सकता है।

जानकारी के अनुसार पाकिस्तान के प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ अपने भारी-भरकम प्रतिनिधिमंडल के साथ सऊदी अरब से वापसी के लिए निकल चुके हैं। लेकिन, पाकिस्तान के वित्त मंत्री मिफ्ता इस्माइल अभी भी इस वित्तीय पैकेज को अंतिम रूप देने के लिए वहीं रुके हुए हैं। मिफ्ता इस्माइल ने ट्वीट कर बताया कि मैंने जेद्दा हवाई अड्डे पर प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ और अन्य सहयोगियों को अलविदा कहा। वे क्राउन प्रिंस मुहम्मद बिन जायद से मिलने के लिए अबू धाबी में रुकने के बाद पाकिस्तान के लिए रवाना हो रहे हैं।

मुसीबत में जेलेंस्की: 9 मई को रूस का विजय दिवस, पुतिन हुए और सख्त, बोले- यूक्रेन में सेना का हमला जारी रहेगा

मास्को। रूस-यूक्रेन के बीच युद्ध का दौर लगातार जारी है। दोनों देशों में कोई भी एक-दूसरे के सामने झुकने के लिए तैयार नहीं है। इन सबके बीच 9 मई को रूस के लिए बड़ा दिन है क्योंकि इस दिन रूस विजय दिवस मनाता है। इस अवसर पर जहां पुतिन के देश में जश्न का माहौल रहेगा वहीं यूक्रेन के ऊपर मुसीबत और बढ़ने वाली है।

क्योंकि, रूस के विदेश मंत्री सर्गेई लावरोव ने चेतावनी देते हुए कहा है कि हम विजय दिवस को देखते हुए यूक्रेन में सैन्य कार्रवाई में कोई बदलाव नहीं करेंगें। हमारी सेना हमले जारी रखेगी। रूस का यह बयान तब आया है जब नाटो के पूर्व प्रमुख रिचर्ड शेरिफ ने यूक्रेन में रूस के साथ सबसे खराब स्थिति में युद्ध के लिए पश्चिम को खुद को तैयार करने की चेतावनी दी। इस बीच ब्रिटेन के रक्षा सचिव बेन वालेस ने भी इस बात की जानकारी दी है कि पुतिन 9 मई

को रूस के विजय दिवस परेड का इस्तेमाल यूक्रेन के खिलाफ फाइनल लड़ाई में अपने भंडार को बढ़ाने की घोषणा करने के लिए कर सकते हैं।

9 मई को जश्न के मौके पर रूस नहीं लेना चाहता कोई जोखिम

रूस के विदेश मंत्री सर्गेई लावरोव ने कहा कि हम नहीं चाहते कि देश में जश्न का माहौल हो और किसी भी तरह की अनहोनी हो जाए इसलिए, हम इस दिन यूक्रेन में अपनी सैन्य कार्रवाई और तेज करेंगे। हमारे सैनिक पश्चिमी देशों के मंसूबों को कामयाब होने नहीं देंगे। इस दौरान उन्होंने नाटो देशों को भी खरी-खोटी सुनाई।

हम जेलेंस्की को आत्मसमर्पण करने नहीं कह रहे- लावरोव

लावरोव से जब पत्रकारों ने पूछा कि क्या रूस, यूक्रेन के राष्ट्रपति जेलेंस्की को आत्मसमर्पण करवाना चाहता है? इस सवाल का जवाब देते हुए लावरोव ने कहा कि मॉस्को आत्मसमर्पण की मांग नहीं कर रहा है लेकिन मांग करता है कि वह पूर्वी यूक्रेन में कैद में रह रहे सभी नागरिकों को रिहा करे और प्रतिरोध को रोकने का आदेश दे।

लावरोव ने जोर देकर कहा कि रूस पूर्वी यूक्रेन में सभी लोगों के लिए सुरक्षा सुनिश्चित करना चाहता है ताकि उन्हें इस देश के सैन्यीकरण या नाजीकरण से कोई खतरा न हो और यूक्रेन के क्षेत्र से रूसी संघ की सुरक्षा के लिए कोई खतरा न हो।

सप्ताहांत में हुई गोलीबारी की अलग-अलग वारदातो में आठ की मौत, 16 लोग घायल

शिकागो। अमेरिका के शिकागो में सप्ताहांत में हुई गोलीबारी की अलग-अलग घटनाओं में कम से कम आठ लोग मारे गए और 16 लोग घायल हो गए। स्थानीय मीडिया रिपोर्ट में इस संबंध में जानकारी दी गई है। एक स्थानीय मीडिया रिपोर्ट में शहर की पुलिस के हवाले से कहा गया है कि गोलीबारी की यह घटना शाम करीब 5:45 बजे हुई। एनबीसी शिकागो दक्षिण किलपैट्रिक में एक 69 वर्षीय व्यक्ति की उनके ही घर पर गोली मारकर हत्या कर दी गई।

पीड़ितों में एक नाबालिग के साथ-साथ एक 62 वर्षीय महिला सहित सभी आयु वर्ग के लोग शामिल हैं। रिपोर्ट में कहा गया है कि घटनाएं ब्राइटन पार्क, साउथ इंडियाना, नॉर्थ केडजी एवेन्यू, हंबोल्ट पार्क समेत कई इलाकों में हुईं। एक मीडिया समूह की रिपोर्ट के अनुसार, पिछले सप्ताहांत में शहरभर में हुई गोलीबारी की इन सभी वारदातों में कुल मिलाकर आठ लोगों की मौत हुई है। इन हत्याओं के अलावा करीब 42 लोग भी इस दौरान घायल हो गए थे। अमेरिका में इस तरह की गोलीबारी की छोटी-बड़ी घटनाएं हमेशा से एक बड़ी समस्या के तौर पर देखी जाती रही हैं।

एक शोध समूह के मुताबिक गोलीबारी की हिंसा से जुड़े आर्काइव के अनुसार, संयुक्त राज्य अमेरिका में साल 2022 में अब तक 140 से अधिक सामूहिक गोलीबारी की वारदातें दर्ज हो चुकी हैं। शोधकर्ताओं के समूह ने बताया कि वह प्रतिदिन 7,500 स्रोतों से डेटा एकत्र कर रहा है और घटनाओं की संख्या रिपोर्ट और सत्यापित की गई हैं। स्पुतनिक ने अपनी रिपोर्ट में बताया कि बाइडन प्रशासन गोलीबारी की वारदातों को रोकने के लिए नए उपायों पर विचार कर रही है। इसमें तथाकथित 'घोस्ट गन' के प्रसार को रोकने का प्रस्ताव शामिल है। यह ऐसी बंदूकें होती हैं जो ऑनलाइन माध्यम पर बिक्री के लिए उपलब्ध होती हैं। इन पर सीरियल नंबर नहीं होता। इन्हें टुकड़ों में खरीदकर घर पर ही जोड़ा जा सकता है।

श्रीलंका में सरकार के खिलाफ लोगों ने मनाया 'काला मई दिवस'

कोलंबो: श्रीलंका में अंतरराष्ट्रीय श्रमिक दिवस के अवसर पर लोगों ने सरकार के खिलाफ 'काला मई दिवस' मनाया । इस बीच श्रीलंका के विपक्षी नेता सजिथ प्रेमदासा ने राष्ट्रपति गोटबाया राजपक्षे नीत सरकार पर निशाना साधा और कहा कि आजादी मिलने के बाद से देश अब तक के सबसे बड़े आर्थिक संकट का सामना कर रहा है और

लोग इस साल 'काला मई दिवस' मना रहे हैं। प्रेमदासा ने मौजूदा हालात के लिए सरकार की 'गलत नीतियों' को जिम्मेदार ठहराया। समाचार वेबसाइट 'कोलंबो पेज' की रिपोर्ट के मुताबिक, विपक्षी दल समागी जन बालवेगया (एसजेबी) के नेता प्रेमदासा ने अंतरराष्ट्रीय श्रमिक दिवस के अवसर पर साझा किए गए संदेश में कहा कि गोटबाया राजपक्षे नीत मौजूदा सरकार की 'लापरवाही भरी नीतियों' ने इतिहास में पहली बार देश को दिवालिया होने की कगार पर ला खड़ा किया है।

भारतीय मूल के नंद मूलचंदानी बने सीआईए के पहले मुख्य प्रौद्योगिकी अधिकारी, दिल्ली में आठ साल तक की है पढ़ाई

वाशिंगटन। अमेरिका में भारतीय मूल के आईटी विशेषज्ञ नंद मूलचंदानी को केंद्रीय खुफिया एजेंसी (सीआईए) का पहला मुख्य प्रौद्योगिकी अधिकारी नियुक्त किया गया है। सीआईए के निदेशक विलियम जे बर्न्स ने नंद मूलचंदानी की नियुक्ति की। उन्होंने सोशल मीडिया पर उनकी सिलिकॉन वैली के साथ-साथ रक्षा विभाग (डीओडी) में काम करने का पर्याप्त अनुभव है। वहीं इस भूमिका के लिए मूलचंदानी ने कहा कि मैं इस भूमिका में सीआईए में शामिल होने के लिए सम्मानित महसूस कर रहा हूं। उन्होंने कहा कि प्रौद्योगिकीविदों और डोमेन विशेषज्ञों की एजेंसी की अविश्वसनीय टीम के साथ काम करने के लिए तत्पर हूं। गौरतलब है कि सीआईए में शामिल होने से पहले मूलचंदानी ने हाल ही में सीटीओ और डीओडी के संयुक्त आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस सेंटर के कार्यवाहक निदेशक के रूप में कार्य किया। वे कई सफल स्टार्टअप ओब्लिक्स (ओरेकल द्वारा अधिग्रहित), डिटरमिना (वीएमवेयर द्वारा अधिग्रहित), ओपनडीएनएस (सिस्को द्वारा अधिग्रहित), और स्केलएक्सट्रीम (साइट्रिक्स द्वारा अधिग्रहित) के सह-स्थापना की और सीईओ भी थे।

सीआईए के निदेशक विलियम जे बर्न्स ने नंद मूलचंदानी की नियुक्ति की। उन्होंने सोशल मीडिया पर उनकी नियुक्ति की घोषणा की थी। सीआईए के मुताबिक, मूलचंदानी के पास सिलिकॉन वैली में काम करने का 25 साल से ज्यादा का अनुभव है।

यूक्रेन युद्ध : बूचा में चेचेन लड़ाकों ने अपने ही घायल साथियों और रूसी सैनिकों को मार डाला, रूस के नौवें बड़े अफसर ने गंवाई जान

कीव। चेचेन लड़कों ने बूचा में अपने ही घायल साथियों और रूसी सैनिकों को मौत के घाट उतार दिया था। चश्मदीदों के मुताबिक, चेचेन लड़ाकों ने बूचा के फील्ड अस्पताल में घायल पड़े साथियों की गोली मारकर हत्या कर दी। उधर, इजियम के पास 30 वाहनों के काफिले पर यूक्रेन के हमले में रूस के नौवें बड़े अफसर मेजर जनरल एंतोन सिमनोव (55) की मौत हो गई। मानवाधिकार लोकपाल ने कहा, चेचेन लड़ाकों ने याब्लोन्स्का स्ट्रीट पर एक कांच के कारखाने में यातना कक्ष बना रखा था। उधर, यूक्रेन के प्रादेशिक रक्षा बलों के डिप्टी कमांडर अर्टेम हुरिन ने बताया कि बूचा के उत्तर-पश्चिम में बने फील्ड अस्पताल में चेचेन लड़ाकों ने घायल साथियों की हत्या कर दी थी। कई चश्मदीदों के हवाले से हुरिन ने बताया कि चेचेन लड़ाके घायल रूसी सैनिकों को फील्ड अस्पताल में लेकर आते और उनका इलाज कराने के बजाय गोली मारकर खत्म कर देते। रूसी सैनिकों के दुष्कर्म की शिकार एक स्थानीय महिला के हवाले से हुरिन ने बताया कि सैकड़ों यूक्रेनी लोगों को चेचेन और रूसी सैनिकों ने तड़पाकर मारा था। खुद को कादिरोवित्सी कहने वाले चेचेन लड़ाकों के दस्ते ने 5 मार्च से शहर में मारकाट शुरू की। दो अप्रैल को बूचा फिर से यूक्रेनी सैनिकों के कब्जे में आने तक वह आम लोगों को शिकार बनाते रहे।

वहीं, बूचा के मेयर अनातोली फेडोरुक ने कहा, चेचन लड़ाकों ने कैदियों के हाथों पर बांधे थे। बाद में शहर में मिले शवों पर ये पाए गए। संयुक्त राष्ट्र के जांच दल ने

सामूहिक कब्रों में मिले शवों की जांच के बाद बताया कि बहुत-सी महिलाओं की हत्या से पहले व बाद में दुष्कर्म किया गया था।

खेरसान में तेज हुई लड़ाई

रूस के रक्षा मंत्रालय ने यूक्रेनी सेना पर दक्षिणी खेरसान के गांवों में एक स्कूल, किंडरगार्डन और कब्रिस्तान पर गोलाबारी करने का आरोप लगाते हुए कहा कि हमले में कई नागरिक मारे गए।

स्वीडन में घुसे रूसी विमान

स्वीडिश रक्षा मंत्री पीटर हल्टक्विस्ट ने आरोप लगाया कि रूस के एएन-30 प्रोपेलर विमान उसके हवाई क्षेत्र में दाखिल हुए।

आक्रमण के खिलाफ अमेरिका यूक्रेन के साथ : नैन्सी पेलोसी

अमेरिकी संसद के निचले सदन हाउस ऑफ रिप्रेजेंटेटिव्ज की अध्यक्ष नैन्सी पेलोसी शनिवार को यूक्रेन के राष्ट्रपति वोलोदिमीर जेलेंस्की से मिलीं। पेलोसी ने कहा कि रूस के हमले के खिलाफ अमेरिका हर हाल में यूक्रेन के साथ खड़ा है। रूस के हमले के बाद यूक्रेन पहुंचने वाली पेलोसी सबसे वरिष्ठ अमेरिकी नेता हैं। जेलेंस्की ने ट्विटर पर एक वीडियो पोस्ट किया, जिसमें वे राष्ट्रपति कार्यालय के बाहर पेलोसी के नेतृत्व में एक कांग्रेस प्रतिनिधिमंडल का अभिवादन कर रहे हैं।

रूस से जीत के लिए जो चाहिए, मिलेगा...

पेलोसी और आधा दर्जन अमेरिकी सांसदों की जेलेंस्की से शनिवार देर रात मुलाकात तीन घंटे चली। पोलैंड में पत्रकारों से वार्ता में पेलोसी ने कहा कि यूक्रेन ने मजबूती से रूस का सामना किया है। बुराई के खिलाफ अच्छाई की लड़ाई में अमेरिका यूक्रेन की सैन्य, मानवीय और आर्थिक मदद जारी रखेगा। वे कांग्रेस के प्रतिनिधि के तौर पर यूक्रेन के लोगों के साहस और जेलेंस्की के नेतृत्व की सराहना करती हैं। यूक्रेनी लोगों को रूस से जीतने के लिए जो चाहिए, वह मिलेगा।

नेताओं को निशाना बना रहे रूस के साइबर सैनिक : ब्रिटेन

ब्रिटेन के विदेश मंत्रालय की तरफ से कराए गए शोध के मुताबिक, रूस के साइबर सैनिक दुनियाभर में उसके खिलाफ बोलने वाले विदेशी नेताओं पर हमले कर रहे हैं। उन्हें बड़े पैमाने पर सोशल मीडिया पर दुष्प्रचार का शिकार बनाया जा रहा है। ब्रिटिश विदेश मंत्रालय ने बताया कि रूस के साइबर सैनिकों का एक समूह सेंट पीटर्सबर्ग में एक कारखाने से काम कर रहा है। वह टेलीग्राम मैसेजिंग एप के जरिये रूस के आलोचकों के खिलाफ दुष्प्रचार अभियान चला रहा है। टेलीग्राम, ट्विटर, फेसबुक और टिकटॉक सहित आठ सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर इनकी गतिविधियों के निशान मिले हैं। यह अभियान ब्रिटेन, दक्षिण अफ्रीका और भारत सहित कई देशों में कई राजनेताओं को निशाना बना रहा है।

अखंड भारत संदेश
स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक
स्वामी श्री योगी सत्यम एवम्
योग सत्संग समिति द्वारा
विपिन इण्टरप्राइजेज
1/6C माधव कुंज
कटरा प्रयागराज
से मुद्रित एवम् क्रियायोग
आश्रम अनुसंधान संस्थान
झूंसी, प्रयागराज उत्तर प्रदेश
211019 से प्रकाशित।
Title UPHIN 29506
Email:-
akhandbharatsandesh1@gmail.com
इस समाचार पत्र में प्रकाशित समस्त समाचारों से सम्बंधित विवादों का न्याय क्षेत्र कौशाम्बी, प्रयागराज होगा।